भाग - २

कुमाउनी भाषा की कहावतें

(हिन्दी अनुवाद सहित)

(दो भागों में)

(सर्वाधिकार सुरक्षित)

लेखक व प्रकाशक

चन्द्रलाल वर्मा

लक्ष्मी भण्डार कुथ, अल्मोड़ा

प्रथम बार एक हजार

मूल्य दो रुपये

कुमाऊँनी भाषा की कहावतें

(दूसरा भाग)

तीन हूंल कैबेर ब्या कर–बुढ़ी मरि पलि पलि गे।

तीन होवेंगे करके ब्याह किया–बुढ़िया मर कर परे गई।

सभी इच्छाओं की पूर्ति होना असम्भव सा है।

लो भाई लो ! सभी करा कराया मिट्टी में मिल गया। उस बेचारे ने ब्याह किया, जो कि कभी भी नही करना चाहता था। पर हुआ वही जो विधाता ने रच रखा था, कल अचानक उसकी मां मर गई। वह रो रहा था और कह रहा था कि, मेरी मां ने मर कर मेरे लिये ऐसी कहावत कर दी कि—

तीन होवेंगे करके ब्याह किया–बुढ़िया मर कर परे गई गई। ३८१

कौव कड़कौं न–मांख भणकौ।

न कौवा कांय करे–न मक्खी भांय करे।

कोई विरानी सी विरानी है–दश्त कों देख कर घर याद आया।

सुनसान, अति निरजन। न नाम लेवा न पानी देवा।

मैं जाने को तो आपके कहने पर गया ही, पर साहब जब मैं उस स्थान पर पहुँचा तो–भय और त्रास के मारे मेरे रोम खड़े होगये। मैं सहम सा गया। क्या कहूं उस विरानी के लिए आपसे कोई चुभता सा शब्द याद हीं नहीं आरहा है। वहाँ तो ऐसी कहावत होरही थी कि—

न कौवा कांय करे न मक्खी भांय करे। ३८२

Scanned with CamScanner

साजकौ पौंण–उखलसार ठौर ।
साजे का पाहुना–ओखलसार ठौर ।
साझे की हंडिया–चौराहे में ।

साझेदारी से सुखी जीवन कोसों दूर रहा करता है ।

अजी ! वे पाहुने थे तो हम दोनों के थे, मैंने समझा वे उनके यहा शायद आराम से रहेंगे। और उन्होंने समझा शायद वे मेरे यहां अधिक सुख चैन से रहेंगे, इस धोखे म हम दोनों जने रहे और न जाने उन्हें क्या धोखा हुआ कि, वे न जानें कहा रहे ? और न जाने उन पर क्या बीती। वे ही जानें या भगवान ही। तभी तो कहावत है कि—

साझे का पाहुना–ओखलसार ठौर । ३८ ३

कौव जो शिकार मारी ल्यूंना–बाज को पालन ।
कौवा जो शिकार मार लाता तो–बाज कौन पालता ?

मढ़ियो दमामो जात है–कहीं चूहे के चाम ?

पुरुषाथ ही जीवन की निधि है ।

तुमसे कभी सात जन्म में भी कुछ होने से रहा। भले ही तुम धौंस फौंस मारो। तुम जैसे जो इस संसार में कुछ कर दिखलाते तो यह संसार स्वर्ग ही बन गया होता। तुम तो यों ही पापड़ बेलना जानते हो और कुछ नहीं। हमारे गाव घर में कहावत है कि—

कौवा जो शिकार मार लता तो–बाज कौन पालता ? ३८४

दुसरैकि आस–नरककौ बास ।
दूसरों की आश–नरक का बास ।

मनुष्य को अपनी ही आशा करनी चाहिये ।

मैंने तुमसे उतने दिन पहिले ही कह दिया था कि, तुम उसकी

Scanned with CamScanner

आशा मत करो। तुमने मेरी हंसी उड़ाई। अब तो तुम जान गये हो कि, मैं तुमसे ठीक ही कह रहा था भाई! उसकी झूठी आशा ने तुम्हारी ही तरह कितनों को निराश कर दिया है। तभी तो हमारे बड़े बुढ़े कहावत कह गये हैं कि--

सर दूों की आश-नरक का बास। ३८५।

च्यालन हुंणि ठौर नै-नातिनक पौराट।
लड़कों को ठौर नहीं-नातियों की रेलपेल॥

(पौराट—रेलपेल) न्यारा पूत-पड़ोसी दाखिल।

एक अकथ करनी सी हो जानी।

लो साहब! मेरे ही कुनबे के लिये इस मकान में ठौर पौर नहीं। आज मकान मालिक साहब एक और नये किरायेदार को यहां ले आये। किरायेदार भी ऐसा वैसा नहीं, पूरी पल्टन का ही मालिक है। मैं तो मकान मालिक को देख कर हैरान हूं कि, यह मनुष्य है या पशु। इसने तो मेरे लिए वही कहावत चरितार्थ कर थी कि--

लड़कों को ठौर नहीं-नातियों की रेलपेल। ३८६।

हुस्क्या है जो-हंकारा झन हो।
हौंस वाला हों जाय-अहङ्कार करने वाला न हों।
अहङ्कारी! मृत्यु के समान हुआ करता है।

आपका लड़का तो बड़ा सुजात है, जब भी देखा कुछ न कुछ करते ही रहता है। उसकी हविस है कुछ न कुछ कर बैठने की। ईश्वर ने अगर उसे सुखी रखा तो वह अवश्य हमारे सारे राष्ट्र का मुख उज्ज्वल करेगा। तभी तो कहावत है कि--

हौंस वाला हो जायें-अहंकार करने वाला न हो। ३८७॥

Scanned with CamScanner

कुकुर कैं मुख लगै-मुख चाटौ-सैणी कणी मुख लगै-चुई काटौ।
कुत्ते को मुंह लगाओ-मुंह चाटे-औरत को मुंह लगाओ-चोटी काटे।

अति मान सम्मान खतरे से भरा सा हुआ रहता है।

चली गई तो चली जाने दो? अब व्यर्थ में क्या धोखा खाये बैठे हो। औरत को अति प्यार करना या मुंह लगाने का यही नतीजा हुआ करता है कि वह कुछ न कुछ कर ही बैठती है। इतना भरापूरा घर उसे काट खाने को आरहा था कि, भाग खड़ी हुई। जाने दो तुम्हारी बला गई। तभी तो बुजुर्गों ने कहावत कही है कि—

कुत्ते को मुंह लगाओ-मुंह चाटे।
औरत को मुंह लगाओ-चोटी काटे। ३८८।

जतकाल्-बराबर काल
प्रसवकाल-बराबर काल।

काल का सामना करने पर ही मातायें, मातृत्व को प्राप्त हुआ करती हैं।

आज कल का जमाना ही ऐसा है कि, जहा एक बच्चा हुआ वहां या तो सारी जवानी ढल गई या इसी बेचारी की तरह परलोक सिधार गई। बस होगई सारी घर गृहस्थी। एक ही बच्चे के होने में स्वाहा। वैसे कहावत भी है कि—

प्रसवकाल-बराबर काल। ३८९।

यो जतकाल है बचि जूं-खसम हुणि बबा कूं।
इस प्रसवकाल से बच जाऊं-खसम से बाप कहूं।
अत्यन्त हृदय विदारक बेदना सी सहना।

मैं तो कान पकड़ती हूं जीजी! तुमसे सच कहती हूं, मैं तो बाज आई इस सन्तति के लोभ मोह से। इससे तो बाँज रहना अच्छा,

Scanned with CamScanner

आग लगाओ इस प्रसव पीड़ा के सिर पर गाज़ गिरे। बापरे बाप ! मैं तुमसे कहती हूं कि, मेरी तो वह कहावत होगई थी कि--

इस प्रसवकाल से बच जाऊं-खसम से बाप कहूं। ३६०

घर पिनालू तौ बण पिनालू-मामा क यां गया-नौ हाताक पिनालू।
घर पिण्डालू तो-बन पिण्डालू-मामू के यहां गये तो-नौ हाथ के पिण्डालू।
रूप की तरसे, करम की खाय। रूप की घराणी-पानी भरवा जाय।

जहा भी जाइये भाग्य तो साथ ही ठहरा।

अरे भाई ! जहा भी गया, यह खोटा करम मेरे साथ-साथ गया। कहीं भी इसने चैन से नहीं बैठने दिया। क्या कहूं आपसे, इस भाग्य को बनाने में मैंने अपनी तरफ से कभी कोई कोर कसर नहीं रक्खी। पर इसने मन चाहे धक्के खिलाये, मेरी सारी हिम्मत पर पानी फेर दिया, हार मान कर फिर गांव घर को चला आया। क्या करता। ऐसी कहावत कर लाया कि--

घर पिण्डालू तों-बन पिण्डालू।
मामू के यहा गये तों-नौ हाथ के पिण्डालू। ३६१

हरसिंह चटकै-बिरसिंह ओसांण।
हरसिंह को काटा-बीरसिंह सूजा।

ताजी मारे-तुरकी कापें।

नाहक में ही रार बढ़ा कर सन्देहों में पड़ा रहना।

चटकाना--कीड़े-मधुमक्खी और साप के काटने को कहते हैं।

आप तो मुझसे यों ही बैर वढ़ा रहे हैं। मैंने तो आपके खिलाफ कहीं भी कुछ कहा ही नहीं। सुनी सुनाई बातों के फेर में पड़ कर आपका माथा चकरा सा गया है। मैं पागल हूं, जो आपके विरोध

Scanned with CamScanner

में कहीं कुछ कहूं। वाह साहब ! किसका जिक्र और किसको फिक्र। आपने तो ऐसी कहावत कर दी कि—

हरसिंह काटा-बीरसिंह सूजा । ३९२

नौक आपुण मरि जौ-भल दुहारनक जंरौ ।
बुरा अपना मर जाये-भला दूसरों का जीये ।

भले पर सभी की सद्इच्छा हुआ करती है।

अजी ! यह लड़का थोड़े ही हुआ ? पास पड़ोस और जी का जंजाल हुआ। बेचारे करे भी तो क्या करें। सभी कुछ कर के हारमान हो गये हैं। वह है कि, मानता ही नहीं। दुर्व्यसनों व दुर-गुणों का बुरी तरह शिकार हो चुका है इससे तो अच्छा था वह मर जाता, टंटा तो टलता, तभी तो कहावत है कि—

बुरा अपना मर जाये-भला दूसरों का जीये । ३९३ ।

टुकुणाँलै कैं-भुकुड़ जानी ।
टुकड़ों से कहीं-भूख जाती है ।

खाली भूल में पड़ा रहना।

पराया कितना ही खाओ, पर जी नहीं भरेगा और अपनी आधी ही रोटी खाओ मन हरा भरा रहेगा। न कोई नाम रखेगा न कोई मन में झिझक ही रहेगी। तभी तो कहावत बनी है कि—

टुकड़ों से-कहीं भूख जाती है। ३९४

दात जौ एक-धतकारनेर जो दस ।
दाता जो एक-धतकारने वाले जो दस ।

भिखारी के पल्ले अन्त में दुतकार-धतकार ही पड़ती है।

कुछ न पूछ ! कहां कहां से आया ? आसमान से जमीन पर

और जमीन से आसमान तक हो आया। पर दाता का कहीं पता ही नहीं। जहाँ पर भी हाथ फैलाया धतकार ही सुनी। मिला कुछ भी नहीं। आज तो वही कहावत हो गई कि—

दाता जो एक-धतकारने वाले जो दस। ३९५

हुण हुण तक-नौ क्वारी ब्या छन।
होने होने तक-नौ कुमारियों के ब्याह हों।
आशा कम निराशा अधिक हो।

अजी! इसका ब्याह! जब हो जाये तभी हुआ समझो। जब से इसके ब्याह की चरचा चली तब से अब तक कोई भी दिन ऐसा नहीं गया, जिस दिन इसके ब्याह की बात न हुई हो।। ब्याह पक्का हैं। बर घर ठीक है। लेनी-देनी हो गई है पर ब्याह नहीं हो पारहा है। ईश्वर जाने क्यों? ऐसी कहामत हो गई है कि।

होने होने तक नौ कुमारियों के ब्याह हों। ३९६

कितौल कतुके ताणियौ-स्याप जतुक नी हों।
कैंचुवा कितना ही तने-सांप बराबर न हों।

असमान, समानता को, कभी भी प्राप्त नहीं हुआ करता है।

कितौला-कितुवा-कैंचुवा-गेसू।

तुम तो यों ही उनकी बराबरी करने चले हों। कहां वे कहां तुम। तुम में और उनमें धरती आकाश का सा अन्तर है, और तुम चले हो उनकी बराबरी करने। समझ जाओ मान जाओ मत ऐसी होड़ लगाओ, जिसमें तुम, तुम न रहो। ऐसा मैं तुम्हारी भलाई के लिये ही कह रहा हूं मान जाओ, वृथा अपने को भूल

Scanned with CamScanner

भुलईये में न डालो। क्योंकि हमारे बड़े हमारे लिये एक कहावत कह गये हैं कि--

कैंचुवा कितना ही तने-सांप बराबर न हो। ३९७

अत्ती रूख्याल पेड़ छुटौ-अत्ती तैराक गाड़ बगौ।

बड़ा पेड़ चढ़इया पेड़ ही से गिरे-बड़ा तैराक नदी में ही डूबे।

बड़े बोल का सिर नीचा।

एक ही कार्य में रत सा रहना, उसी में लीन हो जाने जैस होता है।

ओ हो! क्या ठिकाना था महाराज उसकी तैराकी का, वह तो बाढ़ हो या तूफान पर पदी पार ही कर देने वाला ठहरा। कभी नदी-नद का बहाव उसे टेढ़ा-तिरछा तो क्या उसका बाल भी वांका न कर सका। पर सुना है आज वह बेचारा नदी में डूब कर मर गया है। आश्चर्य होता है यह समाचार सुन कर। अगर ऐसा ही हुआ तो, उसने यह कहावत चरितार्थ कर दी कि—

बड़ा पेड़ चढ़इया पेड़ ही से गिरे-बड़ा तैराक नदी में ही डूबे। ३९८

कुकुरक पेट-टुकुणाल भरी।

कुत्ते का पेट-टुकड़ों ही से भरता है।

अलग अलग स्वभाव-स्वभाव सा हुआ बना करता है।

यह आदमी का बच्चा थोड़ी है, कुत्ता है कुत्ता। इसे अपने घर का खाना भाता ही नहीं, तभी तो देहरी-देहरी-द्वार द्वार जा कर पेट भर लाता है। कोई कमी न मैंने की न मेरी घरवाली करती है। फिर भी इसका मन नहीं अघाता। ऐसा जान पड़ता है कि, इसका अघला जनम कुत्ते का होगा, इस जनम में नरतन पागया होगा। नहीं तो

Scanned with CamScanner

ऐसा थोड़ी ही होता, जो इसे अपने माँ-बाप का कहा लगता ही नहीं। इसने तो अपने लिये ऐसी कहावत कर दी कि—

कुत्ते का पेट-टुकड़ों ही से भरता है। ३९९

काटी मांछन में-झाड़ खितण।
कटी मछलियों में-झाड़ डालना।
कटे पर नमक छिड़कना।
जान बूझ कर बैर बढ़ाना।

तुम तो ऐसे हो, बस कुछ न पूछो! तुमसे तो ईश्वर ही रक्षा करे, जहां भी जाते हो, बस झगड़ा ही उकसाते हो। कोई भी तो तुम्हें साथ रखना नहीं चाहता। न तुम्हारे साथ उठना बैठना ही चाहता है। हो बड़े बखेड़ी। चुटकियों में, मैं-मैं-तू-तू खड़ी कर देते हो। तुम्हारी तो वही कहावत है कि—

कटी मछलियों में-झाड़ डालना। ४००

पहाड़ झन जनमौ च्यलो-देश झन जनमौ ब्यौलौ।
पहाड़ न जनमे लड़का-देश न जनमे बैल।

कहीं कहीं मनुष्य जन्म भी बड़ा विकट सा होता है।

मैं तो कहता हूँ भाई! पहाड़ पर जनम लेना न लेने के समान है। कौन और कैसे इन सब पहाड़ की पहाड़ सी कठिनाइयों का सामना कर सकता है? तभी तो हमारे जानकार बड़े बूढ़ों ने यह कहावत रचदी कि—

पहाड़ न जनमे लड़का-देश न जनमे बैल। ४०१

गुणी आपण पुछड़-छोटै देख छ।
लंगूर अपनी पूंछ को-छोटी ही देखता है।

Scanned with CamScanner

जब ऊंट पहाड़ के नीचे खड़ा हो–तब उसे अपनी ऊंचाई जान पड़े।

प्राणी मात्र को अपनी सभी बुराइयां भी भलाइयां सी लगती हैं। तुम तो कुछ भी करो–बुरा नहीं। दूसरे भी वैसा ही करें तो सौ बुराइया गिनाते हो। अपने किये पर तो मिट्टी डालते हो– दूसरों के गढ़े मुर्दे उखाड़ते हो। कभी–कभी अपने किये पर भी पछताया करो। तुम तो ऐसी कहावत करते हो कि—

लंगूर अपनी पूंछ–छोटी ही दखता है। ४०२।

मरी देशवाली–ज्यून पहाड़ी ठगौ।

मरी हुई देशवाली–जिन्दे पहाड़ी को ठगे।

पहाड़ी लोग अभी भी सिधाई और सच्चाई के मूर्तिरूप से होते हैं।

ठग ले गया! सारे गाव को बस अकेले ही ठग लेगया। किसी ने भी हम लोगों में से यह नहीं जाना कि, वह कब से इधर-उधर सभी गांव घरों को ठगते खाते आरहा है। ऐसे होते होते हैं हम पहाड़ी गांव घर के लोग, जो भी आये हम लोगों की गांठ दो चार बातें इधर–उधर की कह कर काट ले। और फुसला ले। तभी तो पहाड़ी में यह कहावत प्रचलित है कि—

मरा देशवाली–जिन्दे पहाड़ी को ठगे। ४०३।

खाली अवै–सामल गवै।

खाली आया–पा थेय वाया।

असाधारण सा निराश हो ना

क्या करूं! बड़े भरोसे से घर से चला था कि, शहर जाकर एक काम के बहाने सौ काम कर आऊंगा, पर यहां आना न आने के बराबर ही हुआ, सौ काम छोड़ जो जरूरी काम था, वह भी नहीं

हुआ। भटकते-भटकते सारे दिन शहर डोला, और अब अपना सा मुख लेकर लौट रहा हूं। भगवान ही रक्षा करे। न जाने रात किस जंगल में काटनी पड़े। मेरी तो ऐसी कहावत हो गई है कि—

खाली आया-पाथेय गंवाया। ४०४

जै आङुल बिष लागौ-वी आङुल झड़ौ।

जिस अंगुली को विष लगे-वही अङ्गुली झड़ती है।

जो जैसा करता है, वैसा ही भरता है।

बिष—एक रोग जो अंगुलियो पर ही होता है। विष एक प्रकार की जंगली जड़ी होती है, वह जिस अंगुली में भूल से लग जाती है, वह अंगुली उस बिष के प्रभाव से झड़ जाती है। ऐसा माना जाता जाता है। बिषाक्त सा हो जाना।

जब वे भाई, बिरादरी, नाता-रिश्ता कुछ भी नहीं मानते हैं तो, न माने, यह उनकी इच्छा है। कौन उन्हें किसी अच्छे बुरे कार्य के लिये रोक रहा है? हम लोग उनके भाई-बिरा र हैं। तब हमें भी उनके इस काम से बुरा सा लग रहा है। अगर वे बिरादरी के पंचों का कहा नहीं मानते हैं तो न मानें। उन्हे बिरादर। से बाहर निकाल दो, झगड़ा गया। क्योंकि कहावत है कि—

जिस अंगुली में बिष लगे-वही अंगुली झड़ती है। ४०५

सबन है हलको पराल-पराल है हलको सोरयाल।

सबसे हल्का पयाल-पयाल से हल्का सोरियाल।

हलकापन मनुष्य को हिला सा जाता है।

सोरियाल—सोर का रहने वाला।

तुम भी कुछ नहीं! बड़े हल्के आदमी हो! कभी तो इतना करो कि, लोग तुम्हें देख कर तुम्हें भी कुछ समझें। तुमने तो कुछ ऐसी कहावत सी करदी है कि—

Scanned with CamScanner

सब से हल्का पयाल–पयाल से हल्का सोरियाल। ४०६

बणियोंक ढेपू भैरै कुदौ–भितेर नी आयौ सुथालै में मुतौ।

बनिये का पैसा बाहर ही कूदे–भीतर न आये तो–सुथने ही में मूते।

बिना खतरे के कोई भी स्थान खाली नहीं।

हम बनिये हैं पैसा कमाना और गवाना जानते हैं। हम जान बूझ कर बड़े बड़े खतरे मोल लेते हैं, केवल इस आशा पर कि, या इधर ही या उधर ही। समझे। तभी तो कहावत है कि—

बनिये का पैसा बाहर ही कूदे–भीतर न आये तो सुथने में ही मूते। ४०७

गुड़ सांटो रिखु ली–नाफें की सूं सां।

गुड़ सांट कर गन्ना लिया–नफे की सूं सां।

एक अजीब चूतियापंथी सी करना।

क्या हो! अब पछता कर क्या हो? तीर तो छूट गया। बड़ी मूर्खता कर बैठा। अपना ही गंवाया और अपनी ही हंसी कराई। अब क्या हो, घरवाले मेरा मुंह ताकते हैं और मैं उनका। बड़ी उलझन में प्राण फंस गये हैं, ऐसा तो न कभी हुआ और न होने का यह तो ऐसी कहावत हो बैठी कि—

गुड़ सांट कर गन्ना लिया–नफे की सूं सां। ४०८

छां हुंणी जांण–ख्यक–लुकूण।

छांस को जाना–और मटका छुपाना।

नाचने चली तो फिर लाज क्या?

आप भी आदमी हैं या घनचक्कर? मेरे ही सामने तो कल सब बातें हुईं, और आज मुझसे ही बातें छुपा रहे हो! क्या भूल गये हो? आपने ही तो सारी बातें मुझे समझाई, नहीं तो, मैं क्या जानता था, कोई मुझे स्वप्न थोड़ी ही हुआ। आप तो पास पड़ोस वालों से भी यह बात छुपा रहे हो और ऐसी कहावत कर रहे हो

कि— छास को जाना—और मटका छुपाना। ४०९

बुद्धि रैगे स्याल हुणी—खुटि रैगे काल हुणी।

बुद्धि रह गई शृङ्गाल के पास—पैर रह गये काल के पास।

मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु विवशता है।

क्या कहें और क्या करें! समय को देख अचरज सा होता है, न बुद्धि ही काम करती है और न हाथ पैर ही। पत्थर पर सिर मार कर मर जाने को जी करता है। ऐसा जमाना ऐसा युग तो, कभी देखने सुनने में ही नहीं आया। कुछ भी करें, कुछ भी नहीं। ऐसी कहावत सी होगई है कि—

बुद्धि रह गई शृङ्गाल के पास—पैर रह गये काल के पास। ४१०

स्वारा खाणी पड़ी—घर खाणी चढ़ी।

विरादर खाना पड़ के—घर खाना चढ़ के।

घी खाना शक्कर से—दुनिया खानीं मकर से।

हर सम्भव उपाय से संसार में रहना चाहिये।

न बहुत उछल कर रहे न बहुत दब कर। आदमी को चाहिये ढङ्ग से रहे।

तू तो थोड़ी सी बात से आपे से बाहर होजाता है। कभी ऐसा गिरेगा कि, दाँत टूट कर बाहर निकल आयेंगे, तूने क्या समझ रक्खा है? अपने को बड़ा लाट साहब सा क्या समझता है। मेरे सामने तो, तू जो भी करे, करले, पर बाहर भाई विरादरों में मेरी और अपनी नाक मत कटवा। तूने यह कहावत नहीं सुन रक्खी है कि—

विरादर खाना पड़ के—घर खाना चढ़ के। ४११

बांज कै नी खणी खौ—कमुन सबन खाणी खौ।

बंजर भूमि किसी को नहीं खाये—कमाई भूमि सभी को खल खाये।

Scanned with CamScanner

(खणी खौ—खोद कर खाना, कुरेद-कुरेद कर खाना ।)
मनुष्य ने मनुष्य ही को सुख से नही खाने दिया ।

तुम ही कहों ? मैंने क्या बुरा किया ? जो बंजर कमा खाया। इतने पर ही सारे गांव वालों ने मेरी रिपोट करदी और मुझे जरिबाना करा दिया। इतना ही होता तो भी मैं तसल्ली कर लेता, पर मुझसे जमीन भी छीन ली। तभी तो हमारे बड़े बूढ़े कहावत कह गये हैं कि—

बंजर भूमि किसी को न खाये–कमाई भूमि सभी को खल खाए। ४१२

खवै न पीवै–खालि मुख धोवै।
खिलाई न पिलाई–खाली मुख धुलाई ।

नित्यकर्म सा कर ही लेना ।

कहां कहाँ न जाने भटक आया। पर कहीं भी खाने का डौल न बैठा। ऐसा समय आया कि, कोई भी ऐसी बातों के लिए नहीं पूछता। प्रातःकाल मुख धोकर घर से निकला था, बस निकला ही रहा। खाली फिरकी की तरहफिरते ही रहा जब सिर पर सांझ पड़ी, तब मुझे भी हड़बड़ी पड़ी। आज तो मेरी वह कहावत बनी क—

खिलाई न पिलाई–खाली मुख धुलाई। ४१३

माङ्गण हुणी गे छै छकी मिलि पड़ौ नौ छकी।
मांगने गया छः लंघन वाला–मिल पड़ा नौ लंघन वाला ॥
भाग्य से ही भाग्य टकराता है।

अपने भाग्य में जो नहीं हुआ तो, तुम लाख करो, कुछ होने से रहा। वैसे तुम किसी से कम थोड़े ही हो, हाथ-पांव तोड़ने में तक कसर नहीं करते हो। वापरे बाप ! क्या ठिकाना है तुम्हारी दौड़ धूप करने का, तुम्हारी जगह पर अगर कोई दूसरा होता तो, मर

बैठता। पर तुम्हारा तो यह हाल है कि, जहां भी जाते हो धक्के ही खाते हो। तुमने तो ऐसी कहावत कर दी है कि--

मागने गया छः लंघन वाला-मिल पड़ा नौ लंघन वाला। ४१४

काँकड़ आफी मुतौ-आफी तरासियौ।

कांकड़ आप ही मूते-आप ही त्रास खाये।

आप ही आप सन्देहों में पड़ा रहना।

कांकड़- पहाड़ी हिरन। प्राणों के भय से भयभीत हुआ यह थोड़ी ही आवाज से घबराकर भाग जाता है। आप तो यों ही औरों पर शक करते हैं, अपने आप को सन्देहों और शंकाओं में डाल रखते हैं। आप तो जानकार आदमी होकर भी जाने अनजाने ऐसी कहावत सी कर देते हैं कि—

कांकड़ आप ही मूते-आप ही त्रास खाये। ४१५

कमन ख्वै नै-बांज गंवौ नै।

कमाई हुई भूमि खोये नहीं-बंजर गंवाये नहीं।

मनुष्य बड़ा सावधान-सतर्क सा रहे।

तुम्हें क्या हो रहा है, जो खेत उसे छोड़ रहे थे ? मेरा कहना मानते हो तो बित्ता भर भूमि भी न देना, कौन नहीं जानता ? सारा गांव गवाह है कि, वह खेत तुम्हारा है। करने दो जो उसके जी में आता है। तुम डरो मत, डटे रहो। भाई कहावत है कि—

कमाई हुई भूमि खोवे नहीं-बन्जर गंवाये नहीं। ४१६

स्यापाक च्याल-पेटै बटि कुरबुरैल।

सांप के लड़के-पेट से ही कुबुर।

मछली के जाये-किन तैराये।

बड़ा होश्यार। क्या कहने हैं इस लड़के के। भाई वाह ! तुम्हारे

पिता जी क्या काम करते हैं ? जज हैं हाईकोर्ट के। शाबाश। तभी तो, कहावत है कि—

साँप के लड़के-पेट से ही कबुर। ४१७

स्वां फ़्वा करि गै-मेरी खोरि फोड़ि गै।

स्वां फ्वा कर गये-मेरा सिर फोड़ गये।

अनायास ही कष्ट में डालना।

स्वां-स्वां—श्वांस का चढ़ाव-उतराव। कुकरम करते समय की श्वांस क्रिया।

मैं न कहता था आपसे कि, यह बड़ा धूर्त-छलिया और कपटी आदमी है। तुम उस समय उसके बहकावे में फंस सी गई थी। तब तुमने मेरी कही नहीं सुनी। उसका क्या ! उसका तो यह धर्म सा ही है कि, किसी का घर विगाड़ दे और आप भला आदमी बना रहे। तुम्हें झासा-दम पट्टी दे कर तुम्हारा चित्त डामाडोल कर गया और तुम्हें रुला गया। उसने तो ऐसी कहावत कर दी कि—

स्वा-स्वा कर गये-मेरा सिर फोड़ गये। ४१८

नौ नटू-एक बटू।

नौ कुवारे-एक बटोहिन।

बड़े असमन्जस का सा पड़ाव।

नटू—कुंवारा।

मैं अकेला और वे सात-सात। हाथ-पैर मारता भी तो कब तक ! फिर भी मुझमें जितनी हिम्मत थी लगाई, पर काम न आई। अन्त में मैं परास्त सा हो गया। दूर की बात, मेरे लिये तो ऐसा हो पड़ा कि, जाने कैसा। क्या करता अधमरा सा कर गये। वह तो अभी भाग्य में आप लोगों के दर्शन करने होंगे जो बच गया। नहीं तो मेरी ऐसी कहावत हो गई कि—

Scanned with CamScanner

नौ कुंवारे-एक बटोहिन ४१९

हलको बांणो-नैकाणा दो णो।

हलवाही करना-नैकाना तकना।

बड़ी भारी असंगति सी करने पर उतार होना।

नैकाणा--पहाड़ के वह इलाके जहां पर नायक लोग बसे हुये रहते हैं, जो कभी अपनी औलादों से जायज-नाजायज पेशा कराया करते थे।

तुम भी यार क्या हो! पक्के भोंदूमल कहा दूकानदारी और कहां यह तिरछी नजर। समझ लो अच्छी प्रकार से समझला, नहीं समझोगे तो यह गोंन बैठ जायगी। तब रोओगे, पछताओगे और हाथ मलोगे पर फिर बात यह हाथ नहीं आयगी। सुन लो बुजुर्गों की कही हुई कहावत सुन लो कि--हल चलाना और चक ले जाना, वाली होगी या ऐसी कि--

हल वाही करना-नैकाना तकना। ४२०

सासू हुंणि कूणि-ब्वारि कैं सुणूणि।

सास से कहनी-बहू को सुनानी।

धीये गल सुन, नूये कान कर-बेटी को बात सुना कर-बहू के कान खड़े कर देना। --पंजाबी।

कहें खेत की-सुनें खलिहान की।

अरे! वह मुझसे कह रहे थे, और तुझे सुना रहे थे। चाचा साहब तो, हम दोनों ही को निरा काठ का उल्लू ही समझे बैठे हैं। वे तो ऐसी कहावत सी कर गये कि--

सास से कहनी-बहू को सुनानी। ४२१

हजारनाक सौद में-सैकड़नक मुख नी देखण।

सैकड़नक सौद में-रुपैं नक मुख नी देखण।

Scanned with CamScanner

हजारों के सौदे में–सैकड़ों का मुंह न देखे।
सैकड़ों के सौदे में–रुपये का मुंह न देखे।

बहुत सोच विचार और देखा देखी बिगाड़ सा करती है।

थोड़ी सी बात पर अड़ कर रह गये। आप जैसे समझदारों से क्या कहा जाये। जितने रुपये आप लगा चुके थे अगर थोड़े ही और बढ़ जाते तो, चीज आपकी होगई थी। आप न खरीद सके, मुझे भी मलाल रहा। शायद आपने यह कहावत नहीं सुनी कि--

हजारों के सौदे में–सैकड़ों का मुंह न देखे।
सैकड़ों के सौदे में–रुपये का मुंह न देखे। ४२२

कब कौव कड़ालो–कब रात ब्याली।
कब कौवा कॉय करे–कब रात खुले।

आशा लगाये बैठ रहना, पाप सा होता है।

चलो! उठो बहुत हुआ। इतने भी सो लिये तो कुछ कम न समझो। सजग होओ अभी कितने ही पड़ाव–पहाड़ से पार करने हैं। इतना जो अलसाओगे तो, यही के यही रह जाओगे। अगर तुम उठ बैठते हो तो, हम लोग रात खुलने तक एक पड़ाव और आगे बढ़ जायेंगे। कौन इस रात खुलने को ठहरा रहे। तुमने यह कहावत नहीं सुनी कि—

कब कौवा कांय करे–कब रात खुले। ४२३

करि बेरक धाण–भरि बेरक मांण।
करके होवे काम–भर के होवे भरोढी।

करने से ही सब कुछ होता है।

तुम हाथ पर हाथ रख कर बैठ जो रहोगे तो, फिर काम कैसे होगा? उठो कमर बांधो, सतर्क और जागरूक हो जाओ। अगर

जीना चाहते हो तो कुछ कर ही जाओ। खाली बैठे-बैठे अनजाने ही मृत्यु को पास न बुलाओ. कुछ करो तब मरो। तुमने कहावत नहीं सुनी कि—

करके होवे काम-भरके होवे भरोटी। ४२४

तेरी-तेरी एसीतसी में गे-मेरो ला।
तेरी-तेरी ऐसीतैसी में गया-मेरा ला।

अपनी ही बात को बड़ी समझना।

ला रख दे, मैं तुझसे अच्छे मुंह से कह रहा हूं। नहीं तो तू जानेगा। तेरा है तो दूँगा, इन रुपयों में क्यों काटता है। यह पराये हैं। दे-दे मान जा क्यों खाली तंग करता है? तू तो ऐसी कहावत सी कर रहा है कि—

तेरी-तेरी ऐसीतैसी में गया-मेरा ला। ४२५

पांणी में जांठ मारौ-द्वी नी हुन।
पानी में लट्ठ मारो-दो नहीं होते।

जहां मेल है, वहां कोई पेल नहीं।

तुम तो सारी बुद्धि का दिवाला निकाल कर भी उन दो भाइयों में झगड़ा न करा सके। कौन सी हिकमत छूटी रह गई, जिसे तुम काम में नहीं लाये! पर वाह रे, भाइयों की जोड़ी बनी रहे। तुम राम लक्ष्मण से सदा जियो। तुमने इनकी सारी करतूतें देख कर भी एक अपशब्द नहीं कहा। वाह भाई वाह! तुमने तो ऐसी कहावत कर दी कि—

पानी में लट्ठ मारो-दो नहीं होते। ४२६

अपजसिय भाग म्यर-के कसूर त्यरौ।
अपयशी भाग्य मेरा-क्या कसूर तेरा।

संसार में सब अपने ही भाग्य का होना, होता है।

Scanned with CamScanner

आपने तो मेरे ऊपर इतनी बड़ी बड़ी कृपायें बिछा सी दी कि, क्या कहूँ, आपके उपकारों से तो मेरा गला भर सा आता है। मुख से कुछ निकलता ही नहीं। गूंगा सा हो जाता हूं। ईश्वर आप पर सदा कृपा रक्खे। सब अपना ही कसूर है, आपका तो मेरे सिर पर उपकार ही है। पर इतने पर भी मेरे भाग्य ने ऐसी कहावत कर दी है कि—

अपयशी भाग्य मेरा-क्या कसूर तेरा। ४२७

घरैकि बात कूंणि नै-सांची लुकूणि नै।

घर की बात कहनी नहीं-सच्ची छुपानी नहीं।

सच्चाई से मुंह नहीं मोड़ना चाहिये।

तुम तो सच हो या झूठ, घर भर की बातें कह रहे हो? इन बातों में यहाँ क्या रक्खा है। यह तो तुम्हारी निजी बातें हैं। बस चुप रहो, बहुत कह चुके, हमें तुम्हारी घर की बातों से क्या लेना है? कोई दूसरी चर्चा करो! जिससे मन बहले, ऐसी कहावत न करो कि—

घर की बात कहनी नहीं-सच्ची छुपानी नहीं। ४२८

सोल सरादक-एकै पिन्ड।

सोलह श्राद्धों का-एक ही पिन्ड।

अनायास ही सब कोर-कसर पूरी कर लेना।

अजी! उस भले मानुष ने इतना मारा, इतना मारा कि मर गया होता, अगर इसकी जगह कोई दूसरा होता तो, सांस तक न ले सकता। यह भी क्या बैर निकालना हुआ कि आदमी ही मर बैठे। मैंने तो इतनी मार मारते अभी तक किसी को नहीं देखा। बाप रे बाप! उसने तो ऐसी कहावत कर दी कि—

सोलह श्राद्धों का-एक ही पिन्ड। ४२९

Scanned with CamScanner

नौ नखारा-सौ टोक्यारा ।

नौ जो नखरे-सौ जो टुकाइयां ।

दूसरों का कुछ भी नहीं सुहाना ।

क्या वह बेचारी मिजाज करेगीं ? मौसी की टुकाइयों के मारे ही उसके नाक में दम है । थोड़ी भी उसने अपनी सहेलियों की देखा देखी बनाव श्रंगार किया नहीं, बस मौसी जी उबल पड़ीं । फिर किसका मिजाज किसका बनाव श्रृङ्गार । उस बेचारी की तो ऐसी कहावत है कि—

नौ जो नखरे-सौ जो टुकाइयां ।४३०

नैं कूंण भै नै-गांठ पाल भै नें ।

नहीं कहना हुआ नहीं-पल्ले पास हुआ नहीं ।

बड़ी असमन्जस में जैसा पड़ जाना ।

भई गति साँप छछूंदर केरी ।

क्या करूं यार ! उनसे कुछ कहते ही नहीं बन रहा है । नहीं कहूं तो उन्हें बुरा लगेगा, हाँ कहूं तो कहां से दूं । कुछ कहते ही नहीं बन रहा है । वे बेचारे कितनी बार, बार बार आ चुके हैं । पर यहाँ वह कहावत हो गई है कि—

नहीं कहना हुआ नहीं-पल्ले पास हुआ नहीं । ४३१

आपुणि बखत बड़ नाख लाग-दुहारनाक बखत नाचण लाग ।

अपनी दफे बड़ा नाक लगे-दूसरों के दफे नाचने लगे ।

अपनी ही बात को सदा बड़ी सी समझना ।

तुम भी क्या हो बस अजीब खर हो ! तुम्हारी गिन्ती तो कभी भी मनुष्यों में नहीं होनी चाहिये । आये बड़े तीसमारखाँ ! दूसरों की बातें जिन्हें भाती ही नहीं । ऐसा भी क्या हुआ, और यह भी कोई मिजाज हुआ कि, अपनी दफे तो जो मुंह से निकला कह

दिया और दूसरों के दफे कान खड़े कर लिये। तुमतो ऐसी कहावत कर बैठते हो कि—

अपनी दफे बड़ा नाक लगे-दूसरों की दफे नाचने लगे। ४३२

भैर बैठू कै ठौर नै-भितर बैठू कै और नै।

बाहर बैठूं कहूं ठौर नहीं-भीतर बैठूं कहूं और नहीं।

आटे का चिराग-घर रक्खूं तो चूहा खाय-बाहर रक्खूं तो चूहा-खाय

बड़ी अकथनीय पीड़ा सी-निर्धनता का अभिशाप सा।

आज तुम आगये तो, मेरे सोये भाग्य ही जाग गये। तुम क्या आये, देबता ही आगये। तुम्हारी बड़ी समझ ठहरी तब, नहीं तो मुझ जैसों को कौन पूछता है और पूछता है और पूछ कर करेगा ही क्या? भाई! मैं तो हर प्रकार से मारा हारा आदमी हूं। तुम्हें सच नहीं आयेगी कि, मेरी तो ऐसी कहावत हो गई है कि—

बाहर बैठूं कहूं ठौर नहीं-भीतर बैठूं कहूं और नहीं। ४३३

भौ बौलमी जौ-घौ गुलमी जौ।

बालक बहल जाये-घाव गुम्मढ़ जाये।

धीरज से ही कार्य बनते हैं।

इतना न मारिये। बच्चा ही ठहरा, जिद्द कर ही बैठता है, अगर आप न मारें तो यह बहल सकता है। बच्चे का क्या है थोड़ी में ही बहल जाता है। मारना तो बड़ी बेहुदी सी बात है। तुमने यह कहावत नहीं सुनी है कि—

बालक बहल जाये-घाव गुम्मढ़ जाये। ४३४

आपूं जै जेठि-मींहुणि जै दीदी कैं।

आप जो जेठी-मुझसे जो दीद कहे।

(जेठी—बड़ी) उलटी गंगा बहाना।

नाहक में ही दूसरों को बनाने की कुचेष्टा।

आप तो मुझसे पूछ रहें हैं ! जब कि आप जाने-माने हुए और तपे-तपाये राजनीति के अखाड़े के खिलाड़ी हैं। मैं तो अभी भी आपके सामने इन बातों में बच्चा सा ही हूं। जितनी बातें आप जान चुके हैं, मुझे अभी सीखनी पड़ेगी। मैं तो आपके सामने निरा छोकरा ही ठहरा। ऐसा जानते हुए भी, आप मुझ पूछने का कष्ट सा करके, ऐसी कहावत सी कर रहे हैं कि—

आप जो जेठी-मुझसे जो दीदी कहे। ४३५

बल्द हाकण आख काख-सैंणी हाकणी म्हैंण पाख।

बैल हांकना आंख कांख-औरत हांकनी महीने पाख।

जो कुछ भी करना धरना हो समझ से ही करना चाहिये, ताकि बुराई न हो।

बीच बोये जोते खेतों में तुम बैल चरने को खोल देते हो, थोड़ी आँखें खोल करके तो देखो ? मेरा सब करा कराया मिट्टी में मिल गया। तुम्हारा क्या है, बैल खोल लाये और चरने को छोड़ दिये, आप मीठी नींद के झोंके लेने लगे। भाई ऐसा भी क्या हुआ। कुछ तो दया करो। ऐसा ही जो होता तो, हमारे तुम्हारे गाँव घर के बुढ़े यह कहावत ही क्यों बना जाते कि—

बैल हाँकना आंख कांख-औरत हांकनी महीने पाख। ४३६

रुपैं टुटो-हाथिक खुटो।

रुपया टूटा-हाथी का पैर।

रुपया बहुत बड़ी चीज है।

रुपुली-तुझे भुनाऊं-तो मैं मर ही जाऊं।

क्या करूं, एक लाल तांबे का पैसा हाथी के पैर सा भारी हो रहा है। तुम्हारा क्या है भाई। तुम तो बड़े साहब के यहाँ नौकर हो, एक छोड़ दस खर्च कर सकते हो, मगर अपने राम का तो बुरा

Scanned with CamScanner

हाल है। जहाँ रुपया तुड़वाया, बस टूटने में ही गया, फिर पूरा रुपया बनाना कोई हंसी की बात नहीं है। अपनी तो ऐसी कहावत है कि— रुपया टूटा-हाथी का पैर। ४३७

माण बरकै दीण-धाग सरकै दीण।

भरोटी को भर देना-तागे को सरका देना।

जो भी कार्य हो सुचारु रूप से कर ही देना।

माणा—छोटी भरोटी। छह मुट्ठी जिसमें अन्न समाता हो। गांव घर की छोटी तोल। यह पात्र पहाड़ में बहुधा काठ के बने रहते हैं। बरका देना—फुला फुला कर भरना-मुहामुह भरना-भर जाने पर वरषा की सी फुहार पड़ना। चाश्नी सी बरकना।

अरे! कम तोल कर क्यों अपना यह लोक परलोक बिगाड़ रहाहै? जब पैसे पूरे लेचुका है तो, तोल भी पूरी ही दे। दोंतरफा मत मार। नहीं तो मरती वार बुरी मौत मरेगा। समझ ले। तभी तो हमारे बड़े बूढ़े यह कहावत गुन गये हैं कि—

भरोटी को भर के देना-तागे को सरका देना। ४३८

बल्दौं सांटी-हल्द ल्यै।

बैल बदल कर-हल्दी लाये।

बैल सांट कर कर हल्दी लाये-घर आकर धक्के खाये।

ना समझी का काम कर बैठना।

लो चौधरी जी! मेले गये, सुना है कि वहा से एक सौदा ऐसा कर लाये कि घर पर पहुंचते ही चौधरन बड़ी बुरी तरह बिगड़ खड़ी हुई। उन बेचारों को घर पहुँचने पर समझ आई कि, मुझे यह सौदा नहीं करना चाहिये था। अब पछता रहें हैं, वह भी चौधरन के कहने से। सुना है वह तो ऐसी कहावत करके घर लौटे हैं—

बैल बदल कर-हल्दी लाये। ४३९

Scanned with CamScanner

जे पन्त कौ–सबुं ल करण–जे पन्त करौ–कैल नी करण।
जो पन्त कहे–सभी ने करना–जो पन्त करे–किसी ने न करना।
प्रचण्ड प्रताप सा छाया रहना।
So as I Say but do not do—as I do

यह कहावत कितनी पुरानी है कौन जानता है, परन्तु नई सी जान पड़ती है। क्योंकि इस समय भी हमारे पन्त जी गृह मन्त्री भारत सरकार, मेरी इस पहाड़ी कहावत के साक्षी हैं। ऐसा आदमी! फिर उस पर श्री गोविन्दवल्लभ पन्त सा आदमी कुमाऊं के इतिहास में ढूँढे से भी नहीं मिलेगा। पहिले तो कुमाऊं का इतिहास ही क्या है? कुछ अंग्रेजों के लिखे हुए सरकारी गजट। फिर उनकी एक प्रकार की नकल–कुमाऊं का इतिहास है। सचमुच में तो इतिहास लिखा ही नहीं गया है। जब इतिहास लिखने का समय था या लिखा जाना चाहिये था, तब तो कुमाऊं के फले–फूले घराने राजाओं का चूल्हा धूंकते रहे और कुछ उनके सिर में फूल रखते रहे। कुछ उन में से पं० जगन्नाथ की भांति ही "दिल्लीश्वरोवा जगदिश्वरोवा" कहते रहे। और वर्गों या जातियों में पढे लिखे तब उड़द में सफेदी की तरह रहे। अभी भी इस मेरे कुमाऊं ने इधर सन '१० से लेकर १९५७ तक क्या क्या जादूगरी और करतब दिखलाए, सभी बीती बात सी हो पड़ी है किसे पड़ी है जो इतिहास लिखाये या लिखने बैठे? भय से जिसे अंग्रेज दूसरा बंगाल कहते थे–वही अब दम्भ से भरा पड़ा है, जो भी है अभी तो यही सच्चाई–अच्छाई और परिणाम व प्रमाण सा है। इस स्वराज्य में भी आदमियों को लूट खाना छोड़ क्यों कोई अपना सर खपाये? कौन है ऐसा, जिसके सिर में ऐसा भूत सवार हो? पूज्य पण्डित बद्रीदत्त पांडे जी ने मैं मानता हूं, अकेले ही पहले पहल इस प्राण हीन कुमाऊं में प्राण फूंके, वह भी अपने प्राण होम कर। कोई मेरी बात माने या न माने–पर मैं मानता हूं। शेषनाग के सिर

पर इन्होंने ही सब्बल मारा। ये कुमाऊं इतिहास के प्रखर-प्रचण्ड मार्तण्ड से हैं। इन्होंने जब तक राजनीति से सन्यास सा नहीं लिया था तबतक ये महाकवि बाण की भांति ही 'हर्षोवा परमेश्वरोवा' यही मन्त्र जपते रहे। गोड़-गांधी-गोविन्द (गोविन्दवल्लभ पन्त) दो बार एम० पी० होकर भी न हुए बराबर ही से हुए। फिर ईश्वर की दया से स्वर्गीय पं० हरगोविन्द जी पन्त एम० पी० हुए। परन्तु ये श्री पांडे जी के पांव पर पांव रखकर ही चले। एक बार ये भी डा० अम्बेदकर को मनु बना आये। जिसके लिये कुमाऊं के जाज्वल्य ज्वाल पं० गोविन्दवल्लभ पन्त जी को भारत सरकार का गृहविभाग सम्भालते ही-हरगोविन्द पन्त जी के बनाये मनु महाराज से कहना पड़ा। हमने पहिले आपकी डङ्क वाली दुम नहीं देखी थी। कहाँ दफा बनाने वाले मनु और कहां मनु। मनु वह था जिसने सारे समाज की मर्यादा बांध की भाँति ही बाँध रक्खी है। अभी भी इस संसार के नियम जिसके बांधे हुए नियमों से बंधे हुए हैं। तभी तो बीर जाति जर्मनों द्वारा दो बार सारे संसार की उलट-फेर कर देने वाले बरदानी पुत्र "नित्शे" मनुस्मृति के बारे में एक जगह पर कहा है और ठीक कहा है। क्योंकि वे कहना जानते थे। बाइबिल की अपेक्षा-मनुस्मृति एक बहुत बड़े मस्तिष्क की उपज है। दुर्भाग्य से पं० हरगोविन्द जी पन्त असमय में ही गौलोकवासी होगये। ये मर्यादित नेता थे सन् २३ से आमरण किसी चुनाव में हारे ही नहीं न हारमान ही हुए। नेता गिरी का पुच्छला लगाये जो फिर रहे हैं उनकी क्या गिन्ती! जब मजे-मजाये खिलाड़ियों के ये हाल हैं। जो भी हो मेरा सारा कुमाऊं पूज्य गोविन्दबल्लभ पन्त जी का मुख ही जोहता है। अगर पन्त जी मुझ जैसों को न भी पूछे तो, तौ भी पन्त जी पन्त जी ही हैं। पन्त जी कहने और करने से हमारा सारा राष्ट्र ही पोषित होता है, फिर मैं भला किस गिन्ती में हूँ। मैं तो गृहमन्त्री

Scanned with CamScanner

पन्त जी का आभार मानता हूं। उन्होंने महाराजा छत्रशाल की भाँति 'भूषण' का मान तो किया पर 'भूषण' को भूषण न पहिना सके। वैसे ही पूज्य पन्त जी भी मेरी बात, बात न कर सके। मैं उनके चरणों में अपने साहित्यिक प्राणों द्वारा प्राण-प्रतिष्ठा न कर सका, मैं तो क्या आदरणीय श्री डा० हेमचन्द्र जोशी डी-लिट् तक इस अभूतपूर्व को मूर्तरूप न कर पाये। मेरी धारणा है हम कुमाऊं वालों को कभी न कभी पं० गोविन्दवल्लभ पन्त जी के लिये रोमन लोगों की भांति जैसा कि उन्होंने अपने 'अगस्त' के लिए कहा। कहना ही पड़ेगा कि—तुमने जन्म ही नहीं लेना चाहिये था-जन्म ही ले लिया था तो, फिर मरना ही नहीं चाहिये था। मेरी तो पूज्य पन्त जी से भी अधिक बात श्री मा० डा० सम्पूर्णानन्द जी मुख्य मन्त्री उत्तर प्रदेश ने रखी। डा० सम्पूर्णानन्द जी की कृपा को याद कर मेरे आंखू में आँसू छा जाते हैं। कृतज्ञता प्रकट करने का कोई रूप ही सा नहीं दिखलाई देता है।

तुम भी क्या हो, कलियुगी भीम हो ऐसा भी क्या कि-जैसा तुम करो-वैसा कोई दूसरा न करे और जैसा तुम कहो, वैसा हरएक करें। वाह ये भी एक ही रही-ऐसी भी तानाशाही क्या हुई? ये तो तुम पहाड़ी सी कहावत कर रहे हो कि—

जो पन्त कहे-सभी ने करना-जो पन्त करे-किसी ने न करना। ४४०

जैंका घर खांहुणी नै-वी का घर ठुली नाली।
जिसके घर खाने को नहीं-उसके घर बड़ा भरोठा।

ऊंची दुकान-फीका पकवान।
वह चीज जिसमें कुछ भी तथ्य सत्य सा न हो।

तू तो कुछ करता न धरता न कुछ पढ़ा गुणा ही, पर शान देखो, घोड़ा घास नहीं खाता तुझे तो इतनी भी शर्म नहीं है कि मुझे देख

Scanned with CamScanner

कर लोग क्या कहते होंगे। मान-गुमान और अभिमान तो उन्हें सुहाता है जो इस जीवन में कुछ कर गुजरते हैं। तेरी तो ऐसी कहावत है कि।

जिसके घर खाने को नहीं उसके घर बड़ा भरोठा। ४४१

तेल जै कम-चिड़ चिड़ाट जै ज्यादे।

तेल जो कम-कम-चिड़चिड़ाहट जो ज्यादे।

तेल देखो तेल की धार देखो।

करना कम बकना बहुत।

तुम अपने को बड़े नामबरों में समझ बैठे हो, पर नहीं जानते हो कि, लोग तुम्हारी खिल्ली उड़ाते हैं। क्योंकि तुम से किसी का कुछ बनता बिगड़ता तो है नहीं, ओछी बातें करते फिरते हो उस पर भी समझ बैठे हो, जो हुआ हम से हुआ। तुमने तो ऐसी कहावत कर रखी है कि।

तेल जो कम-कम-चिड़चिड़ाहट जो ज्यादे। ४४२

ह्यूनै की रसियार-चौमासै की घसियार

हेमन्त की रसियारी-चौमासे की घसियारी।

सरलता से कार्य सम्पन्न कर लेना।

रसियारी-महाराजन-घसियारी-घास बेचने वाली।

अरे रहने दो? क्यों बातें बना रहे हो, मैं सभी कुछ जानता हूं और हर एक से अच्छी तरह जानता हूं, मैं घाल घपोल-टाल मटूल करके किसी की आखों में धूल नहीं ड़ालता हूं, और ऐसा काम करता हूं जो बारहों महिने करना पड़ता है। ऐसा नहीं, काम चलाऊ बल्कि टिकाऊ, ऐसा नहीं कि दो दिन काम किया, लगे पसीना दिखाने। मैं ऐसी कहावत नहीं करता हूं कि।

हेमन्त की रसियारी-चौमासे की घसियारी। ४४३

Scanned with CamScanner

नै अटाई घाम–ग्यारा अटारा ।
न अमाना घाम–मेरी अटारी ।

अद्भुत सी बात हो जानी ।

तुम्हें जब कोई धमकी खाने वाला नहीं मिला नहीं मिला तो, मैं हाथ पड़ा और तुम मुझ पर ही बरस पड़े । तुम ने यह भी सोचने का कष्ट नहीं उठाया कि. मै वहां पर था भी था नहीं । ऐसा भी अंधा क्रोध किस काम का, और वैसा ही मेरा भाग्य भी ठहरा । तुमने तो ऐसी कहावत करदी कि ।

न अमाया घाम–मेरी अटारी । ४४४

चोराक लै–कांई खुटा हुनीं ।
चोर के भी कहीं–पैर होते हैं ।

एक चमत्कार सा कर देने वाली बात ।

न जाने, कब कोठे पर चढ़ आया, भरे घर में किसी ने भी न जान पाया । सारा घर मुर्दे की भांति सोया रहा और चोर ने साहुकार की भांति माल टाल मार लिया । सारा पास पड़ोस गांव घर आश्चर्य मैं है कि, उसने जादू ही से ऐसा काम किया होगा । क्या कहूं । न जाने कब आया और कब गाया । वह तो ऐसी कहावत सी कर गया कि ।

चोर के भी कहीं–पैर होते हैं । ४४५

सैंणी हुणी चूनै की सौत–चोर हुणी खखारै भौत ।
औरत के लिये चूने की सौत बहुत--चोर के लिये खखार बहुत

शंकाओं से, हर एक स्थान भरा पड़ा है ।

कांटा बुरा करील का–और बदरी का घाम ।
सौत बुरी है चून की–और साझे का काम । घाघ,

मैं न खखारता तो, वह चोरी करने आया ही था, कुछ न कुछ

जो भी हाथ पडता उठा ही ले जाता। मेरा खखारना सुन कर वह सिर पर पांव रख कर भागा। यह देख कर, मुझे अपने बड़ों की बनाई हुई कहावत पर गर्व सा हुआ कि।

औरत के लिये चूने की सौत बहुत–चोर के लिये खखार बहुत। ४४६

वण भनारो–घर उड़यारो।

वन भन्डारा–घर अन्धियारा।

कोई गुमान भरी नासमझी सी करना।

उड़ियार–पहाड़ी खोह–गार–गुफा–मांद। अन्धेरी जगह।

इनकी साहबी का भी क्या ठिकाना है? कुछ न पूछा। जो जी में आया, कर गये। भले ही बाल बच्चे भूख के मारे तिलमिला रहे हो, पर इनको साहबी के डांट का टाट अभी नहीं लौटा। ऐसे ही साहबों के लिये यह कहावत कही गई है कि।

वन भन्डारा–घर अन्धियारा। ४४७

खांहुणी अघियौ–मारन हुणी पचियौ।

खाती दफे आगे आये–मारती दफे पीछे जाये।

१ एक प्रकार का सुअवसर वादी सा।

२ मारतों के पीछे–भागतों के आगे।

यह होते ही मर भी नहीं गया, एक ही रोना होता। इसके होने से तो नित ही रोना रोना होगया है। इतना बड़ा होगया है कि मुंह पर मूछों की मलार (लकीर) सी आगई है पर इसे इतने पर भी होश नहीं आया है। बस, खाती दफे आता है और खाया कि चम्पत। इसके लेखे फिर हम मरें या जियें। इसने तो ऐसी कहावत कर रखी है कि—

खाती दफे आगे आये–मारती दफे पीछे जाये। ४४८

पिनालुक पातक पाणि–गरीबै की घरै की माणी।

पिण्डालू के पात का पानी–गरीब के घर की माणी।

गरीबी बड़ा भारी अभिशाप है।

गरीबी का ऐसा हृदय विदारक चित्र और साथ ही ऐसी उपमा कहीं खोजने पर ही मिले तो मिले। नहीं तो शक ही है। हाय गरीबी! ग्राम्य साहित्य सेवियों ने भी साहित्य का पेट चीर कर कैसे–कैसे अनमोल रत्न निकाले हैं? कौन देखता है इनकी तरफ?

जितनी देर पत्ते पर वह भी पिण्डालू के, पानी ठहर सकता है। गरीब के घर की भरोटी का उतना भी सहारा नहीं। इन दस सालों का दुध मुंह बच्चा 'स्वराज्य' भी इस चीर फाड़ पर अभी मरहम नहीं लगा सका। क्या तुम्हारे घर अनाज हुआ ही नहीं! जो विसाह लेकर खा रहे हो? नहीं तो, हुआ तो सही, पर चूक चुका है। फिर गरीबी में होता ही कितना है। जो हुआ भी उसका क्या और कितना सहारा समझते हो? हमारी तो ऐसी कहावत है कि—

पिण्डालू के पात का पानी–गरीब के घर की माणी। ४४९

दली दाल फली चावल खै–निमखणा भै रै।

दली दाल–फले चावल खाये–निकम्मे से बैठे रहे।

अर्थ हीन सा काल यापन करना।

निमखणा—निरर्थक–व्यर्थ। खाली बैठे–बैठे ऊंघना।

उनका क्या है! जब तक मां बाप सिर पर हैं। खाये और फाग गायें, काम करे उनकी वला। इस बात में तो वे भाग्यवान ही गिने जायेंगे। पर कब तक, यह तो ईश्वर ही जाने, पर अभी तक तो यह कहावत उन पर फबती सी कस रही है कि—

दली दाल–फले चावल खाये–निकम्मे से बैठ रहे। ४५०

Scanned with CamScanner

नै आश नै औलाद-बणि रै फौलाद।
न आश न औलाद-बन रहे फौलाद।
जीवन को, जीवन, दान सा दे रखना।
गाय न बाछी-नींद आये आछी।

उनका तो ऐसा हाल है। समय पर सभी कुछ करके अब आनन्द से जीवन काट रहे हैं। उनको तो न किसी का देना, और न किसी से लेना, वाली बात है। मस्त मौज ही उनका जीवन है। जहां भी जाते हैं पराये अपने होकर आते हैं। उनका तो मुझसे जो पूछो तो ऐसी कहावत है कि—

न आश न औलाद-बन रहे फोलाद। ४५१

जुवैं कि डरै लै के-घागरी खोलणी।
जुईं के डर से क्या-लहंगा खोलना।

अकारण ही, कारण नहीं बनाना चाहिये।

तुम भी यार क्या हो? एक तमाशा। चूहे को डर से आज तीन दिन से इधर ही सो रहे हो। आश्चर्य है! अच्छा हुआ तुम भाग्य के धनी रहे कहीं लड़ाइ पर गये होते तो तुम्हारा क्या हाल होता? इतनी डर! तुमतो मारे डर के खाली मरे से जारहे हो, ऐसी भी कहावत क्या कर रहे हो कि—

जुईं के डर से क्या-लहंगा खोलना। ४५२

गौं में रूंलौं-मडुवै खूंलो।
गांव में ही रहूं-चाहे मडुवा भंखू।

अपना अपना दृष्टि विन्दु ठहरा।

आग लगाओ इस नौकरी को, मैं तौं मर जाऊं तो नौकरी न करूं। चाहे अपने गांव में भूखा ही मरूं। इतना अपमान बाप रे

बाप ! धरती में समा जाने का जो करता है जी ! मैं तो अब यहां एक पल को भी नहीं रहूंगा। चाहे मेरा ऐसा ही कहावत हो जाये कि— गाँव में ही रहूं-चाहे मडुवा भंखू। ४५३

खणनै खणनै माटो खाणि को-माटो लै नी रूंन।
खनते-खनते मिट्टी की खान में-भी मिट्टी नहीं रहती।
खर्च के आगे सभी स्वाहा हो जाता है।

इतना या ऐसा जो खर्चा है तो, बस समझ लो कुशल में मूसल पड़े ही ठहरे। आमदनी कुछ नहीं, खरचा देखो हाथी का ! माई-बाप की ही कमाई है भी तो, इतना और ऐसा अन्ट-सन्ट खर्चा मत करो। पछताओगे, समझ लो कहावत है कि—

खनते-खनते मिट्टी की खान में-मिट्टी भी नहीं रहती। ४५४

जैत करो दुःख-जीत पै सुख।
जिसने सहा दुःख-उसने पाया सुख।

सुख-दुःख की परवाह न कर कायरत रहना चाहिये।

खून पसीना एक कर रहे हो, भगवान ने चाहा तो मेहनत का फल चखोगे। घबराओ मत और न काम करने से जी ही चुराओ। लगे रहो, जुटे रहो वह भी तन मन से धुन लगन से, समझे ! कहावत है कि—

जिसने सहा दुःख-उसने पाया सुख। ४५५

भात पाकी बेर मांड़ हैगे--पाणि पी बेर गान है गो
भात पक कर मांड़ होगया-पानी पीकर घेघा हो गया।

एक बड़ी अजीब सी बात हो जाना।

तुम भी क्या हो। बातें करते हो कि, धरती और आकाश को एक करते हो। सच तुम्हारी बातें सुनकर ऐसा जी होता है कि

Scanned with CamScanner

सुनते रहूं। क्या-क्या और कहां-कहाँ के तुक्का मिलाते हो कि, दंग रह जाना पड़ता है। ऐसी बे पर की उड़ाते हो कि, परदार लूंडेर से हो जाते हैं। और ऐसी कहावत सी कर देतो हो कि-

भात पक कर मांड़ होगया-पानी पीकर घेघा हो गया। ४५६

ऐंचौ को पैंच-नाक के खेंच
ऐंचे का पैंचा-नाक क्या खैंचा।

ऐंचे का ऋण चुकाने में क्या नाक सिकोड़ना।
दुष्ट आदमी का सा ऋण—

लेन देन में नरमी ही बरतनी चाहिये।

तुमने मुझे कभी रुपये दिये तो मैंने भी तुम्हारा काम एक दफे छोड़ सौ दफे चलाया। और चलाऊंगा, पर तुम्हारा तो पारा जब भी देखो आकाश के तारों को ही छूआ सा रहता है। भाई साहब? समझ बूझ कर लेन देन होता है। ऐसे तुम्हारी तरह नाक भौं सिकोड़ कर नहीं, लेते भी हैं, देते भी हैं। दुनियां में और जीवन में यह व्यवहार चलते ही रहता है. पर तुम्हारी जैसी कहावत तो कोई भी नहीं करता है कि—

ऐंचे का पैंचा-नाक क्या खैंचा। ४५७

गौंहुंणि गल्या-शिकारि हुंणि मल्या।
गांव को गलियारा-शिकारी को फाखता।

[मल्या—फाखता] कुछ न कुछ तो इस जीवन में आवश्यकीय होता ही है।

थोड़ी और आगे करके घर बनाओ, नहीं तो पिछवाड़ा बहुत कम रह जायेगा और फिर कष्ठ उठाना पड़ेगा। इससे अच्छा है कि, अभी जो हाथ दो हाथ जगह आगे को और लेलो जिससे मकान में

भी आब आजायेगी और गालियारा भी बड़ा, काफी बड़ा निकल आयेगा कहो कैसी कही ? वैसे हमारे बड़ों ने एक कहावत भी कही है कि--

गांव को गलियारा-शिकारी को फाखता । ४५८

सिरानाक बैठणी-पयान ऐ गे ।
सिरहाने के बैठने वाले-पैतले आगये ।

बनी हुई बिगड़ जाना । काठे पर बैठने वाले-बाम पर आगये ।

अरे ! आज तुम कहां से आ टपके ? अच्छे तो हो । क्या कहूं भाई, क्या अच्छा हूं और क्या बुरा । जैसा भी हूं, हूं । यही ईश्वर का बड़ी कृपा है जब मैंने देखा कि, अब यहां मुझे कोई पूछने वाला नहीं तो, मैंने परदेश कर लिया, अब जहां भी हूं, प्रभु की दया से आनन्द से हूं । यहां तो मेरा हुलिया ही तङ्ग होगया था । और मेरी ऐसी कहावत सी हो गई थी कि--

सिरहाने के बैठने वाले-पैतले आगये । ४५९

धणियोंक दाण में-रै क दाण जोड़नेर ।
धनिये के दाने में-राई का दाना जोड़ने वाला ।

थूक लगा लगा कर पैसा जोड़ना ।

खल खाना-कम्बल ओढ़ना-माया का क्या जोड़ना ।

तुम उसके पास क्या गये ? वह तो मर जायेगा तो भी अपने बाप को एक लाल पैसा नहीं देगा । तुम तो तुम्हीं रहे । उसने तो सिर्फ पैसा जोड़ने ही के लिए जन्म लिया है । तुम क्या जानो उसे, उसकी तो ऐसी कहावत है कि--

धनिये के दाने में-राई का दाना जोड़ने वाला । ४६०

अधखड़ी विद्या–जियड़ी की काल।

अधखड़ी विद्या–जी का काल।

अधजल गगरी–छलकत जात।

वह जन, जिसे योजन–सौ योजन।

वह जहां भी गया, धक्के खाकर ही लौटा। जब हम कहते थे, मैट्रिक पास करले तब वह, गरम तवा सा हो जाता था, और अब चला है बाबू गिरी करने। इस जमाने में अच्छे अच्छे पढ़े–गुणों की पूछ नहीं, उसकी पूछ भला फिर किस तरह से हो। तभी तो हमारे अपढ़ बूढे कह कहावत कह गये हैं जो इस पर पूरी घट रही है कि,

अधखड़ी विद्या–जी का काल। ४६१

दूध चुसी खै राखौ–भात चुसी खेड़ि राखौ।

दूध चूस पी रक्खा है–भात चूस फेंक रक्खा है।

अमृत के से कुल्ले किये हों।

अरे यार! आज तुम उनकी ऐसी फटी हालत देख रहे हो, तब जो जी में आरहा है कह रहे हो। पर तुमने उनके सौभाग्य का चमकता सूर्य देखा ही नहीं! देखा होता तो तुम भी हमारी ही तरह चौंधियाये हुवे रहते। भाई तुमसे क्या कहें। कभी उनकी ऐसी कहावत थी कि—

दूध चूस पी रक्खा है–भात चूस फैंक रक्खा है। ४६२

गाड़ तरी–जांठी खेड़ी।

नदी पार की–लठिया बेकार।

बखत पड़े बांका–तो गधे से कहे काका।

स्वार्थ साधन से बढ़ कर और कोई दूसरा स्वार्थ नहीं।

बस! अब तुम्हारा काम बन गया, जो जी में आती है कह लो।

इस संसार का तो यही धन्धा है। इसमें तुम्हारा कुछ भी अपराध नहीं है, ऐसा होते चले आया है, तभी तो हमारे गाँव घर के बुढ़े यह कहावत कह गये हैं कि—

नदी पार की—लठिया बेकार सी । ४६३

सैंणी मलक्यूनी के—पाणी भलक्यूण के।

औरत फुसलाना क्या—पानी का बहाना क्या।

[भलक्यूण—उबालना] एक खेत से दूसरे खेत में पानी की नहर सी ले जाना। वह कार्य जो बड़ी सुगमता से हो सके।

भली चलाई आपकी, इसमें अचरज की भला क्या बात है! जब उसके मन में ही ऐसी समा गई तो, फिर अचरज ही क्या। फिर वह तो एक धूर्त है औरतों के फुसलाने बहकाने में तो वह सिद्ध हस्त सा है। ले उड़ा तो ले उड़ा, कहीं ले जाकर बेच खायगा और अपनी बखिया गरम करेगा। औरत की जात ही ऐसी है। तभी तो यह कहावत कही गई है कि—

औरत फुसलाना क्या—पानी का बहाना क्या। ४६४

सारी तौली के थोड़ी चानी—एक सितौ चानी।

सारी डेगची थोड़ी देखते हैं—एक ही सीत देखते हैं।

खत का मजमू भांप लेते हैं, लिफाफा देख कर।

थोड़ी सी में परख सी कर लेना।

तुम भी आये बड़े। देख लिया उसका हुलिया ही देख कर हम भांप गये थे कि, यह है कोई बड़ा बना बनारसी। पर जब तुमने उसके सारे करतब देख लिये तब तुमने भी अपने कान दोनों हाथों से पकड़े। पर हम तो उसकी उठ—बैठ से ही जान गये थे कि—किसी पक्के गुरु का मूड़ा हुआ है। ऐसे-वैसे का नहीं। पर हमने भी उसके आते ही ऐसी कहावत सी कर दी थी कि—

सारी डेगची थोड़ी ही देखते हैं—एक सीत देखते हैं। ४६५

Scanned with CamScanner

नानी खोरी-ठुली नी हुनी।
छोटा सिर-बड़ा नहीं होता।
बड़ाई-बड़े ही पाते हैं।

क्या किया जाये! बड़ा ही दुर्भाग्य है कि, जैसे ही मान-सम्मा की जगह पर पहुंचा था, वैसे ही बेचारा आँखों से लाचार होगय अब चाहता तो गांव घर के दस-बीस जनों का भला कर सकता था पर भाग्य किसी को कहां खाने देता है? तभी तो कहावत प्रसिद्ध है कि—

छोटा सिर-बड़ा नहीं होता। ४६६

बाधा वालो मरिजौ-बाधा को सादौ।
बाधा डालने वाला जो मर जाये-तो बाधा ही कौन लाये।
दुष्ट प्रकृति के मनुष्य से विधाता ही रक्षा करे।

मैंने तुससे उसी समय कह दिया था कि, वह अवश्य ही कोई विघ्न बाधा डालेगा, पर तुमने मेरा कहा सुन कर भी, अनसुनी सी की। अब मुंह ताक रहे हो। अजी! उस दुष्ट की प्रकृति ही ऐसी है कि, वह लोगों के कामों में हो न हो विघ्न ही डालता है। आप ठीक कहते हैं कि, मर भी नहीं जाता। पर यह कहावत झूठी जो हो जाती कि—

बाधा डालने वाला जो मर जाये-तो बाधा ही कौन लाये। ४६७

जुवा में जीत जै-फांस बराबर-हार जै बांस वराबर।
जुवे में जीत जो-फाँस बराबर-हार जो-बाँस बराबर।
सात बादशाही-एक नक्की में।

मैंने तुझसे तेरे पांव पड़ कर, कहा था कि, जुवा मत खेल मत खेल। पर तू तो धत्ती-लत्ती सा बन गया था। मैंने तुझसे कितना ही कहा, अच्छी तरह कहा, बुरी तर हकहा पर त क्यों

मानता मैंने तुझको मिसाल दी कि–'जुवा खेले दो जना–कै राजा कै भाट–भाट भिखारी भीख का–राजा बारम्बार। तू क्यों सुनता, तुझे तो धुन चढ़ी हुई थी, अब भी छोड़ दे, मान जा, अपने बड़ों की इस कहावत को सुन कि—

जुवे में जीत जो–फांस बराबर–हार जो–बांस बराबर। ४६८

दूध भात छोड़ दीण–दगड़ नी छोड़ण।

दूध भात छोड़ देना–संग न छोड़ना।

संग निभाना, संसार में बड़ा कठिन कार्य होता है।

तुम्हारा साथ है समझ कर तो मैं भी साथ साथ हो लिया, अब तुम मुझे जो इस आधे रास्ते में छोड़ रहे हो? वह भी अकेला क्या इसी लिये मैंने तुम्हारा साथ किया होगा कि, तुम मुझे यों छोड़ दोगे? ऐसा न करो। इधर का काम, फिर कभी कर लेना। इस समय तो उधर की कहो। जहाँ के लिये घर से साथ-साथ चले थे। तुम्हारे हाथ जोड़ता हूं पाँव पड़ता हूं ऐसा न करो। कहावत है कि,

दूध भात छोड़ देना–संग न छोड़ना। ४६९

नै आगै लागो–नै पाणी पुजो।

न आग ही लगे–न पानी ही पहुंचे।

बड़ी हिम्मत, हिकमत से भरा सा कार्य पूर्ण करना।

तुम तो न जाने ऐसे बेढब काम कहां से जुटा लाते हो कि, जिसे देख कर ही अकिल हिरन हो जाती है। ऐसे कामों में भला कोई अपना सिर खपाये भी तो कब तक! तुम जानो, तुम्हारा काम जाने। तुम तो ऐसी कहावत सी कर लाये हो कि—

न आग ही लगे–नपानी ही पहुंचे। ४७०॥

सार देखी झिल–झिल देखी सार।

सख्त देख कर ढीला–ढीला देख कर सख्त।

Scanned with CamScanner

जैसा अवसर देखा, वैसी करनी-करनी।

देख लिया, आप को खूब ठोक बजा कर देख लिया, जिस की मौत आई हुई हो वह तुम्हारा साथी बनेगा, अच्छा आदमी तो कभी थूकने को भी तुम्हारे साथ नहीं आमगा। तुम तो ऐसी कहावत करते हो कि—

सख्त देख कर ढ़ीला-ढ़ीला देख कर सख्त। ४७१

फुटा ख्वारा-ल्यों का धारा।

फूटा सिर-रक्त की धार।

ईश्वर करें, अभागा कोई भी न हो।

क्या यार, हम ही कौन से उस बेचारे के संगी साथी थे। भली कहीं, इस अभागे संसार मैं कौन किस का हुआ? फिर वह तो बेचारा अभागा ही जन्मा है और अभागा ही मरेगा भी, देखने को तो कैसे-कैसे अभागे देखे, पर इस जैसा तो ढूंढ़ कर भी नहीं मिलेगा। उस की तो ऐसी कहावत है कि—

फूटा सिर-रक्त की धार। ४७२

आदुक गौं चैत-आदुक गौं बगवाल।

आधे गांव होली-आधे गांव दिवाली।

आधे तीतर-आधे बटेर।

अकथ कहानी सी करना।

बड़े आये सरदार से बनकर, चार दिन शहर की रोटियां क्या खा आये, बस रोटियां सी लग गई। शहराती बू-बदबू यहां भी उठा लाये। यहां तो गांव है जो पंचों ने कह दिया सब ने सिर माथे आशीष सा धरा। यह आये यहां गांव घर में शहरों का सा टन्टा बखेड़ा खड़ा करने भले आदमी? भला कहो तो सही? तुम्हारे हाथ क्या लग जायेगा ऐसी कहावत करके कि—

आधे गांव होली-आधे गांव दिवाली॥ ४७३।

खसियौ को चेलो–उपत सहो–खपत नी सहो ।

खसिये का लड़का–उपत सहे–खपत न सहे ।

माल की गरमी बहुधा नहीं सही जा सकती है ।

किसान ही का लड़का ठहरा । कड़ी मेहनत से भी जी नहीं चुराया करता, पर बहुतायत से भाग सा खड़ा होता है । उसने मेहनत की, उस का फल उसे मिला, इस पर उस ने मन माना अनाज बखेर सा दिया, जिस को उस की देहरी से सूप भर मिलता था, उसे डलियों से दिया गया । बेचारे कि समझ ही में नहीं आय कि, इतने बड़े ढेर को कैसे सभाले, तभी तो कहावत है कि—

खसिये का लड़का–उपत सहे–खपत न सहे ॥ ४७४

या मरण थाती में–या मरण काशी में ।

या मरना थाती में–या मरना काशी में ।

बे मौत सा नहीं मरना चाहिये ।

अच्छा किया आप ने बहुत ही अच्छा किया । अगर कहीं इस बुढ़ापे में आप के साथ कहीं दौरे पर ही प्राण छोड़ देते तो, क्या होता ? न जाने मन में कैसी अभिलाषा रह जाती । अब अपनी थाती पर आ गये हैं । मर भी जायेगें तो तर जायेगें । क्यों कि कहावत है कि—

या मरना थाती में–या मरना काशी में । ४७५ ॥

और–औरना का मुलि–ज्याठ ज्यू ग्यार मुलि ।

और–औरो के मूल–जेठ जी मेरे मूल ।

घर ही में नया उतपात सा खड़ा हो जाना ।

क्या करूं' । कहां जाऊ किस से कहूं । जो कोई सुनेगा भी तो, हंसी ही करेगा । न जाने उन्हें क्या हो गया है कि, वे तो अपने घर की मर्यादा ही नहीं रखना चाह रहे हैं । तुम से क्या छिपाऊं । तुम से नहीं कहूं तो किससे कहूं क्यों कि तुम इस घर की मा हो ।

Scanned with CamScanner

न जाने जेठ जी को क्या भूत सवार हुआ है कि, कुछ न पूछो। उन्होने तो आज कल ऐसी कहावत सी कर रक्खी है कि--

और-औरो के मूल-जेठ जी मेरे मूल । ४७६ ॥

दातुल-आपुणी तरफ काटों ।

दराती-अपने ही तरफ काटती है ।

स्वार्थ, सभी को अंधा सा बनाये हुए रहता है ।

तुम अपनों की जैसी न करते तो, क्या मेरी जैसी करते ? यह तो दुनिया का लगा ही धधां है । इस में तुम्हारा कोई अपराध नहीं, और न मैं ही तुम्हें अपराधी समझता हूं । क्यों कि, कहावत है कि-

दंराती-अपने ही तरफ काटती है । ४७७ ॥

रवेंनी मरी-ज्वे मरी ।

रो नहीं मरा-जोरों के हाथ मरा ।

रोने से भी, महा दुःख का आ जाना ।

मरने को तो मर ही जाऊंगा, पर यह कहावत भी चरितार्थ सी कर ही जाऊंगा कि, वह बेचारा मरा तो सही दुःखो से रो-रोकर नहीं मरा वल्के औरत के हाथों से मरा वह भी अपनी ही । उसे भी औरत मिली तो ऐसी कि, जिसने ऐसी कहावत सी कर दी कि—

रो नहीं मरा-जोरो के हाथ मरा । ४७८ ॥

नौलिका नौ मटक-ख्वारन पटक ।

नवेली के नौ मटके-सिर पटके ।

जोबन सम्भारना-जेवर सम्भारने से भी बड़ा काम है ।

उसे जोबन क्या आया । पास पडोस छोड़ इधर उधर भी उस की रंगत और सुगंध व महक फैल गई । बस जिसे देखो, छैला सा बना चला आ रहा है । यह हाल देख कर उसे उस के घर वालों ने टोकना शुरू कर दिया वह भी वात-बात में, वस क्या था उस का

सारा मिजाज ठन्डा पड़ गया। तभी तो कहावत है कि—

नबेली के नौ मटके-सिर पटके। ४७९ ॥

भोल पोरू हुणी मर जाणो-आपुण परिया देखी जाणो

कल परसों को मर जाना-अपना पराया देख जाना।

यह जीवन जो कुछ न दिखलाये, थोड़ा है। "समय पड़े ही जानिये जो नर जैसो होय" क्या: चार दिन की बात है। जो जिसके मन में आता है कह ले। मेरा तो जीवन ही इस में है कि, सभी लोग अपने-अपने हौसले निकाल लें। मैं आप से सच कहता हूं कि, मेरी तो ऐसी कहावत है कि—

कल परसों को मर जाना-अपना-पराया देख जाना। ४८० ॥

अफुली को चेलो है-डफुली बजै।

अफुल्ली जाई-डफली बजाई।

अफुल्ली ने लड़का जाया-पानी पी-पी पेट फुलाया।

उन के लड़का हुआ है, सारा घर उन लोंगों की खुशी के मारे नाचने सा लगा है। जाने कहो, दुनिया में उनका ही पहिला लड़का हुआ है। ऐसा भी इतराना क्या हुआकि, मुहल्ले भर को सोना-सोना सा हो गया। इन लोगा ने तो ऐसी कहावत कर रक्खी है कि—

अफुल्ली जाई-डफली बजाई। ४८१ ॥

बरखा हंयू-को सभालौ ग्यूं।

हिम, बरषा पड़े- कौन सभाले गेहूं पड़े।

समय पर की सहायता से, मनुष्य का जीवन, जीवन सा हो जाता है।

अरे भाई ? इस समय जो हिम और बरसा बरष पड़े तो, समझ-लो गेहूं आकाश से जैसे बरस पड़े। विधाता की देन है, कब क्या दे दे, और कब क्या ले-ले, पर आसार तो भले ही दिखलाई पड़ रहे

है। कहीं ऐसी ही कहावत न हो जाये कि—

हिम-बरषा पड़े-कौन-सभाले गेहूं पड़े। ४८२ ॥

अड़ीठो भेट-दुख न ठेस।

अड़ीठा-भेट-दुःख न ठेस।

दूर के ढोल सुहावने।

दुःख हो पर दुःखदाई न हो।

बड़ा पाजी निकला, मैं तो उसे ऐसा नहीं समझता था, पर वह उस से भी बढ़ कर निकला। वह तो मैं था, जो उस की चपेटों से बच निकला, दूसरा होता तो न जाने कैसा होता। ईश्वर ही बचाये उस से। डीठ पड़ जाये तो उस पर पड़ जाये, पर भेट न हो! ऐसों ही के लिये तो हमारे बुजुर्गों ने कहावत कही है कि—

अड़ीठा-भेट-दुःख न ठेस। ४८३ ॥

थाती हरण-पिता मरण।

थाती हरण-पिता मरण।

अचानक ही दैबी मार पड़नी।

ओहो: उन बेचारों को भी कम आपत्ति थोड़ी पड़ रही है। चौतरफ से बिपत्ति पहाड़ की तरह टूट पड़ रही है। सम्भलें भी तो कैसे और ऐसे में भला कोई भी क्या समल सकता है। जब कि ऐसी कहावत सी हो गई हो कि—

थाती हरण-पिता मरण। ४८४ ॥

जो मरण है नी डरौ-उ सबै कुछ करौ।

जो मरने से न डरे-वह सभी कुछ करे।

अदम्य साहसी सा होना।

यहां मारा-मारा फिरता था, लड़ाई क्या लगी, इस के जो भाग्य खुल गये। लो। बातों ही बातों में सरदार हो कर लौटा है, अगर यहीं पड़ा रहता तो, आज तक कुत्ते की मौत मर गया होता, और

कोई पूछता तक नहीं। इस ने तो अपने साहस से पांसा ही पलट दिया, और ऐसा कहावत सी कर दी कि—

जो मरने से न डरे-वह सभी कुछ करे। ४८५॥

मोल लैणी-सुख सैंणी।

मोल लेनी-सुख देनी।

गांठ का पैसा खर्च करके सुख से रहना।

मैं तो जो भी चीज हो, मोल ले आता हूं। कौन मुफ्त में मुफ्त का मुंह ताकता रहे। भले ही उस से कुछ बचत सी हो जाती हो, पर होती है अन्त में दुःखदायनी सी ही। तभी तो हमारे बुढे यह कहावत कह गये हैं कि—

मोल लेनी-सुख देनी। ४८६॥

सकीनी सकिणी-बन्दूक तकिणी।

उठा न सकनी-बन्दूक तकनी।

निरा अभियान सा व्यक्त करना।

क्या तुम तो-क्रोध में पागल से हो जाते हो। यही सोचने की बात है। तुम बड़े आदमी हो तो क्या हुआ? अब तो स्वराज्य है, हर एक बड़ा छोटा, बड़ा है। राष्ट्र के नाते हम सभी उस की संन्तति हैं। और तुम हो कि, अभी भी अपने को कुछ समझते हो, जिस को जैसा मुख पर आया कह देते हो। तुम तो अभी भी ऐसी कहावत कर बैठते हो कि—

उठा न सकनी-बन्दूक तकनी। ४८७॥

राजा को कर-चौमास को जर।

राजा का कर-चौमास का ज्वर।

वह व्यक्ति जिन से किसी का भी पिन्ड न छूट सके।

वह तो बेचारा आज तीन दिन हो गये हैं, काम पर जाही नहीं

पा रहा है। बिछौने से उठना ही उस के लिये भारत हो रहा है, और अभी भी ज्वर उतरने का नाम तक नहीं ले रहा है। कल डाक्टर साहब कह रहे थे, एक सौ चार है। बेचारा कुत्ते की तरह हांफ ने लगा है। जिसे ने भी यह कहावत कही, ठीक ही कही कि—

राजा का कर–चौमास का ज्वर। ४८८॥

रीती भरियौ–टोटो नी भरियौ।

रीती भर जाये–टोंटा न भरपाये।

भाग्य ही बड़ा वलवान होता है।

आप तो अपने अदम्य उत्साह व परिश्रम से, वह बात करके दिखला दीं है कि, जो बड़े बड़ो ने सहायता पाने पर भी नही कर सकी। भाग्य के तो आप ने छक्के ही छुड़ा दिये। खोटे को खरा कर दिया। क्या बात है आप की, आप ने तो रीती भर दी, और ऐसी कहावत कर दी कि—

रीती भर जाये–टोटा न भरपाये। ४८९॥

बण सुडरैल उज्याड़ खै–घर सुडराक थोल थ्याचा।

वन सूअर ने खेत खाया–घर सूअर के थुथने कूटे।

जो भीं हाथ पड़े उसी पर क्रोध निकालना।

जिस ने आप का बिगाड़ कर बिगाड़ा, वह तो नौ दौ ग्यारह हो गया, अ र मैं अचानक में आप के हाथ पड़ बैठा, मेरा भाग्य' और आप है कि न कुछ समझत हैं न बूझते हैं। सरासर तड़ा तड़ मुझे ही धौल जमाते जा रहे हैं। मैंने आप का क्या बिगाड़ा? जो आप ऐसी कहावत कर रहे हैं कि—

बन सूवर ने खेत खाया–घर सूअर के थुथने कूटे।४९०

नान गोरू में ठुला गोरू–ठूल गोरू में बाग।

छोटी गाय में बड़ी गाय–बड़ी गाय में बाघ।

Scanned with CamScanner

नहले पर दहला–छोटी मछली में बड़ी मछली–बड़ी में जाल।

मुझे छोटा सा बच्चा समझ कर पीट ले गये। अपने बराबरी वाले पर हाथ चलाओ तो मैं भी जानू। किसी गुरू के पाले पड़ते तो, सारा नशा उतर जाता। बड़े बने फिर रहे हैं तीस मार खां। अभी कैसे–कैसे पड़े हुए हैं। तुम हो किस खेत की मूली? तुम को भी कभी ऐसी कहावत से पल्ला पड़ेगा तो, जानोगे कि –

छोंटी गाय में बड़ी गाय–बड़ी गाय में बाध। ४६१॥

ब्या करौ-ब्या करौ–सत्तर बला ख्वारा धरौ।

ब्याह करो-ब्याह करो–सत्तर बला सिर धरो।

बाप-बाप कहते थे–बड़े मजे से रहते थे

बाप-बाप कहलाने लगे–सौ-सौ जूती खाने लगे।

स्वतन्त्रता से अधिक प्रिय वस्तु इस संसार में दूसरी नहीं है। लो? आप की मन कैसी हो गई? ब्याह भी कर लिया और उस का स्वाद भी चख लिया। आप कहा उस समय क्यों मान बैठा जो अब पछता रहा हूं। इसे ही भाग्य कहते हैं। आनन्द से स्वच्छन्द विचरता था। इस फन्दे में जो फंसा। आप का कहना मानने से ऐसी कहावत सी हो गइ है कि—

ब्याह करो ब्याह करो–सत्तर बला सिर धरो। ४६२

जैका दगड़ी पारबती–उई महादेव।

जिसके संग पार्वती–वही महादेव।

कोई कागज हो–सरकारी मुहर लगी हो।

वह बड़ो के ही संग उठता बैठता है और आता जाता है क्यों कि, ऐसा व्यवहार करने से लोग उसे भी बड़ा आदमी समझें तब। मूर्ख लोग तो ऐसा ही समझते हैं, जैसा की वह अपने को समझता और होता भी कुछ वैसा ही है। क्यो कि दुनिया तो अन्धी होती

है जैसा देखती है वैसा ही समझती भी है। उसे तो ऐसी कहावत भाती है कि—

जिस के संग पार्वती—वही महादेव। ४९३ ॥

हुनर कर—भुको नी मर।
हुनर कर—भूखा न मर।

खाली न बैठ कुछ तो किया कर—कपड़े न सियें तो उधेड़ा तो कर।
काम जानने वाला कभी भी भूखों नही मर सकता है।

कुछ कर ले- कुछ सीख ले, मेरी सीख मान जा। नहीं तो भूखा रहेगा और भूखों मरेगा। जो कोई बिद्या नहीं जानता, उस की बडी दुर्गती होती है। मान जा, यां ही समय न बिता। अगर समय रहते कुछ न सीख पायेगा ता फिर पछतायेगा। तब तुझे यह कहावत याद आयेगी कि—

हुनर कर—भूखा न मर। ४९४ ॥

खेति—मल ली बेर—राजो वल ली बेर।
खेती मल लेकर—राजा-बल लेकर।

बल ही संसार का सार तत्व सा है।

मैंने तुझ से भली भांति समझा बुझाकर कह दिया था कि, जब तक तू इस खेत में खूब खाद नहीं डालेगा, तब तक यह खेत-खेत होते हुए भी ऊसर सा ही रहेगा। पर तू ने मेरी बात मानी ही नहीं। अब जब खेत खाद बिना सूखा सा ही रहा तो, दोनों हाथो से अपना सिर पीट रहा है! तू ने बुजुर्गों की कही कहावत गांठ ही नहीं बांधो कि—

खेती-मल ले कर—राजा-बल ले कर। ४९५ ॥

बाटो जै द्वी घड़ी को—लगन जै एक घड़ी को।
बाट जो दो घड़ी की—गग्न जो एक घड़ी का।

बड़ी भारीं असमता-बिषमता सी।

क्या गुरूजी महाराज? तुम भी राह भूले से ही हो। लग्न भी धरना था तो कुछ वहां तक आने जाने का समय भी देखना था। आप तो ऐसी कहावत सी कर लाये कि—

बाट जो दो घड़ी की-लग्न जो एक घड़ी का। ४९६॥

हुणी च्याला का-गणुवैं ओर।
होनहार लड़के के-टखने ही और।

लड़के के पांव पालने ही में झूलते हैं।

होने वाली बात के चिन्ह कुछ आगे से ही दिखलाई पड़ते हैं। यह लड़का थोड़ी ही है, भूत है भूत? वापरे बाप? जब अभी से यह ऐसा ऊधम मचा रखता है तो, बड़े हो जाने पर तो यह अपने बाप का भी बाप बन जायगा। ऐसे लड़के से तो निपूता ही रहना अच्छा तभी तो कहावत हैं कि—

होनहार लड़के के-टखने ही और। ४९७॥

म्यारा जसा माम कै-कै नै-सांकै माम एकै नै।
मेरे से मामू किसी के भी नहीं-सगा मामू एक भी नहीं।

ऐसा सम्बन्ध जो हंसी का सा कारण हो।

जान-पहिचान-आना-जाना और भाई बिरादरी व सम्बन्धी तो इन के इतने हैं कि, गिन कर भी किसी दूसरे के नहीं निकलेगें। पर काम जो लगें ऐसा एक भी नहीं। इस पर भी यह बेचारे प्रसन्न बदन रहते हैं। ऐसे हैं हमारे यह गोबर गनेश। मैं आप से सच कहता हूं कि-यह कहावत इन के ही लिये कही गई होगी कि—
मेरे से मामू किसी के भी नहीं-सगा मामू एक भी नहीं। ४९८॥

माटू माटू हिटौ-मरी रांड--छाली कै हिटों-चलू रांड।
हलके-हलके चलो तो--मरी रांड-तेज चलो तो-चंचल रांड।

Scanned with CamScanner

इस संसार में प्राणी को कैसे ही चैन नहीं। नखरे करो तो नखरे-वाज बाजार जा कर गृहस्थी करो तो बाजारू-वह तो नाम रखने में एक हीं हैं। उनके साथ कौन जायगा ? वह तो इधर उधर आने जाने में, बस आदमियों को नाम रखते जाते हैं। उन से कितना ही कहो जो मान गये। वह तो नाम रखने में न आगे पीछे सोचते हैं न उन्हें अपना पराया ही सूझता है। उन के साथ जो कहीं आने जाने का अवसर मिल जाय तो, वह ऐसी कहावत कर देते हैं कि—

हलके-हलके चलो तो-मरी रांड-तेज चलो तो-चंचल रांड। ४९९॥

कुकुराका च्याला हैई नी हैई-बराबर।

कुत्ते के लड़के हुए न हुए-बराबर।

मारे-मारे फिरने वाले आवारा लड़के से।

मेरे लड़के, लड़को जैसे होते तो, उन्हें भभी चाहते, पर वे तो निकम्मे खाली हाड़ मास के लोथड़े से हैं। उन्हे कोई मुंह लगाये भी तो क्यों लगाये ? क्या तुम ने भी कहने को-कह तो दिया पर मेरी हालत देख कर बात नहीं कही -बस मुझे इतना ही खटका हैं। में जानती हूं और अच्छी तरह जानती हूँ कि-मेरी तो कहावत ही ऐसी है कि—

कुत्ते के लड़के हुए न हुए-बराबर। ५००॥

एक तिलौ को गुदो-- सात भाइलैं वांटि खै।

एक तिल-सात भाइयों ने बांट खाया।

गुदो— दाना

मेल मिलाप से रहना ही, भाइयों की शोभा है।

यह थी मेरे कुमाऊ की संस्कृति और सभ्यता-श्री सम्पदा। बहुत कुछ तो आज भी है, परन्त गोरों की गोराशाही-नौकरशाही बना कर सारे कुमाऊँ की ही धी-श्री-स्त्री छीन सी ले गई ! इसी एक

Scanned with CamScanner

तिल में अभी भी कुमाऊँ के दीन-हीन जन विश्वास रखते हैं पर सरकार के पढ़ाये वकील बेचारे कहां चैन लेने देते हैं यह तो हमारी सरकार के जिम्मेवार कानूनी सलाह कार जो ठहरे। नहीं तो जिस प्रकार से तीन प में हमारी आर्य संस्कृति ठहरी हुई है यानि पहाड़-पानी पवन उसी भांति से कुमाऊ की सारी निधि इस एक तिल पर ठहरी हुई थी और है। यहाँ का तो परम धन कभी भगवान बुद्ध के बतलाये हुए इस एक अपरिवर्तनीय वाक्य में, धरोहर सा धरा हुआ था।

श्रम और शम। पर अब कहां। ५०१ ॥

मैं की गाली सही जैं-गोत्र गाल नी सही जानी।
मा की गाली सही जाये--गोत्र गाली नहीं सही जाये।

सामुहिक दुःख-सुख का ही कुछ मूल्य सा होता है।

अरे साहब ? मुझे जब तक गालियां दे रहा था मैं सुन रहा था और सुन कर भी यह समझ रहा था कि-बक रहा है। जब मेरा यार सारी बिरादरी ही को ले डूबा तो-मुझ से भी नहीं रहा गया और मैंने भी फिर कान पकड़ कर ऐसी कनपटी दी कि, सारी सिट्टी पिट्टी भूल गया। बच्चू को मालूम नहीं कि-कहावत है कि--

माकी गाली सही जाये-गोत्र गाली नहीं सही जाये। ५०२ ॥

एकेलो ढूंगौं-लुडकनै रौ।
अकेला पत्थर-लुढ़कता रहे।

इकली लकड़ी ना बन। बिच हरेके। —पंजाबी।
जंगल में अकेली लकड़ी भी बुरी होती है।
संघ शक्ति ही शक्ति सी होती है।

न जाने दिन भर कहां रहता है वह जाने और उसका परमात्मा मैं तो उसे जब भी देखती हूं बस अकेला, न किसी के यहाँ आता है

न किसी के यहां जाता है। पास पड़ोस के लड़के मिलजुल कर रहते हैं वह इनके साथ भी कभी नहीं दिखलाई देता है जो करता होगा जहां जाता होगा मेरे जाने को डोलता ही रहता है। उस की तो ऐसी कहावत है कि--

अकेला पत्थर-लुढ़कता रहे। ५०३

बाटा में की कुड़ी--कौतिक रौ जुड़ी।

बाट पर का घर-मेला जुड़ा रहे आठ पहर।

शान्ति तो कुछ हट कर ही प्राप्त होती है।

इस से मैंने कितनी ही बार बल्के बार-बार कह रक्खा है कि-तू किसी आने जाने वाले से मत उलझना। उलझेगा तो फिर सुलझना कठिन हो जायगा। पर न जाने इसे आज क्या चढ़ बैठी कि, बोल ही गया और बोलना था कि बस फूस में जैसी आग लग गई। न जाने कौन था वह। मेरी तो ऐसी कहावत है कि—

बाट पर का घर-मेला जुड़ा रहें आठ पहर। ५०४ ॥

बिगड़ी में भींयको--झाड़ लै दुश्मण हैं जा।

बिगड़ी पर धरती का झाड़ भी-दुश्मन हो जाता है।

कि तारिकी में साया भी-जुदा रहता है इंसा से।

पड़ी पर ही लात पड़ती है।

वही क्या! आज कल तो जिसे भी देखो, मुंह ही नहीं बोल देता हैं। मुंह लगाना तो दूर की बात हो गई है। ईश्वर करे? किसी की न बिगड़े। जो कल तक मेरी जूतियां उठाते थे। वही आजकल बिगड़े हुए बने बैठे हैं। क्या करू? हमारे बड़ों ने यह कहावत बहुत समझ स कही होगी कि—

बिगड़ी पर धरती का झाड़ भी दुश्मन हो जाता है। ५०५

देश खवे घोसींल--पहाड़ खवे जोशील ।
देश खोया घोसियों ने--पहाड़ खोया जोशीयों ने ।

जोशी-ब्राहमण-जो कभी राजाओं के मंत्री होते थे जो अग्रेजो को कल कत्ते से सीदे कुमाऊ पर ले आये ।

कुमांऊ पर जब रुहेलों ने आक्रमण किया था अ र प्रत्येक प्रसिद्ध मन्दिर की मूर्ति को बे शिलाखक्ड कर गये । तो नर मुन्डो की क्या गिनती ? पता नहीं उस समय यह जोशी कौम कहां छुपी पड़ी थी, पर अग्रेजों को इसी कौम का जोशी हरक देव कल कत्ते से यहाँ बुला लाया और सारा कुमाऊ उनके आधीन करवा किया, तब से अब तक यानि स्वराज्य हो जाने तक बेचारा कुमाऊ दांत ही कटक-टाता रहा । इस बड़े कार्य को करवादेने के बदले में अंग्रेजों से हरक देव जोशी ने यह शर्त करवा ली थी कि-उसके आने वाली पीढ़ी (वशं) में का एक डिप्टी कैलेक्टर बनाया जायगा अंग्रेजों ने उसके मरने के उपरान्त शर्त निभाई । परन्तु इस बीच में एक बार लड़की का लड़का डिप्टी कैलैक्टर बना दिया गया । भूल से कहिये या धोखे से । जब असली औलाद ने पढ़ गुण कर शर्तनांमा दिखलाया और डिप्टी कैलैक्टरी मांगी तो दानाये फिरंगी पर सारी भूल की धूल उड़ बैठी । और सारा कच्चा चिट्ठा खुल गया । उन्होंने इतना होंने पर भी उसे भी डिप्टीकैलैक्टरी का पद तो दे दिया पर आगे के लिये मये पेंशन के यह शर्त रद्द करार दे दी । इतने में ही अंग्रेज भारत छोड़ कर चले गये । श्री पूज्य बद्रीदत्त पाण्डे जी कुमाऊ केशरी ने भी कुमाऊ का इतिहास लिखते समय इतनी मोटी बात को भी नजर अन्दाज कर दिया । हो सकता है यह अन्दाज उन के भी अन्दाज में न आया हो, क्यों कि किताबी कीड़े की तरह उन्होंने अंग्रेजों के लिखे गजट एक-एक कर के छान मारे थे । पर शायद यह बात उनके हाथ न लगी हो शक है । हो सकता है, यह मेरा ही खाली

प्रलाप हो, पर गजट तो अभी भी हमारी काग्रेसी सरकार ने भी ज्यों के त्यों रख छोड़े हैं। आगे यह सरकार इस बारे में जो भी करे। पर अभी तक तो इस जन प्रिय सरकार ने भी मौरुसी कानून गोई जैसी की तैसी रख ही छोड़ी है तब से हमारे गांव घर में यह कहावत बन गई और प्रचलित सी भी हो गई कि—

देश खोया घोसियों ने—पहाड़ खोया जोशीयों ने।

सारे कुमाऊ को गुलामी की भाड़ में झोंक देने वालों को—समय ने अभी-अभी ही बतला सा दिया कि, राष्ट्र की स्वतन्त्रता का मोल -भाव करना कितना बड़ा अभिशाप ताप एंव पाप है। ५०६॥

अक्ती लाड़—अक्ति खाड़।

अति लाड़--अति खाड़।

अति सर्वत्र बरजियेत।

सांसारिक लाड़ प्यार अति चढ़ना तो जानता है उतार कर फिर चढ़ना नहीं जानता।

उस समय कोई क्या कह सकता। किसी को कुछ हिम्मत ही नहीं थी। और कौन जानता था कि, उन का इतना बड़ा चढ़ा लाड़-प्यार यों एक दिन धूल में मिल जायेगा। चाहे हम सभी ने कहने को कहा ही पर उस समय उन के लाड़-प्यार में कैसे खामी पड़ सकती थी। अब जब खाड़ पड़े तब उन्होंने जानी। और एक ऐसी कहावत सी खड़ी कर गये कि—

अति लाड़—अति खाड़। ५०७॥

अत्ति ऋण झरक नै--अत्ति जूं भणक नै।

मणक—बहुत अति ऋण झसका नहीं--अति जूई खुजलाहट नहीं।

दर्द का हद से गुजरना है दवा हो जाना।

सीमा का अतिक्रमण सा हो जाना।

Scanned with CamScanner

जब तक उन्हें दूसरों का कर्ज चुकाने की चिन्ता थी, तब तक बेचारों ने न पेट भर खाया न नींद भर सोये और जब देनदारी बढ़ते-बढ़ते इअनी बढ़ गई है कि, किसी तरकीब से भी नहीं चुकाई जा सकती है तो, बस उनके मन में निश्चिंतता ने डेरा ही डाल दिया है। बड़े मस्त मौला से घूमते फिरते हैं, जाने कहो किसी की पाई भी नहीं देनी है। उन की तो अब ऐसी कहावत सी हो गई है कि—

अति ऋण झसका नहीं—अति जूई खुजलाहट नहीं। ५०८॥

अकाला का नानतिन--लूणाका खाजा।
काल पड़े की संतति-- नोन के खाजा।

काल पड़ने पर सब धान बाईस पैंसेरी के से हो जाते हैं। तुम्हीं कहो! अब यह छोकरे जो ऐसे कुसमय में जनमें हैं क्या खाते हैं, अपना सिर, अजी, सौदा पीछे आता है घर में और सफाचट आगे ही हो जाता हैं। ऐसी खाँऊ-खाँऊ कांव-कांव बापरे बाप! सभी को जाने खाने की ही बीमारी सी हो गई हो। ईश्वर ही पत रखे, इन्होने तो ऐसी कहावत कर दी है कि—

काल पड़े की संतति—नोन के खाजा। ५०९॥

आपुण च्याला—मुनकितौले जसा भला।
अपने लड़के—भद मेढ़क से ही भले।

अपनी संतान मनुष्य को कैसी ही हो प्रिय ही लगती है। मुनकि तौल—जब मेढक के बच्चे पर एक गोल सिर और उस पर छोटी सी दुम हो।

क्या करू? महाराज! मारते-मारते उस की चमड़ी छिलगई है और इधर मेरे हाथ सूज गये हैं पर तौभी उसे सूझ नहीं आई। अब मैंने उस से कह दिया है-कर भाई-जो तेरे मन में आती है। क्या करूं

आखिर को संतान ही है। फिर माया मोह में पड़जाता हूं। और मुझे एक कहावत सी याद आ जाती है कि—

अपने लड़के--भद भेंढ़क से ही भले। ५१० ॥

अन खोरी अन-धन खोरी धन।

अन्न वाले के सिरअन्न-धन वाले के सिर धन।

सभी चीजे एक ही को सुलभ सी नहीं होती।

उन के तो दोनों लड़के बड़े भाग्यवान हैं। इस समय तो कोई दूसरा उन की बराबरी का नही दिखलाई पड़ता, आगे की राम जाने, एक धन से भरा है तो दूसरा अन्न से भरा हैं दोनों ही भर पूर। इन्होंने तो ऐसी कहावत सी कर रखी है कि—

अन्न वाले के सिर अन्न--धन वाले के सिर धन। ५११

कभै स्यूनी उनी-व्याका दिन लै उनी।

कभी मांग आई होती-व्याह के दिन भी आती।

वह बात जो होनी सी हो-पर न हो पाई हो।

क्या आज व्याह है कर के मांग बना रहे हो, पर यह भी जानते हो इस बे चारी ने कभी गरीबी के कारण सिर में आज तक तेल तक नहीं ड़ाला, मांग क्या सभारती अपना सिर? तुम लाख यन्त करो, पर मांग आने से रही। इस बेचारी का तो ऐसी कहावत है कि—

कभी मांग आई होती-व्याह के दिन भी आती। ५१२ ॥

मै कसीलै डैली हों-थौणन बिष के थोड़ा लैं?

मां कैसी ही डायन हो-स्थनो में बिष-थोडे ही लगाती है।

कुपत्रो जायते माता-न माता कुमाता भवेत।

मां-सा इस संसार में कोई दूसरा पदार्थ नहीं।

डैली-वह गुड़ जो जीभ को उमठे सा दे। विषाक्त सा।

कितनी छोटी अवस्था में इस का बाप इसे छोड़ कर भर गाया था, इसे क्या पता ! कैसे-कैसे दुःख झेल कर इस की मा ने इस को पाला पोसा और इतना बड़ा कर दिया कि, ये आज इस तरह उस की खबर ले रहा है। तुझे कुछ लाज आनी चाहिये। अगर वह बेचारी ऐसा जानती कि, तू बड़ा हो कर ऐसी कमाई करेगा तो, तुझे उसी दिन गड्ढे में गाड देती। पर वह तो बेचारी मा है, उस की तो बड़ी कहावत है कि—

मा कैसी ही डायन हो—स्थनों में बिष थोड़े ही लगाती है। ५१३ ॥

पंजावी-अपनी अमडी-लावे खलडी-फेर अमडी ही अमडी।

अपनी मां मारते-मारते चाहे खलडी ही क्यों न उधेड दे। फिर भी उस की ममता बनी ही रहती है।

कुकुर घानो लगे-दुनियैलें जाणी-मूसो घानो लगे दुलो पणसिणो।

कुत्ते के घण्टी लगाई दुनिया ने जानी-चूहे के घण्टी लगाई-बिल में घुसा।

सभीबातें सभी को शोभा सी नहीं देती हैं।

घानो-वह हल का फुल का घण्टा, जो मवेशियों के गले में बाधा जाता है, जिस से उन की गति भली भांति जानी जासके। इस घण्टे के कारण ही गाय भैंस के दंगलों को माबर के जंगलों व उबड़ खाबड़ मर्गों से पता लगाने में बड़ी सुगमता सी रहती है।

क्या करूं अब पछता कर क्या हो ! मैं पहिले ऐसा जानता कि, यह चाहे मैं कुछ भी करूं मेरा बाप ही बन कर आगे आयेगा तो-मैं अपने हाथ पावं समटे लेता। मैंने जो कुछ भी इस के लिया किया क्या कहूं परमेश्वर ही जानता है। परन्तु मेरा किया कराया तो सब मट्टी हो गया, है। मेरी तो आज ऐसा कहावत हो गई है कि—

कुत्ते के घण्टी लगाई दुनिया ने जानी-चूहे के घण्टी लगाई-बिल में घुसा। ५१४ ॥

कै थौणी प्यूँल-के घौणी मुनी दयूंल।

या थन ही पियूंगा-या घन के नीचे ही सिर दूंगा ।

निरर्थक ठान सी ठान लेना ।

मैंने तो उसे बहुत प्रकार से समझा दिया है कि । भले आदमी, ऐसा नहीं करना चाहिये । जैसा की तू कर रहा है । पर वह मानता ही नहीं, अपनी हठ पर डटा हुआ है । कहता है । जो और माइयों को बाट बटवारे में दिया है, वहीं मुझ को भी दो, नहीं तो अदालत पड़ी हुई है । क्या कहूं ! उसे ने तो ऐसी कहावत सी कर दी है कि—

या थन ही पियूंगा–या घन के नीचे ही सिर दूंगा । ५१५ ॥

कुटैलैलै बीन रचण–आपुण आन मान ।

कुदरा ने बेंट रचना–अपने आन मान ।

समानसा सा व्यवहार ही सुख कर होता है ।

जहां तक ठीक सम्बन्ध हो सकता है वहां तक तो ठीक ही है । फिर तुम जानों, अपनों से बड़ो के साथ तो सम्बन्ध करना एक बखेड़ा ही खड़ा करना है । हम लोग जो कुछ भी आप को भलाई चाहते हैं, इस छोटी सी कहावत में कह देते हैं कि—

कुदरा ने बेंट रचना–अपने आन मान । ५१६ ॥

पैलिक हाथी का दांत भ्यारै नी उना ।

भ्यार ऐ गया फिर भीतेर नी जाना ।

पहिले तो हाथी के दांत बाहर ही नहीं आते ।

बाहर आगये तो फिर भीतर नहीं जाते ।

पहिले तो मुर्दा बोले नहीं–बोले तो कफनही फाड़े ।

अपनी आन पर मर मिटना ।

बस जो कह दिया कह दिया–चाहे आप माने या न माने-आप की इच्छा रहीं । पर मैंने जो कुछ भी आप से कही है वह इस समय मेरे मुंह से निकल सी पड़ी है खैर अब जो कहना था कह चुका ।

Scanned with CamScanner

जो भी होगा भुगतूगां, मेरी तो ऐसी कहावत है कि—
पहले तो हाथी के दांत बाहर ही नहीं आते।
बाहर आ गये तो फिर भीतर नहीं जाते। ५१७ ॥

धरै की स्वाभा-चाख को टुको—मुखै की स्वाभा नाख को टुको।
घर की शोभा आगन का सिरा लेकर—मुख की शोभा नाक का सिरा लेकर।

चाख—मकान का पहिला खण्ड—जो सबसे पहिले दिखलाई दे।
शोभायमान बस्तु से ही—शोभा होती है।

मैंने इन से कह दिया था कि—तुम ठीक नहीं कर रहे हो। घर तो बना रहे हो पर आगंन का सिरा टूटा हुआ सा रख रहे हो। लोग देखेगें तो तुम्हारी हंसी किये बिना नहीं रहेगें। और अगर तुम ने आगंन ऐसा ही रक्खा तो फिर घर की शोभा ही नहीं रक्खी? इतना ही नहीं मैंने इन से बड़ों की कही एक कहावत भी कह दी थी कि—

घर की शोभा आगंन का सिराले कर।
मुख की शोभा नाक का सिरा लेकर। ५१८ ॥

कुकुर कौं गुसैं की देली बढ़ो—म्यारा गास बढो।
बिराऊ कों गुसैकां आंखा फुटना—मै दै दूध चोरी खानी ॥
कुत्ता कहे मालिक की देहरी बढ़े—मेरे ग्रास बढ़े।
बिल्ली कहे मालिक की आंखे फूटें—मैं दही दूध चोर खाती ॥

संसार अपने ही दृष्टि कोण से सदैव ठीक समझता है।

पहाड़ी कहावत है कि—कुत्ता कहता है कि मेरे मालिक की देहरी बढ़ें ता मेरे भी उतने ही ग्रास बढ़ेंगे जितनी की मालिक की आन औलाद बढ़ कर अपनी-अपनी देहरियाँ बढ़ायेगी। बिल्ली कहती है कि मेरे मालिक की आंखे फूट जाती तो—मैं दही दूध चोर खाती।

Scanned with CamScanner

डाला मुणी से जाणी–जाला मुणी नी सितण ।
टोकरे के नीचे सो जाना–जाले के नीचे न सोना ।

खतरे से बचकर ही रहना चाहिये ।

डाला–टोकरा–बड़ी टोकरी, जाला–ताक–छोटा सा रोशनदान ।

पहाड़ी घरो में छत के ऊपर से जाला बनाया जाता है । करीब-करीब छह इंच गोलाकार इस जाले से प्रकाश अन्दर आता है और धुआ बाहर जाता है । यह पत्थर को बीच में काट कर बनाया जाता है । मैंने तुझ से कह दिया था कि–जाले के निचे से न सोया कर पर तू क्यों मानता । बच गया बच्चू ! अपने भाग्य से बच गया-नहीं तो मरने में क्या देर थी । सांप तो आधे से अधिक इसके सिर पर रस्सी की तरह झूल रहा था–वह तो अच्छा हुआ इस की मां की नजर उस पर पड़ बैठी, नहीं तो हो गया था तमाशा खतम । तभी तो बड़ो ने शिक्षा की तरह कहावत कही है कि—

टोकरे के नीचे सो जाना–जाले के नीचे न सोना । ५२०

कुड़ी आगा लागो रवौ ऐ–मुसा चुचाण लागा हंसी ऐ ।

घर आग लगी तो रुलाई आई–चूहे चूँचहाट करने लगे तो हसाई आई।

लीलामय की लीला का पार पाना कठिन है ।

अरे भाई साहब आप से क्या कहूं ? इस ने तो मुझे रुला मारा है । इस की हरकतें-बरकतें आप से क्या कहूं-हंसी भी आती है और रोना भी आता है कि इसके लिये क्या करूं । औलाद है कि एक तूफान है । जिस घर से टुकाई नहीं आती वह घर ही नहीं । इस ने तो ऐसी कहावत सी कर दी है कि—

घर आग लगी तो रुलाई आई ।
चूहे चूँचहाट करने लगे तो हंसाई आई । ५२१ ॥

भली करी बुरी–नाखन छुरी
भली करके बुरी–नाक में छुरी ।

किसी बात का उलटा सा प्रभाव होना ।

Scanned with CamScanner

बड़ा चूतिया ही नहीं, बल्के चूतियम सलफेट ही निकला। मुझे तो उसे देखकर पैरों से सिर तक आग सी लग जाती है। मैंने जितनी भी भलाई की उसने उतनी ही बुराई की। ऐसा जमाना है कि जब हाथ में जूता हो तब ऐसो से बात करें। अजब चूतिये ने अजब कहावत सी कर दी कि—

भली कर के बुरी—नाक में छुरी। ५२२॥

औरनै की नजर और—घर जवैं की नजर बहड़।

औरों की नजर और—घर जवाई की नजर बछड़ा।

अपनी—अपनी नीयत की बरकत होती है।

तुम भी क्या ताक झांक में रहते हो, बन्दा सब जानता है। पर हो बड़े डोरे बाज ? ऐसा वैसा तो तुम्हारी छांह भी नहीं छू सकेगा। देखते उधर हो और डेला फेंकते इधर हो। खुश रहो तुम में भी बड़ी खूबियां हैं। औरों की नजर और पर तुम्हारी नजर और है। तुम्हारी तो ऐसी कहावत है कि—

औरों की नजर और—घरजवाई की नजर बछड़ा। ५२३॥

नयाल को चलण—रूख को ढ़लण।

बयार का चलना—रूख का ढ़लना।

निमित भूत सा होना।

मैं उधर को जा पड़ा, मैं क्या जानू वह मेरे ही जो सिर हो रहा था। बात कुछ भी नहीं। कल धक्के से सरकस में धक्म धक्का हो पड़ी, वह कहीं होगा पीछे से ओर उसका पाँव मुड़ गया। बस उसने भी मेरी टागे पकड़ ली। मैंने उसे कितता ही समझाया पर पर वह कब मानता। मैंने कहा यह तो ऐसी कहावत सी हो गई है कि—

बयार का चलना—रूख का ढ़लना। ५२४॥

आपुण घरको—कुकुरलै जाई न कों।

अपने घर से कुत्ता भी गवा तो-बुरा

Scanned with CamScanner

आदर का भाव बहुत बड़ा भाव होता है।

तीन-चार दिन रहे आज अभी की गाड़ी से अपने घर को चले गये। बड़े आनन्दी जीव थे। वह क्या गये सारे घर को सूना कर गये। उन के बिना इतनी ही देर में घर उड़ा-उड़ा सा लग रहा है। तभी तो कहावत है कि—

अपने घर से कुत्ता भी गया तो-बुरा। ५२५॥

मन हौंसिया-करम गड़िया।

मन हौंसिया-करम गड़िया।

हाँके दिल्ली-हगें चुल्ली, तनको नहीं लगोंटी-मन तम्बूको।

बड़ा अकरमी-जड़ता के गते में गिरा हुआ सा।

संसार दो-दो बिश्व युद्ध देख चुका है। इन की आंखे अब खुल रही हैं। उस पर भी इन्हे दिन ही में तारे दिखलाई दे रहे हैं। आदमी खलासी बन के भी सरदारी मार लांये, यह है कि, अभी तक भी कल्पना के ही जाल बुन रहे हैं। भाई: इन को तो ऐसी कहावत हो गई है कि—

मन हौंसिया-करम गड़िया। ५२६॥

उनेर किणी उन नं दिनेर-जानेर किणी जाण नी दिनेर।

न आने वाले को आने दें-न जाने वाले कों जाने दें।

बड़े क्रोधी और झगड़ालू स्वभाव के से।

इन्हें जाने क्या हो गया है कि, यह तो दूसरों को कुछ समझते ही नहीं, जो भी आये जाये बिना बात की बात निकाल कर उस से झगड़ बैठते हैं। इन्होंने तो हमारा सारा घर ही बदनामी का गोदाम सा बना दिया है। कुछ नपूछो? इन की तो ऐसी कहावत सी बन गई है कि—

न आने वाले को आने दें-न जाने वाले को जाने दें। ५२७॥

Scanned with CamScanner

ज्याठा ज्यू-कै किणी नी खाण दिनेर ।

जेठ जीं । किसी को भी न खाने देगें ।

घर में सब से बड़े होने का अंहकार सा ।

वह तो अपना सारा हिस्सा लेकर अब दूसरे भाइयां के हिस्सो में भी दांत गड़ा रहे हैं । फिर उनकी भलमनसाहत देखो-इतने पर भी औरो ही को बदनाम करते फ़िरते हैं । जाने कहो, आप सात पानी से धुले हुए हैं । मैंने तो कभी श्वसुर जी से कह दिया था कि वे तो ऐसी कहावत सी कर रहे हैं कि—

जेठ जी-किसी को भी न खाने देगें । ५२८ ॥

स्यारा बेचैगे-बाड़ान में-डाङ-डाङ ।

गाँव विक गये-सीमा की मेंडों को रोना ।

अकारथ ही परिश्रम कर के पसीना बहाना ।

ओडा-खेत का वह पत्थर जो अपने और दूसरे की खेत की सीमा बतलाता हो । सीमा पत्थर । भारत सरकार और चीन सरकार का सों बल्लमी पत्थर । इजराइल और जार्डन सरकार के पत्थरों के ढेर । आप का जो कुछ भी इस शहर में था, इंच-इंच भर विक गया, पर आप हैं कि, लोगों से अभी यही रोना रोते रहते हैं कि, यह दुकान वह यह फर्शयह चौक वह विरान जमीन और उसके सामने तक यह सब हमारा ही था जिस समय भी इन जगहों को देखता हूं आंखे भर आती हैं । जी हलका करने के लिए,देख जाता हूं और खूब रो लेता हूँ । क्या कहें । इन्होंने तो ऐसी कहावत सी कर रक्खी है कि—

गांव विक गये-सीमां की मेंडो को रोना । ५२९ ॥

दी जै नै तौ-अकरै के को ।

नहीं जो दिया तो-अकरा ही क्या ।

मुफ्त गर हाथ आये तो बुरा क्या है ।

चाहे आप उधार ही लाये-पर है यह बड़ा अकरा । उधार भी

ठहराता तो इतना अकराको उस ने भी नहीं लगाना चाहिये था। उसने तो बड़े कस कर दाम लगाये हैं। हाँ यह दूसरी बात है कि— आप दाम दमड़ी देती दफा कुछ कोर कसर निकलवालें? या आप ऐसी कहावत करदें कि—

नहीं जो दिया तो-अकरा ही क्या। ५३० ॥

एक छपक छां-नती सौ छपक लै कां।

एक छपाके में छांछ-नही तो सौ छपाकों में भी कहां।

बन गई बात तो बन गई। नहीं तो अकारथ गई।

विध गया सो मोती-रह गया सो पत्थर।

तुम ने तो लड झगड़कर बात बना ही ली थी, पर थाड़ी सी कसर रह गई तो रह ही गई। अब आप सिर नीचे पाँव ऊपर करें। तौभी इस बात का होना तो क्या मुझे तो लग्गा लगना ही कठिन सा जान पड़रहा हैं। चाहे आप माने या न मानें। इसी लिये तो हमारे बुढो ने कहावतों की-जोड़ तोड़ व मरोड़ की है कि—

एक छपाके में छांछ-नहीं तो सौं छपाकों में भी कहां। ५३१ ॥

ढ़ड़ू मारन सब नै लै देखो-दै खाई कैन नी देखो।

बिल्ला मारते सभी ने देखा-दही खाता किसी ने नही देखा।

अपना अनहित होते कोई दूसरा नहीं देखता।

तुम तो उसके बदले में लड़न आये हो? मेरा जो नुकसान उस ने किया उस का बदला देने थोडी आये हो। मेरे पास आने से पहिले तुम ने उस से यह पूछना चाहिये था कि-भाई! तुझे उन्होंने क्यों मारा? बात खुल जाती। बस? तुम तो ऐसा जो कहावत कर रहे हो कि—

बिल्ला मारते सभी नेदेखा-दही खाता-कसी ने नहीं देखा। ५३२ ॥

गुड़ वाले किणी गूड़-बद राड़ां किणी भूड़।

गुड़ वाले कों गुड़-बदमाश कों भूड़।

Scanned with CamScanner

अवसर से लाभाविन्त सा करना।

शक्कर वाले को शक्कर-मूजी को टक्कर।

भूड—जहाँ गड्ढा सा हो और बेकार का झाड़ झंकाड़ सा भी हो। जहाँ गिरने से अधिक चोट आये।

आप ने गहुत ठीक किया। ऐसो के लिये ऐसा ही करना चाहिये। आदमियों के बीच में आना और फिर आकर गाली बकना, यही इस का धन्धा हो गया था। आप ने जो कुछ भी किया बिल्कुल ठीक किया। बस अब मरम्मत हो गई। बच्चू चूँ तक नहीं करेगा। आप का भला हो, आप ने ऐसी कहावत सी कर दी कि—

गुड़ वाले को गुड़-बदमाश को भूड़। ५३३ ॥

डब्बल दी-अब्बल ली।

डब्बल दिया-अब्बल लिया।

खरा खेल फरोखाबादी।

जब पैसा पास हो तो क्यों कोई झोंझट ले।

मैं तो बाजार का कभी एक पैसा भी देना हुआ तो, मौत बराबर समझता हूं। फिर बात यह है कि, उधार लो एक के दस दो। इस से तो अच्छा है कि, ऐसी कहावत सी को जाय कि—

डब्बल दिया- अब्बल लिया। ५३४ ॥

उनन पीड़ भई-आपू किणी भै-आपू किणी पीड़ भई-आपू किणी मैं।

उनको पीड़ा पहुंची-अपने ही को-अपने को पीड़ा पहुंची-अपने ही को।

मित्र के दुख रज मेरु समान।

अत्यन्त आत्मिक सा।

मैं तो उस का दुःख सुन कर ही दुःखी सी हो जाती हूं. चाहें वह न मेरे यहां आता है न जाता है। फिर भी अपना ही ठहरा, उस का अनहित इन कानो से सुन कर चाहें मैं अपना जी कितना ही कड़ा

क्यों न करूं पर कलेजा पसीज ही जाता है। तभी तो हमारे गांव के सयाने यह कहावत कह गये हैं कि—

उनको पीड़ा पहुंची–अपने ही को।

अपने को पीड़ा पहुंची–अपने ही को। ५३५ ॥

दिई दैज नी भै–मांगी दहेज के हो।

दिया दहेज न हुआ–माँगा दहेज क्या हो।

विना मांगे मोती मिले–मांगे मिले न भीख ?

मांगना। मृत्यु का सा आमना–सामन है ?

मेरे ब्याह में उन लोगो ने वहुत सा दिया–इतना दिया कि, शायद पहिले ठहराने से भी इतना माल भत्ता मिलता या नहीं मुझे तो शक हैं। अरी ! जब उनका इतना दिया हुआ न ठहरा तो अब तू ही बतला ! उन से माँग कर क्या हो ? मेरी तो ऐसी कहावत सी हो गई है कि—

दिया दहेज न हुआ–मांगा दहेज क्या हो। ५३६ ॥

बबाका यां पाको–इजाका यां पाको–आपुण यां नी पाको–रै-रै थाको।

बाप के यहाँ पका–मां के यहाँ पका–अपने यहां न पका-रह-रह कर थका।

अलग रहने पर अपने में ही अधिक भरोसा करना चाहिये। क्या ! खाया न खाया बराबर ही समझिये, होंटल का खाना भी भला कोई खानों में गिना जाता है ? भाई असल में बात यह है कि, मैं जब से अपने समन्वित परिवार से अपनी ना समझी के कारण से अलग होकर रहने लगा हूं तभी से मेरी यह बुरी गत हो गई है। उस समय तो मिले जुले चौके में जो कुछ भी पका अच्छा या बुरा रुचिकर सा लगता था। पर अब तो यह हाल हैं कि ग्रास नीचे को छोड़ ऊपर को जो आता है। बड़ा दुःखी सा हूं। अपने ही हाथो अपनी ऐसी कहावत कर बैठा हूँ कि—

बाप के यहां पका–मा के यहाँ पका।

Scanned with CamScanner

अपने यहां न पका-रह-रह कर थका । ५३७ ॥

मरणी गे अगास--यां खाली पकास ।

मरने वाला गया आकाश-यहां खाली पकास ।

पकांस-वृथा आड़म्बर ।

प्राणी की सेवा मरने से पहिले करनी चाहिये ।

यह लाओ वह लाओ यह रक्खो वह रक्खो आज इग्यारह दिन से बस यही हाल रोजगार कर रहा हूं, इधर उधर दौड़ते-दौड़ते टंगड़ी दुखने सी लगी हैं । पर क्या करूं ! उनके तो पूज्य पिता जी मर रहे हैं । मुझे अब यह मार रहे हैं । जब तक सिर में पिता जी थे कभी उन की बात तक न पूछी-अब परलोक बासी बना रहे हैं और ऐसी कहावत बना रहे हैं कि—

मरने वाला गया आकाश-यहाँ खाली पकास । ५३८ ॥

मरी मड़-उठी जगड़ौ-गौंवाले निभूछ ।

मुर्दा और गांव में उठा झगड़ा-गांव वाले ही निभा सकते हैं ।

जो हो-अन्त को अपने ही काम आते हैं ।

जब तुम अपने घर के सयाने हो तब तुम से हाथ जोड़ कर बिनय कर रहे हैं कि, हमारा यह झगड़ा जैसे भी हो तुम निपटा दो । हम सभी भाई जो कुछ आप बांट बटवारा हमारा कर दो गे हमें मान्य होगा । हम सब आप के सामने शपथ पूर्वक कहते हैं । कोई दूसरा तुम्हारे सिवा हमारा झगड़ा नहीं निपटा सकता है । क्यो कि, कहावत है कि—

मुदा और गाव में उठा झगड़ा ।

गांव वाले ही निभा सकते हैं । ५३९ ॥

बबा माँगी खाणे मरौ-चेलो कौ मेरो ब्या करौ ।

बाप ! मांग खाते मरे-लड़का कहे मेरा ब्याह करे ।

धर में नही नोन की डली-बेटा मांगे घी खिचड़ी ।

असम्भव को अज्ञानबश सम्भव सा समझना।

अरे उसे कौन समझादे ! वह तो बड़ा बांका बना फिर रहा है। उसे तो सावन के अन्धे की तरह हरा ही हरा सूझ रहा है। बतलाइये, वह बेचारी अकेले जाने कैसे इस का और अपना पेट पाल रही है। उस पर आप सिर हैं, उसके कि वह इन का ब्याह रचा दें। यह बेतुकी बात सुनकर वह बेचारी रुआसी होकर किसी पड़ोसन से कह रही थी कि, वह कपूत ऐसी कहावत सी कर रहा है कि—

बाप ! मांग खाते मरे—लड़का कहे मेरा ब्याह करे। ५४० ॥

छां पी बेर—तीस नी जानी।

छांछ पीकर—प्यास नहीं जाती।

चाटे हूँ कहिं ओसके —कैसे प्यास बुझात।

अस्वाभाविक वस्तु कभी भी स्वाभाविक नहीं हो सकती हैं।

आप आपस ही में बैर बिरोध बढ़ा रहे हैं, बड़ा कुकरम सा कर रहे हैं, मान जाइये ! रारन बढाइये। नहीं तो पीछे पछताना पड़ेगा। क्या समझ बैठे हो ? आपस का बैर आदमी का ले डूबता है। दूसरों के बढ़ावे में आकर अनुचित बात मत करो। क्रोध पियो, और समझ लों पानी से ही प्यास जांती है। कहावत है कि—

छांछ पीकर—प्यास नहीं जाती। ५४१ ॥

घाघरी दिनेर जै मर जो—जोड़ दिनेर जै जिरौ।

लहंगा देने वाला जो मर जाये—जोड़ देने वाला जो जीता रहे।

जोड़—कपड़े का वह टुमड़ा जो लहंगे के कपड़े को कमर के कपड़े के भाग से जोड़ कर सिया जाता है।

खिलाये का नाम नहीं—रुलाये का नाम।

असमझ की समझ में—समझ नहीं समाती है।

तुम तो जान बूझ कर उलटी गंगा सी बहा रहे हो। जो तुम्हारे और तुम्हारे पिता जी के मरने तक काम आये-उन्हे तुम दुतकारने

फटकारने लगे हो। और उन के गले मिल रहे हो, जो कल तक तुम्हारा गला काटने को तयार हो रहे थे। अब भी समझ लो जान बूझ कर अपने पैर में आप ही कुल्हाड़ी मत मारो, तुम तो ऐसी कहावत सी कर रहे हो कि—

लंहगा देने वाला जो मर जाये।

जोड़ देने वाला जो जीता रहे। ५४२ ॥

गांठ है दी दिणो भलो, जमानत हुण नको।

गांठ से दे देना भला-जामिन होना बुरा।

अपने को आगे के लिये एक भयावह स्थिति में जैसा रख छोड़ना।

लो! मैं न कहता था कि, ऐसे भूल भुलईये यो हेरफेर में मत पड़ो। पर तुम कहां मानने वाले थे। अब अच्छा हुआ जामिन होने का मजा चक्खा। उस समय तो तुम बड़ी साख-धाक वाले बने फिर रहे थे। भला मेरी क्या सुनते। अब जो रूपया भये खरचे के भरना पड़ा तो समझो जामिन होना क्या बला है। तभी तो हमारे गांव सयाने यह सयानी कहावत कह गये हैं कि—

गाँठ से दे देना भला-जामिन होना बुरा। ५४३ ॥

लाजाका मुदरा-भैर खोलण-नै भितैर खोलण।

लाजा का मुदरा-भैर खोलणा-नै भीतरै खोलणा।

लाज के मुदरे-न बाहर खोलने न भीतर खोलने।

अति लज्जा जनक सी बात हो जानी।

कहूं तो मां मरे न कहूं तो बाप कुत्ता खाय।

अजी! बेटा क्या हुआ मेरा बाप हुआ कहो? ऐसा ऊधम मचा रक्खा है कि, मेरा बाप याद आ गया है। अरे? जैसी- बातें वह कर रहा है और कर चुका है- उस की जगह पर अगर कोई दूसरा होता तो गले में फासी लगा लेता पर उस निर्लज्ज को लाज कहाँ? उस ने तो मेरे लिये ऐसी कहावत कर दी है कि—

Scanned with CamScanner

लाज के मुदरे–न बाहर खोलने–न भीतर खोलने । ५४४ ॥

दातुल ज्योड़ भल मैं बणा जाणा लागों-घर कुड़ी भली भैं-घर उण लागों ।

दराती रस्सी अच्छी तों-बन जाने को जी करे ।

घर कुनबा अच्छा हुआ घर आने को जी करे ।

स्थिति के अनुकूल ही मनुष्य की परिस्थिति हुआ करती है । क्या ? इस घर को तो जी चाहता है कि,बर्रे की छत्ते की तरह जला दूं । जहां न कोई चाह और न कोई राह । इन के लिये मर भी जाओ तो कोई फूँक देने वाला नहीं, ऐसा निरस-असार कुढंगा कुनबा शायद ही कहीं गांव भर में हो । तब-अब तुम्ही कहो जी लगे भी तो क्यों कर । इन लोगों ने तो मेरी ऐसी कहावत सी कर दी है कि—

दराती रस्सी अच्छी तो बन-जाने को जी करे ।

घर कनवा अच्छा हुआ-घर आने को जी करे । ५४५ ॥

लिखाई-जोखाई राजा दिवानों कसी-खवै पिवै गुणी-बानरनै की जसी ।

ऐपण-लिखाई-राजा दिवानों की जैसी ।

खिलाई-पिलाई- लंगूर बन्दरों की जैसी ।

ऊंची दुकान-फीका पकवान ।

निर्धनों का त्योहारों पर खाली टीमटाम सा करना ।

न घर में लकड़ी न नोन तेल, त्योहार क्या आते है हम निर्धनों का कच्चा चिट्ठा सा कहने आते हैं । इनका आना खुशी का आना तो कहां और उदासी का आना सा हो जाता है । बहिन ! तुम से क्या कहूं । अपने घर की हालत तो ऐसी कहावत सी हो जाती है कि—

ऐपण लिखाई-राज-दिवानों की जैसी ।

खिलाई-पिलाई लंगूर-बन्दरों की जैसी । ५४६ ॥

झूठी उँ बुलानेर नी भै साँची उँ कुनेर नी भै ।

झूठ वे बोलने वाले वहीं ठहरे–सच वे कहने वाले नहीं ठहरे ।

Scanned with CamScanner

अश्वस्थामा हतो-नरोबा की कुंजरोबा।

बड़ी लोग लपेट से अपनी बात कहना।

क्या? भली कहीं। उनकी कहीं क्या सच क्या झूठ। सच कहते हैं तो सच-झूठ कहते हैं तो झूठ, जिसके देव विरुद्ध हो रहा होगा वह समझेगा उनका कहा। तुम हम-नहीं, वे तो कहते कुछ हैं करते कुछ हैं। उनकी तो एक अजीब सी कहावत है कि—

झूठ वे बोलने वाले नहीं ठहरे।

सच वे कहने वाले नहीं ठहरे। ५४७॥

मनुष्य ने अवसर देख कर ही आचरण करना चाहिये।

हाकिम का अघिल बट-घ्वाड़ा का पछिन बट, को रौल?

हाकिम के आगे से-घोड़े के पीछे से, कौन रहेगा?

इस ने तो नौकरी को घर की सी बात समझ रक्खा था। घर तो घर ही ठहरा पर पराई तावेदारी में तो कान खरगोश की तरह खड़े चाहिये। यह क्या जाने इन बातों को थोड़ी ही में नौकरी से हाथ धो लाया। आप ही कहिये? इसे क्या पड़ी थी जो अपने हाकिम के मुंह लगा। आया बड़ी नौकरी करने वाला, गधा कहीं का। अरे तूने यह कहावत नहीं सुन रक्खी थी कि—

हाकिम के आगे से-घोड़े के पीछे से, कौन रहेगा। ५४८॥

पौण पार मन होतौ-चूलापार भिनेर हों।

पाहुने पर मन हो तो, चूल्हे पर आग भी हो।

मान न मान-मैं तेरा मेहमान।

अटपटी सी बात का सहसा सामने से आ जाना।

बस? इस के जो मन नहीं आई तो फिर कोई लाख बुझ करे-पर यह अपने हठ से टस से मस होने से रही। मैंने कितनी ही बार जवाब भिजवाया कि-मेहमान आया हुआ है और भी कुछ नहीं तो एक घूंट चाय पी जायगाँ पर इस ने सुनी की अनसुनी सी ही की

और बहाना बनाया कि-मेरे सिर में दर्द है। क्या कहूं ? इस ने तो ऐसी कहावत कर दी कि—

पाहुने पर मन हो ते.-चूल्हे पर आग भी हा। ५४९ ॥

घूनी घूनी दीबेर लागी रे।
सिर और घुटने टेक-लगे रहे।
खून-पसीना एक कर दिया।

अकपट सा व्यहार करना।

वह बेचारा तो बड़ा सीधा और सच्चा बड़ा स्वामि भक्त सा आदमी था। मर गया तो ईश्वर उसे स्वर्ग ही देगा। भाई ! सच बात तो यह है कि, यह कहावत ऐसों ही के लिये कही गई होगी कि—

सिर और घुटने टेक-लगे रहे। ५५०॥

गला-गला तक लै आटी दिछा-तौ नै नीकौ।
गले-गले तक भी भर जांय तो-नहीं-नहीं कहेंगे।

मुफ्त के खवईया- मैं और मेरे भईया।
जिस का लेतम-खाक नदेतम-चखतम-माल दो वखतम ॥
पेट से भर जांये तो भर जांये पर नीयत से न भरें।

अरे महाराज आप भी किस की बात लाये हैं। वह तो पशु है पशु, बड़ा रूखा-सूखा खाली गले पड़ा सा। मैं सच कहता हूं आप उसे कितना ही दें लें उसे गुण लगने से रहा। इतने पर भी खाऊ ऐसी कि-गले-गले तक भी अट जाय तो नहीं नहीं कहेगा। एक रोग समझो उसे पूरा रोग, सच पूछते हो तो यह कहावत ऐसो ही के लिये कही गई है कि—

गले-गले तक भी भर जांय तो-नहीं-नहीं कहेगें। ५५१॥

Scanned with CamScanner

बाजो जाणी मैंने जै खणी खां।
बंजर जाने मैंने ही जो खन खाया।

पहाड़ पर बंजर भूमि के लिये बहुत झगड़े होते हैं, तब यह कहावत बनी है।

नाहक ही में किसी को अपने आखों पर रख रखना।

आप तो न जाने अपनेको क्या समझ बैठे हैं? ईश्वर ही जाने मुझ गरीब के सिर हुए से फिरते हैं। हाथ जोड़ कर आप से पूछता हूं कि मैंने आपका क्या खाया-बिगाया है? जो आप इस बुरी तरह से मेरे पीछे हाथ धोकर पड़े हुए हैं। आप तो मुफ्त ही में ऐसी कहावत सी कर रहे हैं कि।

बंजर जाने मैंने ही जो खन खाया। ५५२॥

भल मैं बाघ-बाटा बाटें हिटगे।
भला हुआ-बाघ बाट ही बाट चला गया।

अकारण ही आई हुई बिपत्ति का सहसा टल जाना।

यह कोई घटना थोड़ी ही हुई बल्के दुर्घटना हुई। प्राणों पर बन आई थी। किसे मालूम था। वह तो बेचारे धूप सेकने बैठे हुए थे पर यकायक छत गिर पड़ी और वह बाल बाल बच गये। प्रभु ने उन पर बड़ी कृपा की नहीं तो मर ही गये होते। क्या देर थी। इस समय तो ऐसी कहावत सी हो गई कि—

भला हुआ-बाघ-बाट ही बाट चला गया। ५५३॥

बाग झन जौ भू खौ-बाकरी को झन जौ जी।
बाघ न जाये मूखा-बकरी का न जाये जी।

सांप मरे न लाठी टूटे और मतलब बरिआया हिंग लगे न फिटकरी रंग चोखा आय।

ढुल मुल सा सिद्धान्त पल्ले पास गांठ देकर बांध रखना,

तुम भी कुछ नहीं बहुत छोटे मन के आदमी हो। जो कुछ करना है साहस बाँध कर करो।

Scanned with CamScanner

ऐसी भी कहाबत क्या करनी कि।
बाघ न जाये भूखा-बकरी का न जाये जी। ५५४ ॥

घोड़ो लो—नै थोरी हो नै थोरे हो।
घोड़ा ले न कटिया हो न कटरा।

ऐसे कार्यमें हाथ पड़ बैठना जिसका परिणाम कुछ भी न निकले।

आप भी बनने को तो बहुत बड़े आदमी बने फिरते हैं—पर समझ को शायद जेब में रख कर ही चलते हैं! नहीं तो आप सा हवाबाज आदमी क्यों ऐसा बेढंगा बे डौल सौदा कर लाता। आप ही कहें? यह भी कोई सौदा ठहरा न जिसकी दुम न सिंग आप तो सर्व गुण सम्पन्न होते हुए भी ऐसी कहावत कर लाये कि।

घोड़ा लें—न कटिया हो न कटरा। ५५५ ॥

बाट को बाघ-भूटी साग को जाणो
बाट का बाघ-भुना साग कौन जाने।
कुटी दवाई, घुटा जोगी कौन जाने।
अघटित घटनाओं को कौन देख पाता है

सुना है। उस राह में बाघ लगा हुआ है जो बटोहियों को समय असमय पकड़ कर खा जाता है। और मैंने जाना उसी राह से है क्या करूं चलने में ही प्राण से सूख रहे हैं। अजी! जाओ जी। वह तो पारसाल की बात थी। अब तो सभी कोई धड़ाधड़ उसी मार्ग से मार्ग पकड़े रहे हैं। फिर बाघ वहां बैठा ही थोड़ी होगा न जाने कहां आड़ ले रहा होगा। जाओ भी कहावत है कि—

बाट का बाघ भुना-साग कौन जाने। ५५६

जां आपुणीयांट-तां खणियांट।
जहां अपना पनसा वहां खन खाने को मन सा।
बहुत अपना पन अपने पन को खटाई में डाल देता है।

Scanned with CamScanner

मेरे मकान लेने का सबसे बुरा अगर किसी को लगा तो उन्हें ही क्योंकि वे सगे सम्बिन्ध खास अपने ही से बने हुए थे तब इसे कहते हैं कलयुग–जिन्हे सबसे अधिक प्रसन्नता होनी चाहिये थी। उन्हें मेरे मकान लेने पर बुखार चढ़ आया। तभी तो हमारे गाव के बड़े बूढ़े यह कहावत कह गये हैं कि।

जहां अपना पन सा–वहां खन खाने को मन सा। ५५७

दस बीस मैला का लै कुकुर भूखा भया बाटो भवरी नै छन

दस बीस मील तक के कुत्ते भूखे जो हुए तो बाट भूलते ही हैं।

भूख प्राणी को बड़ी बिपन्न में दशा में लाकर रख देती है।

अरे भाई! जो जी में आती है कह लो क्योंकि उससे अभी तक पाला पड़ा ही नहीं। जब उसका सामना पड़ेगा तो सारी तिगड़म भूल जाओगे। दो दिन के ही भूख में आंखें भितर को धँस जायेगी–तब समझोगे भूख क्या है। अभी तो मौज से खा पी रहे हो–तब इतरा से रहे हो। तुम हो क्या चीज! अच्छे–अच्छे भूख से पछाड़ खा जाते हैं स्वामी भक्त होते हुए भी शायद तुमने एक गाँव घर की कहावत नहीं सुनी कि।

दस–बीस मील तक के कुत्ते–भूखे जो हुए तो बाट भूलते ही हैं।५५८

चोर कों नाक तली कें जै ठाड़ो भै कैं पड़ौ मली कै ठाड़ो भै।

चोर की नाक नीचे को जो खड़ी–कह जो पड़े तो ऊपर को खड़ी

चोर की दाड़ी में तिनका।

अपराधी मनुष्य अत्यन्त सभति सा और सकपकाया सा रहता हैं।

तुझे क्यों बुरा लग रहा है? जब तू वहां उसके संग था ही नहीं तो वृथा क्यो मेरे कहने से तुझे उबाल सा आ रहा है? इससे साफ मालूम होता है कि–तू उसके साथ था और अवश्य था।

चाहे तू कितना ही कह क्योंकि कहावत है कि।

चोर की नाक नीचे को जो खड़ी–कह जो पडे तो ऊपर को खड़ी।५५९

Scanned with CamScanner

पालनी नानतिन-पालनी गोरू बाछा--भैर को पुजाल ।

पालने योग्य बच्चे पालने योग्य गाय बछी-बाहर कौन पहुंचाये । बाढ़ै पूत पिता के घर में ।

अशोचनीय सी बात कभी भी शोचनीय सी नहीं हुआ करती है । तुम कहीं भी क्यों न जाओ पर इन नन्ने मुन्ने को दूसरों के भरोसे पर मत छोड़ो । या तो इन्हें भी साथ साथ ले जाओ या इनके सयाने होने तक तुम अपनी बद्री नारायण की यात्रा स्थगित कर दो । नहीं तो जन्म भर हाथ मल कर पछताओगे । और मेरी इस कही हुई कहावत को सदा याद करते रहोगे कि—

पालने योग्य बच्चे पालने योग्य गाय बछी-बाहर कौन पहुंचाये ।

॥ ५६० ॥

के खानू है जौ-को खां झन हो ।
क्या खांये हो जाये-कौन खाये न हो ।
रावण की सी दशा को प्राप्त न हो ।

अरे इतनी बुरी तरह मत झिड़का खाने दे । जब है तो क्यों मना करती है । जब भगवान ने दे रखा है तो खायेंगे भी फैकेंगे भी न होता तो क्या खाते क्या फैंकते ? सब इन्हीं के लिये तो हम तुम दुःख सुख उठा रहे हैं । यह न होते तो किस का खाना पीना किसका फैंकना और लुटाना, तुम्हीं कहो ? सब इनका ही है जो भी करें करने दो । क्योंकि हमारे गांव के बुढ़े बड़ी बढ़िया सी कहावत कह गये हैं कि—

क्या खाये हो जाये-कौन खाये न हो । ॥ ५६१ ॥

हांड़ी फुटी कौवान को भाग ।
हांड़ी फूटी कौओं का भाग ।

किसी दूसरे का भाग्य भी अपने भाग्य से बधा सा रहता है । जब तुम दोनों ही ने साझे में काम चलाया तो चलने दो ।

Scanned with CamScanner

आपस में थोड़ी-थोड़ी बातों पर यों न उलझ पड़ो । अगर उलझ पड़ागेती किर सुलझना कठिन हो जायेगा और तुम्हारे सब किये कराये पर पानी किर जायेगा । जैसे आज तक मेल मिलाय से काम करते आये है करते जाओ-क्यों आकाश तक पहुंची बेल को बीच ही में से काटना चाह रहे हो । समझ-बूझ से काम लो । नहीं तो ऐसी कहावत सी हो जायगी कि—

हांड़ी फूटी-कौओं का भाग ।

खसी खै धौ-गंगा नै धौ ।

खसिया । खा कर अघाये-गंगा नहा कर अघाये ।

संसार में प्रत्यके बात की सीमा सी होती है ।

वह तो जैसे भी हाथ पड़े वह हिकमत करो । बिना उससे निबटे तो मन को कल ही नहीं पड़ने वाली है । वह जिस के भी हाथ पड़ा उसने ही अपना हाथ बढ़ा या और जब उसे गन्ने की तरह चूसा तब उसे छोड़ा और तब ही अघाय नहीं तो नहीं । क्यों कि कहावत है कि—

खसिया । खा कर अघाये-गंगा नहा कर अघाये । ५६२ ॥

हाई-धोती-हाई रोटी है जौ ।

हाय धोती-हाय रोटी हो जाये ।

किसी को दुःखी हो कर फिटकार सा देना ।

अरे ! देख तूने मुझ को जितना दुःख दिया है-एक भगबान ही जनता हैं । मैं भी तुझ से कहता हूँ । कि तू भी यह सब कुछ कर के-कभी चैन से नहीं बैठने पायेगा और ईश्वर ने चाहा तो थोड़ी दिनो में तेरो भी ऐसी कहावत सी हो जायेगी कि—

हाय धोती-हाय रोटी हो जाये । ५६३ ॥

गाई को चरी-बामुणको खाई-मलै मैं ।

गाय का चुगा-ब्राह्मण का खाया-भला ही हुआ ।

अपने नुक सान से ही पुण्य लाभ सा होता है।

आप तो नाहक ही में आपे से बाहर हो रहे हैं ? जो होना था हो गया-अब वृथा क्यों दुःखी होते हैं। जाने भी दो-नुकसान तो आप का जरूर ही हुआ पर गया से हुआ-जिस के लिये हमारे यहां कहावत कही गई है कि—

गया का चुगा-ब्राह्मण का खाया-भला ही हुआ। ५६४॥

छै मैंण आङ्गड़ी-छै मैंण नाङ्गडी।

छहमहिने अंगिया-छहमहिने नागियां।

अधूरी बात सी करना जो कि एक बोझ सी बने रहे। नागड़ी-नंगी।

उसके बाप से भी कभी घर गृहस्थी इस तरह चलने से रही। एक दिन तो चैन लेता-जब देखो तब तक रार-हाहाकार। तुम्ही कहो इस पर वह बेचारी करे भी तो क्या करें अपना जो सिर फोड़े या उस का जो सिर फोड़े फिर इतना ही नहीं। देने लेने-पालने पोसने का यह हाल है कि। उस निर्लज्ज धूर्त ने एक कहावत सी ही बना रखी है कि—

छहमहिने अगियां-छहमहिने नगियां। ५६५॥

अखौडेलै। कौवा के करौ।

अखरोट से-कौवा क्या करे।

ऐसी सहायत पाना जिस से कुछ भी फल न निफजे।

आप मुझ पर करने को तो कृपा सी कर रहे हैं पर पूरी कृपा नहीं कर रहे हैं। इतनी कृपा करने से तो यह अच्छा होगा कि-आप मुझ पर कृपा ही न करें। जिस सहायता से मतलण ही पूरा न बन सके उसे सहायता ही कौन कहेगा आप ही बतलाये ? आप की सहायता तो मेरे लिये ऐसी ही कहावत सी हो जायेगी कि—

अखरोट से कौवा क्या करें ? ५६६॥

Scanned with CamScanner

एथकै देखछा-रौ रिवाड़-उथकै देखछा-म्योल कबाड़ ।

इधर देखते हों-रौ रोखड़-उधर देखते हो-म्योल कबाड़ ।

इधर कुआं-उधर खाई ।

अन्यन्त बिषम परिस्थिति में सा पड़ जाना ।

रिवाड़-नदी का पाट जो ककंर पत्थरों से सूखा हुआ भरा पड़ा हो । रौ-बांध सा बंधा पानी म्योल कबाड़-पहाड़ के चट्टान से लगा हुआ गहरा गड्ढा ।

क्या कहूं बड़ी भयानक परिस्थिति में पड़ा हुआ हूं ? कोई चारा ही नहीं सूझता है । हत बुद्धि सा हुआ बैठा हूँ । इधर लड़का हवालात में बन्द है उधर उस की मां ने रो-रो कर सारा घर सिर पर उठा रखा है ? क्या कहूं क्या करूं मुझे तो ऐसी हो गई है कि । कहीं जा कर आत्मघात कर लूं । तुम से सब कहता हूँ भाई । बिधाता ने आज मेरे लिये ऐसी कहावत सी कर दी है कि—

इधर देखते हों-रौ रोखड़-उधर देखते हो-म्योल कबाड़ । ५६७ ॥

सीगं पकड़ी ली-पुच्छैड़ी पकड़ौ खेड़ो ।

सीगं पकड़ कर लिया-पूंछ पकड़ कर फैंका ।

बड़े अटपटे मन से लेन देन सा करना ।

तुम्हें कभी जानवर प्यारे लगते तो-तुम भी जानते । तुम्हारा तो सारा कारो बार ही किसी दूसरे का सा है । तब तुम क्या जानो जानवर का लाड़ चाव ? जानवर तो सारे कुनबे से भी अधिक सेवा चाहता है-तब कहीं मेवा देता है । तुम्हारा क्या ? तुम्हारी तो ठीक ऐसी कहावत है कि—

सीगं पकड़ कर लिया-पूंछ पकड़ कर फैंका । ५६८ ॥

तवा झोल झन लागौ बल ।

तवे में-झाला न लगे ।

पानी देवा-नाम लेवा-न रहे ।

Scanned with CamScanner

अत्यन्त ही न और दुष्कार सी अवस्था में हो जाना । झोल-तवे के तले में लगा हुआ काल जो लकड़ियों के धुंवे से लग जाता है ।

अरे ! तू तो इतना बेइमान और अविश्वासी है कि-ईश्वर करे तुम, से किसी काभी पाला न पड़े । अरे ! तेरी तो ऐसी करनी है कि-तुझे तो मरती दफे कीड़े पड़ेंगे तूने समझ क्या रखा है । ठहर जा तेरी तो ऐसी कहावत होगी कि—

तवे में-झाला न लगे । ५६९ ॥

ऋण दासी-गया छुटै नै कासी ।

ऋण दासी-गया छूटे न काशी ।

बिना ऋण दिये मनुष्य का त्राण होना का सम्भव नहीं ।

तुम कुछ ही करो ? पर उन की देनदारी चुकाये बिना कुछ भी न करो तो-उस करने से यह न करना ही भला है । दूसरों का ऋण तो सिर पर खड़ा हो और हम करते फिरें धरम-करम भला तुम्हीं कहो इस में क्या है मरम भरन ? मैं तो हाथ जोड़ कर तुम से बिनय करता हूँ कि पहिले दूसरों का देना दे लो-तब जो जी में आये करते फिरो । कहावत है कि—

ऋण दासी-गया छूटे न काशी । ५७० ॥

नानी खाप-ठुली धाध ।

नन्हा मुख-बड़ी धाध ।

धाध-पुकार-छोटा मुख-बात बड़ी कहता ।

चुप रह । बहुत नहीं बड़ बड़ते हैं ? इस तरह आपे से बाहर नहीं होते हैं । समझा ? हाथ भर का भी तो तू नहीं है-उस पर पहाड़ को झकझोर डालना चाहता हैं । यही तो हुआ लौंड़ियार पना । त तो जान बूझ कर ऐसी कहावत सी कर रहा है कि—

नन्हा मुख-बड़ा धाध । ५७१ ॥

Scanned with CamScanner

ठुना मैसलै झूठी बुलाणी-ऐथ उथ चाणी ।
बड़े आदमी ने झूठ बोलना-इधर-उधर देखना ।
बड़ी लज्जास्पद सी बात का हो जाना ।

अरे भाई साहब ? आप जो बक झक रहे हैं, सब व्यर्थ सा है । वह तो इतने बड़े आदमी हैं कि-अगर झूठ भी कहें तो-सच ही है और अगर सच कहें तो फिर तो क्या कहना है । पर मुझे विश्वास नहीं था कि वह भरी पंचायत के सामने सरासर झूठ बोल देगें। आश्चर्य है ? कैसे इतने बड़े तबक के आदमी झूठ बोल गये । इस पर यह बेचार करता भी क्या ? उन को झूठ बोलते देख कर इधर उधर देखने लगा । इस बेचारे को देख कर मुझे उस समय एक कहावत याद आई कि—

बड़े आदमी ने झूठ बोलना–इधर–उधर देखना । ५७२ ॥

जैका पितर ह्वाला-गया में देखियाला ।
जिस के पितर होगें-गया जी में दिखेगें ।
आमने सासने चोट सी होना ।

यहां पर बड़ बड़ा कर या घौंस–फौंस मार कर क्या होगा ? दो चार दिन की ही तो बात है । जब दंगल होगा । दंगल में ही जान पड़ेगा कौन शेर है और कौन सवा शेर । अभी से तो बढ़ मारना ठीक नहीं । क्यों कि कहावत है कि—

जिस के पितर होगें–गया जी में दिखेगें । ५७३ ॥

भल लागी भैरे-वी पर बिच्छीलै बुकै ।
भल लगी बैठे थे-उस पर बिच्छूने काटा ।
एक तो करेला–फिर नीम चढ़ा ।

झल–मिर्च लगी की सी–झल झली–हलहली । मिर्च की तीवता । मिर्च लगी की सूं सा ।

ईश्वर करे इतनी भारी बिपत किसी शत्र को भी न आये ।

Scanned with CamScanner

देखते हो ? एक पखवारा भी नहीं हुआ जाब बेचारों का होनहार लड़का मर बैठा। और कल रात की बात है कि बेचारों के घर पर डाका पड़ा। इसे कहते हैं दैवी मार। ओफ ? उन की तो ऐसी कहावत सी हो गई कि—

झल लगी बैठे थे-उस पर बिच्छूने काटा। ५७४॥

कुली में का धान-तू रानी मैं पधान-निमड़ीगे धान-तू राड़-मैं भांड़।
कुलिया में के धान-तू रानी मैं प्रधान-चूके धान-तू रांड़-मैं भांड़।

ओछे को मिला जोड़ा-घरती को देखे थोड़ा।
थोड़ै ही में बिगाड़ सा पड़ जाना।

तू तो थोड़े ही में फुलफुलाया सा फिर रहा था-मैंने तो तुझ से उसी समय कह दिया था कि-इतना न इतरा। पर तुझे और समझ को तो अब भेंट होनी थी। निकल गई सब ऐंठ अकड़ ? चुप रह। बस दम घोट ले। अगर कोई दूसरा सुनेगा कि वह उस का सब मालताल ले कर चिड़िया की तरह फुर से उड़ गई तो तुझे मुख दिखलाना कठिन हो जायेगा। वह तो तेरी सूरत पर यह कहावत सी लिख गई है कि—

कुलिया में के धान-तू रानी मैं प्रधान-चूके धान-तू रांड़-मैं भांड़।
॥ ५७५॥

सौदौ बिगाड़ौ बणी-मसाला बिगाड़ौ धणी।
सौदा बिगाड़े बनिता-मसाले बिगाड़े धनियां।

बिगाड़ करने वालों का कहीं भी घाटा नहीं हुआ करता।

मैंने तुझ से उतना समझा कर कहा कि-देख यह व्याह शादी का मामुला है। हर एक साग में मसाले के साथ धनियां बड़े नाप तोल का ड़ालना-पर तेरे तो कान ही फूट गये थे-तू क्यों सुनता। तूने तो उलटा जो कर दिख लाया-मसाले कम-कम धनियां खूब। खूबी क्या बे ऊत ? मेरा सब कराधरा-धरा रह गया। अभी इस

से मैंने एक कहावत भी कह दी थी कि—

सौदा बिगाड़े बनियां—मसाले बिगाड़े धनियां। ५७६॥

रांफा हुणी न मली बट था—नै तलीबट था।

रांपी—के लिये न ऊपर से थाह—न नीचे से थाह।

डाल से गिरे तो—बबूर में अट के।

असहनीय कष्टदायक सी वेदना।

मेरी तो दोनों तरफ मौत है। इन की जैसी कहूं तो वे नाराज हो जाते हैं उन की जैसी कहूं तो ये बिगड़ बैठते हैं। ठहरे दोनों ही अपने सगे सम्बन्धी इष्ट मित्र—पास पड़ोसी जो कुछ भी कहो ये ही लोग ठहरे। इन के आपस के झगड़े ने मेरी तो ऐसी कहावत कर दी है कि—

रांपी—के लिये न ऊपर से थाह। न नीचे से थाह। ५७७॥

सौत्यालान हुणी—गाड़ तराईण लगी रै

सौतेलों से—नदी तराना।

चटोर बिल्ली और जलेबियों की रखवाली।

जानते बूझते हुये अपने को भयानक खतेर में डालना।

अजी उन की क्या कहते हो? वे आदमी थोड़े ही हैं देवता हैं देवता। कल जो उन की गर्दन पर तलवार चलाता था, आज वे उसी का विश्वास करने लगे हैं। बड़े भोले सीधे और सच्चे सतयुगी आदमी हैं। कौन होगा जो उन्हें नाम रखेगा? वे तो जानते हुये भी ऐसी कहावत कर रहे हैं कि—

सौतेलों से—नदी तराना। ५७८॥

मैतै की ब्वारीक—ताथा नै ब्याला—पूर्वी बादलक—द्यो नै पाणी।

पहिर के बहूकी—थात न औलाद—पूर्बी बादल का बरषा न पानी।

बड़ी निराशा जनक सी कहानी।

अब कबतक बहू को पहिर में ही रहने दोगे? अपनी बस्तु की साज समाल अपने ही हाथ से व अपने ही घर पर होती है।

बुला लो ? तुम ने शायद यह कहावत सुनी या नहीं कि—

पीहर के बहूकी-थात न औलाद-पूर्बी बादल का बरषा न पानी।

॥ ५७९ ॥

पाणी सौत नै-धुवा निकास नै ।

पानी को सोत न-धूंवे को निकास ।

बड़ी असाधारण सी कठिनाई का आ पड़ना।

अरे वे बात क्या करते हैं ? एक बुझोवल सी कहते हैं। शेष जी भी आवें तो उन का गुणानुवाद न गा सकेंगे । वे तो कलयुगी नारद हैं। बातें तो बहुत सी-पर एक का भी सिर न पैर । उन की बातें क्या हैं एक कहावत सी हैं कि—

पानी को सोत न-धूंवे को निकास । ५८० ॥

यो ममा-आपुणा नै बिराणा ।

ये मामा-अपने न बिराने ।

शंका से परिपूर्ण स्थान सा ।

क्या ? कहने को तो वे अपने ही आदमी ठहरे । पर ठहरे ऐसे ही। कौन होगा जो उनका विश्वास गांठ बांधेगा ? जब भी मैंने उनका विश्वास किया-बस विश्वास का गला ही कटते देखा । वैसे हैं हमारे रिश्तेदार । उन्हीं के लिये शायद यह कहावत कही गई है कि—

ये मामा-अपने न विराने । ५८१ ॥

नै रांडै कै-नै मांडै कै ।

न रांड़ के-न मण्डप के ।

न इधर के रहे न उधर के रहे, वृथा जन्म सा होना।

कौन समझाये उसे कहते हो ! थोड़ी विचार तो करो-जब उसे हवालात-हथकड़ी-बेड़ी न समझा सकी तो-फिर तुम ही कहो ! उसे अब कौन समझा सकता है। सिवाय फांसी के तख्ते के। उसका कोई होता तो उसे समझाता-वह तो खुद ही सभी से समझता फिरता है।

Scanned with CamScanner

ऐसो ही के लिये तो हमारे बड़े बुढ़े कहावत कह गये हैं कि—

नै रांडै कै-नै मांडै कै।

दुकान कौजो मी छोड़ों वी मैं छोड़ूँ।

दुकान कहे जो मुझे छोड़े उसे मैं छोड़ूँ।

दुकां बन्द करके रहा बैठ जो दी उसने बिल्कुल ही लुटिया डुबो। काम काजी देश का मनुष्य आलस्य से दिन नहीं काटा करता।

तुम को मैंने हजार बार समझा रखा है कि दुकान छोड़ कर मत इधर उधर जाया कर न जाने कौन सा ग्राहक आ पड़े और न परमात्मा कैसा ग्राहक भेज दें। पर तू है कि--थोड़ी भी मैं इधर उधर गया और तू मुझसे भी पहिले इधर उधर हुआ इस पर तू ही कह दुकान का क्या हाल होगा? मैं तुझसे हाथ जोड़ कर कहता हूँ कि आज से तू इस कहावत को गाँठ बांध ले कि—

दुकान कहे जो मुझे छोड़े--उसे मैं छोड़ूँ। ५८२

माथी माथी नौणी-मुणी मुणी कौंणी।

ऊपर ऊपर नवनीत नीचे नीचे पलीत।

नाम के बड़े दर्शन के छोटे।

कौणी--एक प्रकार का पहाड़ी सस्ता अनाज।

धोखा घड़ी से काम लेना।

एक दिन हो तो एक दिन हो यह जब भी सौदा बेचने को बाजार लाता है कुछ न कुछ मिलावट जरूर कर लाता है। मैंने इसे बहुत समझा रखा है कि ऐसा घाल घपोल मत किया कर नहीं तो तुझे पुलिस के हवाले कर दूंगा। पर यह मानता ही नहीं।

यह तो ऐसी कहावत कर लाता है कि।

ऊपर ऊपर नवनीत नीचे नीचे पलीत ॥५८३॥

करी बेरक चेलो सारी बेरक केलो।

करने से चेला सारने से केला।

बात बना कर ही बहुधा बना करती है।

Scanned with CamScanner

तू तो निरा काठ का उल्लू है तुझ को कोई समझाये भी तो कहां तक समझाये:—मैं तो तुझे समझाते अपनी जो समझ गवां बैठा हूं। मैंने तो तुम से कभी कह दिया था कि केले के पेडों को जब यह कुछ बड़े हो जाये तो इन्हें इधर से उधर लगा देना पर तूने मेरा कहा माना ही नहीं। अब खा केले! अरे यह तो बिना इधर उधर सारने से लगते ही नहीं बढ़ते ही नहीं और न पनपते ही हैं। इतनी सी बात के लिये भी हमारे बड़े बुढ़े एक कहावत कह गये हैं कि—

करने से चेला—सारने से केला। ॥५८४॥

छनै की लहर—नी छनै की पहर।

हुए की लहर न हुए की पहर।

किसी समय के दिन बड़े, किसी समय की रात। समय समय की बात है।

अरे भाई! तुम तो यों ही कान खा रहे हो और अपना भी व मेरा भी समय जान बूझ कर बरबाद कर रहे हो। रुपये देने को जो मेरे पास होते तो तुम्हें इतनी बातें करने ही कौन देता? क्या मैं तुमको नही पहिचानता हूं जो तुम से कुछ कहलवाता। मैं तुम से सच कह रहा हूं चाहे तुम इसे बहाना ही समझो। मैं जैसा भी हूं तुम मुझे अच्छी तरह जानते हो। पर मेरी तो आजकल ऐसी कहावत सी हो गई है कि। ॥५८५॥

हुए की लहर न हुए की पहर।

बासमती ख्वारा में या स्यारा में?

बासमती सिर में या खेत में?

भाग्य हीन नर पावत नाहीं।

अरे! भाग्य ही बड़ी चीज है। भाग्य में जो नहीं हुआ तो कुछ भी नहीं हुआ! चाहे फिर कोई कितना ही सिर खपाये। देखता नहीं है। भाग्य में जो हुआ तो कहां की चीज कहां आकर पल्ले पड़ जाती हैं। तभी तो कहावत है कि।

Scanned with CamScanner

वासमती—सिर में या खेत में ?

सुपा का धान उखलै में जानेर भै ॥५८६॥

सूप के धान औखली में ही जाने वाले ठहरे ।

रुपया-रुपये ही वाले के पास जाता है।

तू कितनी ही चतुराई और बुराई कर-पर कुछ होने से रहा। अन्त को बात अपनी ही जगह पर आयेगी चाहे कुछ दिनों या महिनों का फेर भले ही पड़ जाये। क्योंकि हमारे गाँव की यह प्रसिद्ध लोकोक्ति है कि।

सूप के धान-औखली में ही जाने वाले ठहरे।

सौ को सोरों लाख को मितूर। ॥५८७॥

सौ का बिरादर लाख का मित्र।

मित्र धन संसार में बड़ा ही अप्राप्य धन है।

मैं उन की मित्रता किसी प्रकार से भी नहीं छोड़ सकता हूं चाहे मुझे सारी बिरादरी अभी ही छोड़ देनी पड़े, तो बिना आगा पीछे सोचे ही छोड़ दूंगा पर उन्हें मर कर भी नहीं छोड़ूँगा चाहे कोइ मुझे कुछ भी समझे परवाह नहीं। मुझे रंचमात्र भी ताप सन्ताप नहीं। भाग्य से हाथ आया हुआ मित्र छोड़ दूं ? यह भी एक ही कही। उन लोगों ने शायद यह कहावत नहीं सुन रखी है कि—

सौ का बिरादर लाख का मित्र। ॥५८८॥

मुसा का डहालै कुड़ी आगेा हालण

चूहे के डाह से घर को ही आग।

मूर्खता की पराकाष्टा सी कर डालना।

यह भी कोई समझ बूझ या सूझ बूझ की बात ठहरी कि, आप इतनी सी बात पर आपा खो सा रहे हैं ? थोड़ा तो बिचार करो कहां वह कहां तुम। ऐसा भी डाह या द्वेष क्या जो अपने को ही ले डूबे। इतना अकारण ही क्रोध करके तो आप ऐसी कहावत

Scanned with CamScanner

कर दे रहे हैं कि।

चूहे के डाह से घर को ही आग। ॥५८९॥

खुटां गिडाला-आखां पिंगाला।

पांव लूले-आंख पीले !

अव्यवस्थित सी व्यवस्था।

क्या इसकी भली चलाई किसे विश्वास है कि यह कभी कुछ करेगा। जिन्दा भी रह जाये नो बड़ी बात समझो। सन्तान हीठहरी बड़े पुण्य व भाग्य से ही मिलती है। क्या करूं ईश्वर ऐसे को भी रहने दें तो मैं अपने को धन्य समझूँ नहीं तो इसका क्या भरोसा कब क्या हो जाये। मैं तुम से सच कहता हूं इसकी तो जन्म से ही ऐसी कहावत है कि:--

पांव लूले आंख पीले। ॥५९०

नै आघिल कुनैली-नै पछिल मुनैली।

न आगे कुण्डली-न पीछे मुण्डली।

आगे नाद न पीछे पगा।

बड़ी ही अस्वाभाविक स्थिति सी।

संसार में शायद ही कोई घर ऐसा होगा जिस की दशा हम लोगों के घर की जैसी होगी जब-जब जितना यत्न प्रयत्न करते हैं तब-तब उतने ही निराश हताश से होते हैं। सारा जीवन ही इसी शोक सागर में डूबा रहा-कभी भी चैन नहीं पाया। क्या करें, किसके लिए करें बस यही चिन्ता मन में डेरा डाले हुए पड़ी है और भाई साहब कुछ अपनी करनी भी ऐसी है कि यह कहावत सी बनी बैठी है।

न आगे कुण्डली-न पीछे मुण्डली। ॥५९१॥

न चूलो छारौ-नै देली पाणी।

न चूल्हे में क्षार-न देहरी में पानी।

हम न किसी के-न हमारा कोई।

Scanned with CamScanner

अत्यन्त दीन-हीन सुदामा की सी दयनीय दशा।

क्या ? उसके हाल पर रोयें और हंसे जब अपने ही हाल पर हंसी और रोना आता है तो क्यों-क्या-क्या करें। तुम्हीं कहो? वह बेचारा तो हम से तुम से भी गई बीती हालत में है। फिर उसकी चरचा करने से क्ला लाभ ? हम-तुम-वह-वे सभी की आजकल ऐसी कहावत सी हो गई है कि—

न चूल्हे में क्षार-न देहरी में पानी। ॥५६२॥

बौला ढूंढी लौकै-बौला-मुखैं थैं।

बावला ढूंढ लाओ कहा-बावला-मुंह के धोरे।

आदमियों की बस्ती में बावले भी बसे रहते हैं।

जा ! आया कहीं का बड़ा चतुर बना-हुआ। खाली डींग मारता है और हमें जो घामड़ बनाने चला है। उल्लू कहीं का वह भी निरा काठ का। अरे ! जब तुझे यही ज्ञान नहीं कि क्या करने जा रहा हूं और कहां जा रहा हूं तब तुझसे क्या काम बनता ? और जो करा कराया काम बिगाड़ आया। पंडित जी; ऐसों ही के लिए हमारे गांव की एक कहावत है कि

बावला ढूंढ लाओ कहा-बावला मुंह के धोरे। ॥५६३॥

जै का पास छन नै-वीका पास मन-जै का पास मन नै-वीका पास छन।

जिसके पास धन नहीं-उसके पास मन-जिसके पास मन नहीं-उसके पास धन।

जाको प्रभु हिम्मत दिये-ताको धन ना देत-जाको प्रभुजी धन दिये-ताको हिम्मत न देत।

सभी को सभी वस्तुयें समान सी नहीं मिला करती हैं।

क्या ? आप का जैसा मन तो राजा भोज के पास भी नहीं होगा। कौन नहीं जानता ? जब भी जिसका काम अटका-दिया उसी ने आप के किवाड़ों पर खटका। आप जैसा देने वाला तो इस कलि-काल में मिलना बहुत कठिन है। होने को तो हमारे उस पड़ौसी के पास क्या कम धन है ? पर उसके पास आप की तरह मन नहीं,

तभी तो हमारे यहाँ यह कहावत चली आती है कि—
जिसके" पास धन नहीं-उसके पास मन-

जिसके पास मन नहीं-उसके पास धन। ॥५९४॥

हम तली भयां तौ बगी-मली भयां तौ सुकी।

हम नीचे हुए तो बहे हुए-ऊपर हुए तो सूखे हुए।

दोनों दीन से गये पाँडे हलुवा रहा न मांडे।

वह जीवन-जिसे जीवन में नाम ही पड़े।

क्या तुम भले आदमी ठहरे जो हम जैसे को मुंह लगा देते हो-बात तो यह है कि हमें जमाने भर में कोई पूछता तक नहीं-तुम तो बड़े सहृद व दयावान ठहरे जो दो बातें हम से लोगों के साथ भी कर देते हो। नही तो जहां भी जाते हैं हेठी ही सुनाई देती है। क्या कहूं? हमारी तो ऐसी कहावत बन गई है कि—

हम नीचे हुए तो बहे हुए-ऊपर हुए तो सूखे हुए। ॥५९५॥

मैस को मुख पातला का चड़ा-कसो कसो बुलानी।

आदमी का मुख खेतों की चिड़ियायें कैसा कैसा बोलती हैं।

जितने मुख उतनी बात।

पाताल--दूर-दूर तक फैले हुए खेत निचाई उचाई लिये हुए।

किसी का भी मुख नहीं रोका जा सकता है।

अरे! उन्हें बकने दो आप ही बकते रहते हैं पर तुम अपना काम देखो। बकने वालों का क्या जाता है? तुम किसी का मुख रोक थोड़े ही सकते हो। पहिले अपना काम देखो बकने वालों को मत देखो। ऐसे बकने वालों की चिन्ता मत करो--तुम से एक कहावत कहता हूं कि:—

आदमी का मुख--खेतों की चिड़ियायें कैसा कैसा बोलती है। ५९६

दई खानेर भाजी पड़ौ-पात चाटनेर हाथा पड़ौ।

दही खाने वाला भाग पड़ा-पात चाटने वाला हाथ पड़ा।

Scanned with CamScanner

तभी तो हमारे यहाँ यह कहावत चली आती है कि—
जिसके" पास धन नहीं-उसके पास मन-

जिसके पास मन नहीं-उसके पास धन। ॥५९४॥

हम तली भयां तौ बगी-मली भयां तौ सुकी।

हम नीचे हुए तो बहे हुए-ऊपर हुए तो सूखे हुए।

दोनों दीन से गये पाँडे हलुवा रहा न मांडे।

वह जीवन-जिसे जीवन में नाम ही पड़े।

क्या तुम भले आदमी ठहरे जो हम जैसे को मुंह लगा देते हो-बात तो यह है कि हमें जमाने भर में कोई पूछता तक नहीं-तुम तो बड़े सहृद व दयावान ठहरे जो दो बातें हम से लोगों के साथ भी कर देते हो। नही तो जहां भी जाते हैं हेठी ही सुनाई देती है। क्या कहूं? हमारी तो ऐसी कहावत बन गई है कि—

हम नीचे हुए तो बहे हुए-ऊपर हुए तो सूखे हुए। ॥५९५॥

मैस को मुख पातला का चड़ा-कसो कसो बुलानी।

आदमी का मुख खेतों की चिड़ियायें कैसा कैसा बोलती हैं।

जितने मुख उतनी बात।

पाताल--दूर-दूर तक फैले हुए खेत निचाई उचाई लिये हुए।

किसी का भी मुख नहीं रोका जा सकता है।

अरे! उन्हें बकने दो आप ही बकते रहते हैं पर तुम अपना काम देखो। बकने वालों का क्या जाता है? तुम किसी का मुख रोक थोड़े ही सकते हो। पहिले अपना काम देखो बकने वालों को मत देखो। ऐसे बकने वालों की चिन्ता मत करो--तुम से एक कहावत कहता हूं कि:—

आदमी का मुख--खेतों की चिड़ियायें कैसा कैसा बोलती है। ५९६

दई खानेर भाजी पड़ौ-पात चाटनेर हाथा पड़ौ।

दही खाने वाला भाग पड़ा-पात चाटने वाला हाथ पड़ा।

Scanned with CamScanner

खा गये दाढ़ी वाले–पकड़े गये मोछों वाले।

निशाना सा चूक जाना।

जाने कौन क्या कर गया; वे बिगड़ने और झगड़ने लगे मुझसे। मैंने उनको बहुत समझाया कि-मैं नहीं था आप समझ से काम लीजिए मुझे न मारिये। पर वे माने ही नहीं क्या करता-मार खा कर भी चुप ही रहा। मेरी तो मेरे भाग्य से ऐसी कहावत सी बन गई कि—

दही खाने वाला भाग पड़ा–पात चाटने वाला हाथ पड़ा। ॥५६७॥

उनारा सासां का जसा कान छन-चितला का जसा आंखा।

उनके खरहे के से कान हैं-चितल कैसी आंख।

अति सतर्क सावधान सा!

चितल-पहाड़ी हिरन सा अति सुन्दर व चित कबरा।

उन्हें सावधान व सतर्क करने की कोई आवश्यकता नहीं-वे तो बड़ी सूझबूझ के आदमी हैं उन से तो सजगता के लिए कहना। उन्हें भी और अपने को भी धोखे में रखना है। मेरी तो उन पर ऐसी आस्था है कि वृथा कह कर क्या करूं? मेरी समझ से तो यह कहा वतउन्हीं के लिए गढ़ी गई होगी कि—

उनके खरहे के से कान हैं-चितल कैसी आंखें। ॥५६८॥

आपू भै मरी–खसम के करी।

आप ठहरी मरी-खसम क्या करे?

बल हीन संसार में बड़ा ही हीन हुआ करता है।

हम किसी पास पड़ौस वाले से क्यों जान बूझ कर शत्रुता मोल लें? अपने से वन पड़ी तो उन लोगों की सेवा-टहल कर दो, नहीं तो अपने मुख में कपड़ा ठूंस रक्खा। कोई कुछ कहे कितना ही कहे हम से तो अपने पड़ोसियों की बुराई नहीं हो सकेगी और न ईश्वर ही हमें ऐसा बुरा दिन दिखलाये। हां जी अपने में वल ही

कितना है जो पास पडोस की अला-बला अपने सिर पर ले जाये। भली कहीं। अपनी तो ऐसी कहावत सी है कि—

आप ठहरी मरी-खसम क्या करे? ॥६६॥

कणीकन कै भिजूण सैणी किणी कै बुझूण।

कनिकाओं का क्या भिगाना औरत को क्या बुझाना

बड़ा सरल सा कार्य होना।

तुम भी यार! बड़े डरपोक हो। डींग हांकने में तो एक ही हो पर डर के मारे ये हाल वह भी अपनी घरवाली से। तुम तो मारे डर के मरे जैसे जा रहे हो कुछ भी नहीं तुम तो औरतों से भी गये बीते निकले। अरे कह देना कुछ! कोई बहाना बना देना। बस झगड़ गया आप ही पिन्ड छूट जायेगा। सरकस सिनेमा नाटक-खेल तमाशा कुछ भी बतला देना। अरे भाई साहब औरत को क्या बुझाना औरत ही ठहरी। सुनो! शायद तुमने ये कहावत नहीं सुन रखी है कि।

कनिकाओं का क्या भिगाना औरत को क्या बुझाना। ६००

कौवा मारो हाड़ न मासु,

कौवा मारा-हाड़ न मांस।

गुनाह वे लज्जत।

वृथा ही अथक परिश्रम सा कर बैठना।

यहां गया वहां गया-कहाँ गया कहां न गया, पर हाथ मलते गया और हाथ मलते वापस आया। जो कुछ भी मिला वह भी न मिले के बराबर ही ठहरा समझो क्या गया और क्या न गया कुछ न पूछो। वहां जाकर ऐसी कहावत सी कर लाया कि।

कौवा मारा हाड़ न माँस। ॥६०१॥

गुसैं को चाइये भलो हलियो को बाइये न को।

मालिक का देखना भर भला हलवाहे का जोता तक बुरा

अपना कार्य सदा सावधान हो कर देखते रहना चाहिये।

Scanned with CamScanner

डूम जाति जो अक्सर कर के गांवों में हल जोत करत हैं। खेतों के मालिकों को 'गुसें' अथात् गुसाईं कहा करती हैं। गुसाईं के सिर पर साल भर तक का भरण पोषण का कुछ न कुछ भार इनका रहता ही है। कई प्रकार से ये लोग उनके ही ऊपर निर्भर से रहते हैं। ये हलवहे लोग अछूत कहे जाते हैं। इतने भी कुमाऊं की सारी कलायें अभी तक भी इनके ही हाथों पर खेलती हैं। बाकी जातियां इनके ही सिर पर ताल तोड़ती हैं। ये जाग जायें तो कुमाऊं के सोये हुए भाग्य जाग जायें। ये अपढ़ हैं ये अछूत हैं पर हैं ये बापू के हरिजन। इन तक अभी भी स्वराज्य की लपटें नहीं पहुंच पाई हैं। इन्हें देखकर सचमुच में मानवता धहाड़े मार कर पछाड़ें खा बैठती हैं।

मैं आप से कहता न था कि आप भी कभी कभी उधर जाकर एक उड़ती नजर उस काम में डाल आया कीजिये। पर आप हां-हां तो कह देते थे जाते नहीं थे। उसी का यह परिणाम हुआ कि, काम का काम बिगड़ा पैसे का पैसा गया। तभी तो हमारे सयाने लोग यह कहावत कह गये हैं कि—

मालिक का देखना भर भला हलवाहे का जोत तक बुरा। ॥६०२॥

बुढ़ियां काल—माछी पड़ी डाल

बुढ़ापा काल—मछलियों पर पड़े ओले

बुढ़ापा उतना ही बुरा है जितना कि मछलियों पर ओले गिरना ओले पड़ने से पानी अत्यन्त ठन्डा पड़ जाता है जिससे बेचारी मछलियाँ आपसे आप मर जाती हैं।

डाल—ओले।

समय की गति ही बड़ी विचित्र हुआ करती हैं।

उन्हें मत छेड़ा करो? देखो मैंने तुम्हें कितनी ही बार इन बातों से दूर रहने के लिये समझा दिया है पर तुम उनके बुढ़ापे का तनिक भी ध्यान नहीं रखते हो और उन्हें छेड़े ही जाते हो। समझो

Scanned with CamScanner

कभी तुम भी बुढ़े होगे और तुम्हारे भी यही गये बीते हाल होंगे। अरे भाई ! उन्हें तो बुढ़ापे ने बुरी तरह पस्त कर रखा है, ऊपर से तुम ऐसी कहावत सी क्यों कर रहे हो कि—

बुढ़ापा काल—मछलियों पर पड़े ओले। ॥६०३॥

बाघ हुणी के दूण-के बिनार।

बाघ के लिये क्या दुधारू-क्या ब्याने वाली।

काल के हाथ कमान-बुढ़ा बचे न जवान।

इस जग के सारे खेल नीयत पर ही खेले जाते हैं।

क्या भाई ! जब हमने उन का रुपया मारना ही नहीं है तो कुर्की छोड़ वह जो चाहें लायें ? जब वह हमें चैन से नहीं बैठने देना चाहते हैं तो-जो उन के जी में आये करें ? हम भुगतेगें ? इस समय तो वह साहुकार और हम आसामी हैं जो उन्हें भाये करें ? क्यों कि उन्होने तो इस समय ऐसी कहावत सी कर रखी हैं कि—

बाघ के लिये क्या दुधारू-क्या ब्याने वाली। ६०४॥

निखाड़ी रांड-भदिया की देली।

न खा सकने वाली रांड-भतीजे की देहरी पर।

बड़ी असमजंस की सी जग में शरण लेना।

उसे जब कुछ भी लाज नहीं है तो-हमारा क्या जहां उस का जी चाहें जाये। हम ने क्या लेना है ? जब हम ने उस से हाथ जोड़ कर पांव पड़ कर भलीभाति कह दिया है कि-हमारे साथ रहो जैसा रूखा सूखा हम खाते हैं तुम्हें भी खिलायेगें और जीवन भर खिलायेगें। जब वह इतने पर भी नहीं मानती हैं तो जायें हमें कोई सरोकार नहीं ? मेरी समझ से तो उस की ऐसी कहावत होगी कि—

न खा सक ने वाली रांड़-भतीजे की देहरी पर।

Scanned with CamScanner

फूफी अपने भाई के लड़के को भदया, कहती है। ६०५॥

दगड़ौ करन सूरको-ऋण गाड़न पूरक।

साथ करना सूरका ऋण लेना पूरका।

मर्द की गर्द में रहे-नामर्द की सरहद में न रहे।

सोच समझ कर ही उठना-बैठना व लेन-देन करना चाहिये। मैंने तुम से उस ही दिन कह दिया था कि-तुम बड़े ओछे साहुकार से ऋण लाये हो। पछताओगे? पर तुम ने सुनी-अनसुनी सी कर दी क्यों कि तुम जरूरत से थे। फिर मैंने भी तुम को छेड़ना उचित सा नहीं समझा? पर आज मेरा कहा हुआ सच ही निकला? दूने देकर भी वह नहीं मान रहा है तो? इस का मतलब हुआ वह तुमको सारा ही निगल सा जाना चाहता है। तभी तो हमारे बड़े बुढ़े कहावत कहा करते थे कि—

साथ करना सूर का-ऋण लेना पूरका। ६०६॥

कल्यो बिना भूका-ढुपटौल बिना नाङाड़ा।

कलवे बिना भूखे-पुराने धुराने कपड़ो बिना नंगे।

थोड़ी पर भी, बड़ी बात रूक जाती है।

ढुपटौल-पुराने कपड़े जो बदल ने के काम आ सकें? कामचलाऊ? भाई तुम आगये! मैं तुम से क्या कहूँ मेरा तो बुरा हाल है? तुम सुन कर पसीज जाओगे? मैं तो अपने बालबच्चों को देखकर धीरज भी नहीं रख सकती हूँ? इन की तो ऐसी कहावत सी हो गई है कि—

कलवे बिना-भूखे-पुराने धुराने कपड़ो बिना नंगे। ६०७॥

कुनै-कुनै बाणी-ढूढ़नै-ढूंढ़नै पाणी।

कहते-कहते बाणी-ढूंढ़ते-ढूंढ़ते पानी।

जिन खोजा तिन पाइयां।

निरन्तर अभ्यास और लगन से ही लगन पूरी होती है। घबराओं मत और अवसर भी मत चूको! धुन लगन से लगे

रहो तभी परिश्रम सफल होगा ! जिस बात को करना चाहते हो मन-वाणी और कर्म से रत-हो जाओ-अवश्य सफल मनोरथ होवोगे। नहीं तो जीवन भर पछताओगे ? हिम्मत न हारो क्यों कि हमारे बड़े बुढ़े कह गये हैं कि—

कहते-कहते बाणी-ढूंढ़ते-ढूढ़ते पानी। ६०८॥

मुसमुसी बामुण-जजमान किणी खै उजाड़ौं।

मुसाना ब्राहमण-यजमान को खा उजाड़े।

चाटुकार लोहे के पत्तर को भी चाट डालता है ?

मैंने मुन्ने के पिता जी से कितनी ही बार भली बुरी तरह कहा कि-वे इस की बातों में न आया करें। पर उन्हें मेरी सीख क्यों सुहाती ? आज बात सामने आ गई ? वह ऐसा झांसा दे गया कि मुँह पर ताला सा लगा गया ? नित हमारा ही खाया और हमारा ही गुण गया ? अन्त को ब्राहमण हो कर के भी उस कपटी ने धोखे में रख कर उस बदमाश बेइमान को कर्जा दिला कर और उस में से आधा आप ले कर हमें घर घाट से बिठा दिया ? तभी तो हमारे सयाने लोग कहावत कहा करते थे कि—

मुसाना ब्राहमण-यजमान को खा उजाड़े। ६०९॥

नै बाछी कै गला—नै ठेकी कै तला।

न बछया के गले—न ठेकी के तले।

करा कराया सा बिगड़ जाना।

मैंने आप से पहिले ही कह दिया था कि-सभल कर काम में हाथ डालना। नहीं तो बना बनाया भी काम चौपट हो जायगा और हुआ भी वैसा ही न काम ही बना न हाथ ही कुछ लगा। यह तो ऐसी ही कहावत हो गई कि—

न बछिया के गले-न ठेकी के तले।

ठेकी-ठेका-डौकाला-फरुवा-पाली-पाला यह सब काठ के बने

वर्तनों के नाम हैं। जो कि सारे कुमाऊं प्रदेश में घर-घर कामों में आते हैं। इन्हें बन मानुष भी बनाते हैं जो बहुधा करके अस्कोट राज में रहते हैं। अस्कोट अल्मोड़े जिले की एक छोटी सी रियासत जो नैपाल और भारत की सीमा पर बसा हुआ है। यहाँ से श्री कैलाश १२ दिन का रास्ता है। इस रियासत के राजा को रजबार कहते हैं। यहां के आदिवासी लोग बड़े मेहनती व काठ उद्योग में दक्ष व कुशल हैं। ये बड़े निपुण और सीधे साधे होते हैं। वे जङ्गलों व घाटियों में रहते हैं। इन्हें राजी और रावत भी कहते हैं।

हमारे सरकार की पंच वर्षीय योजना या हमारे प्रान्त की सरकार की सामुहिक विकास योजना के अन्तर्गत इन लोगों की भी समाई रसाई हुई है या नहीं? भगवान ही जाने। आफिसरों के भार से भारी सरकार इस ओर भी आंख फेरेगी किसे विश्वास है? आतंक और गरीबी के शिकार ये कलाविद विधाता ही जाने कब तक सशंकित हो जीवन यापन करेंगे, कौन जानता है?

ठेकी जिसमें १॥-२ सेर तक दही समाता हो। ठेका-ठेकी से बड़ा डौकाला-जिसमें छाँछ मथी जाती है, फरुवा-कटोरे बराबर-मट्टी के कुण्डे के बराबर-पाला-इतना बड़ा जितने में न्यारिये न्यारा तक साफ कर लें। यह सब काठ के बने वर्तन होते हैं। इनमें दही, दूध, मट्ठा, छाँछ, घी, नवनति, रायता, दाड़मी की खटाई इत्यादि रखते हैं। ॥६१०॥

आपुण हुणी रिसौ-भितर कै ऊं-परै हुणी रिसौ-भैर कै हूँ।

अपने को रिसाइये-भीतर को आये-पराये को रिसाइये बाहर को जाये।

अपना-अपना ही होता है, कोई लाख न माने।

मुझे अपना मुन्ना बहुत ही भाता है, मैंने उसे घुड़कने के बदले बहुत बार बुरी तरह से मारा है-पर बेचारा इतना पिटने पर भी कभी कुछ नहीं कहता बल्के सीधे घर में चुपके से बैठ कर सिसकता

है। उसका ऐसा रवईया देखकर मुझे पीछे जो बहुत बुरा लगता है और अपने गाँव घर को एक कहावत याद आ जाती है। कि अपने को रिसाइये-भीतर को आये-

पराये को रिसाइये-बाहर को जाये। ॥६११॥

भैंस हुणी कच्यार नै-जिमदार हुणी विचार नै।

भैंस को कीचड़ नहीं-किसान को विचार नहीं।

बुद्धी हीन सा बना रहना।

आप उसे जितना ही समझाते पर वह मानता ही नहीं, क्योंकि ये देहाती भाई पढ़े गुणे तो होते ही नहीं-होते हैंलट्ठ, उस पर भी इतने टेढ़े कि समझाते-समझाते हार मान हो जाइये पर ये अपनी ही टेक-टेव पर अड़े रहेंगे। यह इन लोगों का कुछ स्वभाव सा ही होता है-तभी तो गांव घर की एक कहावत है कि—

भैंस को कीचड़ नहीं-किसान की विचार नहीं। ॥६१२॥

जब गै भ्योल पड़ी तौ-गुसैं का मुख चैं।

जब गाय भ्योल पड़ती है तो-मालिक के मुख ओर निहारती है।

असहाय होने पर-सहायक की ही ओर सहसा मन दौड़ता है।

भ्योल-पहाड़ी चट्टान पर का प्राण लेवा गड्ढा।

मैं आपके पास यों ही थोड़े आया हूं बड़ी आशा लगाकर आया हूं, आदमियों से तो संसार भरा पड़ा है पर—

जाही से कछु पाइये-ताकि करिये आस।

तब दौड़ा-दौड़ा आपके श्री चरणों तक पहुंचा हूं। प्रभु जानता है मेरी पहुंच आप ही तक है। इस कठिन काल में मेरे प्राण बचा ही दीजिये। क्योंकि कहावत है कि—

जब गाय भ्योल पड़ती है तो-

मालिक के मुख ओर निहारती है ॥६१३॥

चैण बखत बांस-नगैण बखत फांस।

चाहती बेर बांस-न चाहती बेर फांस

अवसर पर की ही बात सुहाती है।

किसी समय के दिन बड़े-किसी समय की रात।

जब तक मुझसे आपकी ताबेदारी भली भांति हो सकती थी, तबतक मेरी आपको चाहना थी। अब मैं जब आपकी आज्ञा नहीं बजा पाता हूं तो आप मुझे फूटे घड़े की तरह बाहर फेंक देना चाहते हैं। ऐसी अवस्था में मैं भला कहां जाऊं और क्या खाऊं? आप ही बतलाइये? आप तो मेरे साथ ऐसी कहावत सी कर रहे हैं कि—

चाहती बेर बांस-न चाहती बेर फांस। ॥६१४॥

के दौणी छाजैली के रौणी बाजालै।

या खरक ही छजेगी या मथानी ही बजेगी।

दोनों हाथ लड्डू। दौणी नौहरे-रौणी-मथानी।

थोड़ी सी बात के लिये मन क्यों मारा जाय।

तुम कुछ भी होरो! मैं एक भी नहीं सुनने का भैंस मेरे मन पसन्द थी खरीद लाया। अगर-मगर क्या? अब जो भी हो भगवान मालिक है। सभी देखेंगे? मैंने तो अपने जानेऐसी कहावत सी कर लाया हूं कि।

या खरक ही छजेगी-या मथानी ही बजेगी। ॥६१५॥

थाकी बल्द के नङ्गुणों।

थका बैल-क्या लाँघना।

वृथा ही डींग हांकनी।

अरे भाई! वो जो चाहे करें। पचास जूतियां मार लें वह भी गिनगिने कर। मैं आह-आह करने से रहा। मेरा तो इस वक्त पड़ रहा है। पर इतना होते हुए भी बात इतनी सी है कि-वह भी ऐसी कहावत सी क्यों करे कि।

थका बैल-क्या लांघना ॥६१६॥

Scanned with CamScanner

बाकरै की जै चार टांग–गौं में जै छै पधान।

बकरे की जो चार टाँग–गांव में जो छह प्रधान।

असम्भव सी बात का सामने आकर खड़ा हो जाना।

भाई! मानने को तो मैं जो आप कहेंगे मान लूंगा–पर यह तो एक आपकी ही बात नहीं है। इस पर तो सारे गांव घर को मानना और मनाना है। एक होता तो मैं रो धो कर हाथ पांव जोड़ कर मन जुड़ा लेता पर यहां तो ऐसी कहावत सी हो गई है कि—

बकरे की जो चार टांग–गांव में जो छह प्रधान ॥३१७॥

पराई-जोबरियौको-काच्चे साग।

पराई कढ़ाई का-कच्चा ही साग।

पराया कुछ भी ठीक नहीं हुआ करता है।

तू कहीं से कुछ ला-सारी बातें कर। पर अपना-अपना ही होता है-जो कुछ अपना होता है उसी पर मनुष्य गर्व करता है और दूसरों को भी गर्व करने का अवसर देता है। माँगी हुई चीज को तो आदमी दूर से ही मांग लिया करता है। तभी तो हमारे बड़े बूढ़े कह गये हैं कि—

पराई कढ़ाई का-कच्चा साग। ॥६१८॥

भैंस हुणी के चैं-बजवाणी-चेली हुणी के चैं-नजवाणी।

भैंस को क्या चाहिए-बजवाणी-लड़की को क्या चाहिए-नजवाणी।

बजवाणी-बाँज का जंगल। नजवाणी-जहा खूब नाज हो।

मनुष्य सुख-चैन से ही रह सकता है जहाँ सभी साधन सुलभ हों, अरे भाई! किसी को कुछ चाहिए किसी को कुछ। कोई बड़ा घर-वर ढूढता है। कोई पढ़ा, गुणा, अच्छा खाता सरकारी नौकर ढूढता है कोई खानदान कोई रईस उमरा को ढूढता है। पर मैंने अपनी बटिया के लिए एक ही बात ढूढी कि जहां वह खूब कसकर मेहनत कर सके, खूब नाज उपजावे आनन्द से खावे। सो प्रभु कृपा

Scanned with CamScanner

से वैसा ही घर-वर मिल गया उसके पास कुछ नहीं तो चार हाथ धरती तो है बस मैंने इतना ही देखा और अपनी लड़की के हाथ पीले कर दिये। आगे जो भी हो-इस समय तो मैंने अपने बड़े बूढ़ों की कहावत चरितार्थ कर दी कि—

मैंस को क्या चाहिये-बजबाणी-लड़की को क्या चाहिये-नजबाणी।

॥ ६१९ ॥

सैंणी लरबरानी के—साग तरबरान के।

औरत लरबरानी क्या—तरकारी तरबरानी क्या।

लरबरानी—तुरत मुरत कार्य तो करती हो पर बिगड़ कर? फुरफुर—फर-फर? तरबरानी—रसदार साग जो इधर-उधर ले जाने में तरकता जाये। टपकता रहे! पानी की सी धार छूटे?

वही चीज मन को मोहती है जो सुघड़ और सुड़ौल होती है।

तुम्हारी तो लोग बडी तारीफ के पुल बांधते थे कि—तरकारी-बरकारी बानने में तम एक ही कमाल सा करते हो—पर जब उस दिन बारात में देखा तो तुम ने ऐसा कमाल कर रक्खा था कि-किसी बाराती ने तुम्हारी पकाई हुई। तरकारी को छूआ तक नहीं? इतना पानी था कि उस में तरकारी डुबकी सी लगा रही थी। जो भी किया तुम ने खूब ही किया? शायद यह कहावत तुम ने नहीं सुन रखी थी कि—

औरत लरबरानी क्या-तरकारी तरबरानी क्या। ६२० ॥

जेठो पाठो—बाकर लै झन हो।

जेठा—पाठा—बाकरा भी न हो।

बड़ा ही सारे भार को बहन किया करता है।

मै घर भर में सब से बड़ा समझा जाता था? और था भी! इसी लिए जितनी भी आपदायें घर में आती थी मुझे ही झेलनी पड़ती थी? जो भी हुआ ईश्वर ने समय-समय पर मैरे बड़े हुए

Scanned with CamScanner

की लाज रख दी-नहीं तो न जाने कब कहां क्या हो जाता कौन जानता है ? तभी तो गांव घर के बुढ़े कहावत बना गये हैं कि—

जेठा-पाठा-बकरा भी न हो। ६२१ ॥

बाटक गौं–धैं देखी चौं।

बाट में का गांव–देखता सा जांऊ।

कभी का देखना-आफित सी मोल लेना हो जाया करता है। मै तो तुम से सच कह रहा हूँ ! महाराज ? मै तो सीधा नाक की सीध में घर को चला आ रहा था-वह गांव रास्ते में पड़ता हैं किसने जान रक्खी थी कि-कहाँ क्या हो रहा है ? आँख उठा कर उस तरफ देखना था कि-बस-देखते ही रह गया ! न जाने उस देखने से अभी मुझे और क्या-क्या देखना है ? ईश्वर ही पतिरक्खे ? मै सच कहता हूँ निरअपराध हूँ ! मेरी तो ऐसी कहावत बन गई है कि—

बाट में गांव-देखता सा जांऊ। ६२२ ॥

ले खुटी बाग–को करौ।

ले बाध पांब–कौन करे।

आ बैल मुझे मार-मेरे गले फन्दा डाल।

जानते बुझते हुए कौन कुंवे में पैर लटकाये।

तुम हो भाई ? तुम हो ? बड़े सूरमा-शूर-बीर ? तुम जो भी कहो पाव रत्ती बावन तोला ठीक ! मै तों जान बूझ कर डोरे नहीं डालूगा ? तुम हो ? नई जवानी-नई उमगँ- नया जोश ! परहोश तुम जानो तुम्हारा काम जाने ? मुझे तो गांव घर के अपने बुढो की कहावत याद है कि—

ले बाघ पांव-कौन करे। ६२३ ॥

मेरी जै धिनाली होली–माणा में फानी लुला

म्यारा जै नानतिन होला-उडयारन पाली लुला।

मेरे जो धिनाली होगी तो-माणे में फेंट लूंगी

मेरे जो संतति होगी तो-गुफा में पाल लूंगी।

अपने पास कुछ हुआ चाहिये-मनुष्य असम्भव को भी सम्भव सा कर दिखलाता है धिनाली-दूध-दही-छाँछ माखन-माणा काठ की छोटी भरोटी। क्या भली कही आपने अपने पास कुछ हुआ चाहिये फिर किसी की क्या परवाह। पराई आश पराया मुँह ताकना ईश्वर करे किसी को न हो जब मेरे पास गाँव के लोग कुछ नहीं देख पाते हैं तभी तो मेरी हँसी उड़ाया करते हैं। पर मैं कहता हूं भगवान मुझे दें तो इन लोगों को दिखला दूँ कि मैं क्या कर सकता हूं इन लोगों की देहरी पर तो ईश्वर करे मैं मरके भी न जाऊँ क्या अपने पास हुआ चाहिये मैं ऐसी कहावत कर दूँ कि मेरे जो धिनाली होगी तो माणे में फेट लूँगी मेरे जो संतती होगी तो गुफा में पाल लूँगी। कुमावनी लोगों का एक सदा चार व शिष्टाचार यह भी है कि जब दो जनों की भेट होती है तो वे आपस में क्षेम कुशल नमस्कार राम राम के बाद यह अवश्य पूछ लेते हैं कि आजकल आपके घर में क्या और कितना धिनाली है। यह बात अभी भी हम पहाड़ी प्रदेशों के लिए मान-प्रतिष्ठा मर्यादा और गौरव की सी बात समझी जाती है। पर इस को कोजम के जमाने में अब कहां। ॥ ६२४ ॥

खुस्याणी बे भौ गे-नफा में कुथल गे।

मिर्च बे भाव गई-नफे में कुथली गई।

मिया के मिया गये-बूरे बूरे सपने आये।

बडी सी बात बिगड़ जाना।

न जाने भाई! आज सुबह-सुबह किसका मुंह देख पड़ा। बाजार करने गया, गांठ जो कटा आया। दम फूल गया, सांस रूक गई। अपनी दुर्दशा देखकर क्या करूं किधर मरूं हो गई। सौदे का सौदा गया और पैसे के पैसे गये। मैं तुमसे सच कहता हूं कि मेरी ऐसी कहावत सी हो गई कि—

मिर्च बे भाव गई-नफे में कुथली गई। ॥६२५॥

Scanned with CamScanner

पिपीया नै कुटी—व्या करूं हुणी उठी।

पिसा न कुटा—व्याह करने को उठा।

हलन मूसल—व्याह करने को चल।

एक हंसी की सी बात कर बैठना।

अरे भाई! किसी से पूछ लेता तब टिकट कटवाता तूने तो अपने को न जाने क्या समझा। तूने समझा घर में घरवाले मेरी बड़ी चाहना करते हैं तो बाहर वाले भी करेंगे। ना? तभी तो विना किसी से कुछ कहे तू अपने ही घर से चोर की तरह निकल भागा। ऐसा अभागा कपूत कहीं का। कहां क्या है कहां क्या है देखा न सुना न अपनी पहुंच। इतना बड़ा ब्राह्माण्ड कहां, और तू कहां। कुछ खबर भी है? तूने तो ऐसी कहावत सी कर दी कि—

पिसा न कुटा—व्याह करने को उठा। ॥६२६॥

गुध्याणी का क्याला—सैणीन को म्याला।

गुध्याणी का केला—औरतो का मेला।

वह बात जिसमें कुछ सार सा न हो।

गुध्याणी—धूरा-कूड़ा, कचरा टट्टी पेशाब करने की जगह। तुमने भी बागवानी के लिए क्या जगह छांटी। जहां बीज का बीज जाय और उसी बीज से विष उपजे। तुम कुछ भी करो इस जमीन में कुछ होने से रहा चाहे तुम पैर नीचे करो और सिर ऊपर, तब तब भी तुम्हारा बाग फले फूलेगा कोइ भी नहीं कह सकता। कदाचित् भगवान की दया से और धरती के सत धरम से कुछ हो भी जायेगा तो उसकी ऐसी कहावत सी हो जायगी कि—

गुध्याणी का केला—औरतों का मेला। ॥६२७॥

बिठ को सिकाई डूम अत्यणा पड़ौ।

द्वीज का सिखलाया डोम—नाश ही को प्राप्त हो।

संसार में दिखलावट सिखलावट बहुत बूरी चीज होती है।

अंत्यणा—अधाधुन्ध—बिना किसी रुकावट के।

कुछ नहीं तूतो दूसरों के सिखलाने से मुझको कोसने चला आया। तूने तो इतना भी नहीं विचार किया कि मैं जो कुछ कहूंगा उसमें से कुछ भूल पड़ा तो क्या हो जायेगा। मैं तो तेरे कहते ही समझ गया था कि यह दूसरों के सिखलाने-बहकाने से बहक सा गया है। मैं तो तू कहे तो अभी तेरी सारी पोल ही खोल दूं। तू अपना ही आदमी ठहरा तब तुझ पर मुझको दया सी आ जा रही है। क्या तूने यह कहावत नहीं सुन रक्खी है कि—

द्वीज का सिखलाया डोम-नाश ही को प्राप्त हो। ॥६२८॥

कोंढ़ी को हाथ को खै लिणों-बिटमनेर को हाथ को निखाणो।

कोढ़ी के हाथ का खा लेना—टोकने वाले के हाथ का न खाना।

बिटमना—ब्याह के समय की गाली—ठौर-ठौर कहने वाला, घड़ी-घड़ी कहने वाला-बिटना।

खाने पीने में संयम और धैर्य से ही काम लेना चाहिए।

तुम ने भी यार? मुझे किस आदमी के यहां ले जाकर चाय पानी खिला दिया अब पछता रहा हूं वह तो बड़ा ओछा निकला—उस दिन उसके यहां क्या गये और चाय पानी क्या कर बैठे। एक बला सी अपने पीछे लगा लाये। जब भी जहाँ भी और कहीं भी मिलता है तो बस उसी दिन का जिक्र करता है। सुन कर लाज लग जाती है। तभी तो हमारे गांव घर के बड़े जानकार लोग यह कहावत कह गये हैं कि —

कोढ़ी के हाथ का खालेना टोकने वाले के हाथ का न खाना।

दोना अज दस्ते दूनान-जहां बाशद सिना खुर्दन, सीना दर सीना खुर्दन, बिहा के अज दूना दाना खुर्दन ॥

दो रोटियां कमीने लोगों के यहां खाने से छाती में छुरा खाना अच्छा है। इस लिए कि कमीने की रोटी खाना छुरे खाने के बराबर होती है -सादी। ॥६२९॥

मांड खै बेरा का साँड जसा-मिसीरी खै बेरा का निसीरी जसा
मांड खा कर सांड से-मिसरी खा कर नीश्री से।

(१) घीं गुर खाय-झींगुर से-महुवा मठा के ठेंगुर से।

क्या करूं ? मैं तो अपनी तरफ से इसके लिए कोई कसर ही नहीं करता हूं। पर न जावे भगवान का ही क्या इस पर कोप हो गया है कि यह दिन पर दिन सूखता चला जा रहा है। सभी हकमी वैद्य व डाक्टरों को दिखला चुका हूं। पर कुछ नहीं। ये जहां हैं बस वहो हैं अपनी संतान है कर के मैंने इसे पालने पोसने में कभी कोई टालम टूल नहीं की। इसके साथ के लड़के हैं क्या खा रहे हैं? जाने खाते भी हैं या नहीं पर मस्त बने फिरते हैं क्या कहूं तुमसे मुझे अपने गांव की इसे देखकर एक कहावत याद आती हैं कि—

माँड खाकर सांड से-मिसरी खा कर नीश्री से।

(१) ईश्वर की ही रक्षा-रक्षा सी होती है। ६३०

गरीब कौ-मैं ज्वै बेचू-बली कौ उधार दे।
गरीब कहे मैं औरत बेचूं-बली कहे उधार दे।
गरीबी में आटा गीला।

बल हीन होना ही संसार में पातकों को जन्म देना है।

लो साहब सुन लो? तुम्हारे कहने से मैं उस भले मानुस के पास गया। पर क्या कहने हैं उसके। चार जो उधार मांगने गया देने किये बारह। पर बात ऐसी अटपटी और अपटपी की कि मैं ही जानता हूं। तुमसे क्या कहूं, उसने तो ऐसी कहावत सी कर दी कि-

गरीब कहे मैं औरत बेचूं-बली कहे उधार दे। ॥६३१॥

मेरै मरौ-मीं किणी पचास पडौ।
मेरा ही मरे-मुझे ही पचास पडे।
अन्धेर नगरी-चौपट्ट राजा-टका सेर भाजी-टका सेर खाजा।
मनमानी-घर जानी सी करना।

वाह जी वाह ! खूब पन्च ढूंढ लाये। पंचों ने तो न कुछ देखा न कुछ सुना-सुने सुनाये आये और मुझे ही उलटा डाट फटकार गये-उससे तो जिसका सारा अपराध था, मुंह तक न खोला। जाने कहो वह दूध का धुला था। मेरे लिए तो पंचों ने वही कहावत कर दी कि—

मेरा ही मरे मुझे ही पचास पड़े। ॥६३२॥

पूसै ब्याण-पूसै औताण।

पूस ही ब्यानी-पूस ही उकतानी।

औताण-उकताना—हुआ न हुआ, बराबर जैसा ही हुआ।

क्यों भाई ! तुम तो जितनी जल्दी नौकर न हुए उससे भी आगे नौकरी से अलग हो गये क्या बात हुई ? सारा पड़ौस, सारा मुहल्ला ऐसा कौतुक सा देखकर दंग है। बात क्या हुई, तुमने तो ये हमारे गांव घर की जैसी कहावत कर दी कि—

पूस ही ब्यानी-पूस ही उकतानी। ॥६३३॥

खसियैल पी भैंस को दूध वी किणी सूझ नै बूझ।

किसान ने पिया भैंस का दूध-उसे सूझ न बूझ।

अखाद्य खाना बुद्धि का नाश ही करता है।

हमारे पहाड़ में यह कहावत प्रसिद्ध है कि—भैंस का दूध पीकर आदमी की बुद्धि मोटी ही होती है और गाय के दूध से बुद्धि अधिक बढ़ती है।

क्या तुमसे कौन और कबतक अपना सिर खपाये सूझ बूझ के नाम पर समझाना झक मारना है। तुम्हारी बुद्धि तो भैंस का दूध पी-पीकर भैंस ही के समान स्थूल और मोटी हो गई है। तुम्हें तो जैसा-जैसा समझाओ-बुझाओ और-और जो ताव चढ़ाओ। तभी तो गांव के सयानों ने यह कहावत कही है कि—

किसान ने पिया भैंस का दूध-उसे सूझ न बूझ। ॥६३४॥

Scanned with CamScanner

अति खूं बुकूं-भूड़ भविक रूं ।
अति खाऊं काट खाऊं-भूड़ भभर समाऊं ।
ऊटपटाँग सी बात करना ।

तुम्हारा क्या है यार ! जो जी में आयेगी कर डालोगे । तुम्हें किसी का भय थोड़ी ही है । तुम तो उन जीवों में से हो-जिनके लिए हमारे गांव घर के सयाने ये कहावत कह गये हैं कि—

अति खाऊं काट खाऊं-भूड़ भभर समाऊं । ॥६३५॥

ले घोड़ी-खोल घोड़ी ।
ले घोड़ी-खोल घोड़ी ।
इस हाथ ले-उस हाथ दें ।
तुरत मुरत से सौदा कर लेना ।

अब जो भी हो-जब सौदा हो गया तो हो गया-अपना-अपना माग्य है ? मेरे जो माग्य में टोटा होगा तो वह तो कोई न कोई बहाने पूरा करना ही पड़ेगा ? पर भाई ? सायत की बात उस से सौदा होते पल भी नहीं लगा-क्या कहूं तुम से इस सौदे ने तो ऐसी कहावत सी कर दी कि—

ले घोड़ी-खोल घोड़ी । ॥ ६३६ ॥

एक जेठाणो हो तौ-घूंघट करूं-जै देखछा-जेठाणों ।
एक जेठ जी होंतो-घूँघट करूं-जिसे देखो वही जेठ जी ।
लंका में-सभी बावन हाथ के ।

करें भी तो कोई क्या करें । लाचारी के से पल्ले पड़ जाना । मैं तो लाज के मारे मर गया-किस किस का जो लिहाज करूं ? उन्हें सभझता हूँ वे नहीं मानते इसे सीख दूं ये नहीं मानता ? मेरी जो मौत है-क्या करूं कहाँ जाऊँ ! कहीं मुँह छिपाने तक का आसरा इन लोगो ने मेरे लिये नहीं छोड़ा है ! अब तुम्हीं कहो !

मेरी जगह पर अगर तुम होते तो क्या करते ? इन लोगो ने तो मिल कर मुझे बड़ा ही निर्लज्य सा बना दिया है और मेरी ऐसी कहावत सी कर दी है कि—

एक जेठ जी हों तो–घूंघट करूं–जिसे देखो वही जेठ जी। ६३७॥

जिमदारा का च्यालै लै–हलै बाणा–बणियां का च्यालै लै–बांटे चाण।

किसान के लड़के ने हल ही जोतना–बनिये के लड़के ने बांट ही जोहना।

जिस का पेशा-उस को साजे-और करे तो ढेगां बाजे।

अपना पेशा अपना ही होता है चाहे कुछ भी हो।

तुम कि तना ही पढ़ो गुणों अगर नौकरी नहीं मिलेगी तो फिर अपने ही पेशे की तरफ मुड़ोगे ! तव सब पढ़ाई-चढ़ाई ताक में धरी रह जायेगी ! इस लिये तुम से हाथ जोड़ कर कह रहा हूँ कि-अब बहुत पढ़ चुके अपनी दुकान देखो-चार भाइयों व चार पैसों का मुख देखो ! नौकरी में क्या धरा है जो उस का मुख ताक रहे हो। भईया ! हमारे गांव घर के बुढ़े तभी तो यह कहावत कह गये हैं कि—

किसान के लड़के ने हल ही जोतना-बनिये के लड़के ने बांट ही जोहना।

॥ ६३८ ॥

सैंणी का और घ्वाड़ा का ऐब–कैल द्याखा।

औरत के और घोड़े के ऐब–किसने देखे ?

ऐबदार बड़ा होश्यांर हुआ करता है। क्योंकि वह अपने ऐबों को छिपाये रहता है। तुम कुछ भी कहो मैं मानने से रहा मैं जानता हूँ तुम जो कुछ भी कह रहे हो सब मेरे भले के लिए कह रहे हो पर भाई क्या करूँ और क्या कहूं बड़ा लाचार सा हूँ। न मुझसे कुछ करते बनता है न मुझ से कुछ कहते, मेरे पास पड़ोस व मुहल्ले और नगर डगर के लोग मुझे ही कोस रहे हैं, उससे तो कोई कुछ भी नहीं कहता। मुझे तो आश्चर्य है कि लोग मुझे ऐसा क्यों समझ बैठे

है कि फते खाँने ऊंट ही बिठाये। मैंने भी कुछ देखा सुना है पर उस के ऐबों की तरफ से आप सभी लोग क्यों मुँह फेर ले रहे हैं? यही एक बात है। उसकी तो ऐसी कहावत है कि।

औरत के और घोड़े के ऐब-किसने देखे? ॥६३९॥

नै घुरु भेटीनैर नै कौतिकै देखीनैर।

न घुरुवा भेटा ही जाये न घुरुवा कौतिक ही आये।

किसी प्रकार से भी थाह न पाये।

घुरुवा नाम-क्या करूं? सारा नगर छान छान डाला है पर कही भी उस छोकरेका पता नहीं मिला। मां अलग रो रही हैं बहिनें अलग बिलख रही हैं और मेरा तो कोई पूछने वाला ही नहीं। मुझे तो कुछ ऐसा जान पड़ता है कि नदी नाले में तो नहीं डूब पड़ा है। क्या करूं। उसने तो मेरे लिए ऐसी कहावत सी कर दी है कि—

न घुरुवा भेटा ही जाये न घुरुवा कौतिक ही आये। ॥६४०॥

बाग लिजाणे की उतणी डर नी भै-जतणी ढौणी डरनै की डर भै।

बाघ ले जाने की उतनी नहीं डर-जितनी खरक डर जाने की डर।

बुढ़िया मरि तो मरी-पर यमराज जी घर देख गये।

दहशत-डर और आतंक प्राण लेवा चीज हुआ करती हैं।

अरे भाई! भली चलाई मेरे पास क्या था जो ले जाता पर मुझे तो एक भय सा लग गया है कि-चोर इसवार खाली हाथ लौट गये तो क्या हुआ पर वे धूर्त इस भरे पूरे गांव को तो देख ही गये हैं। ईश्वर न करे अबके उनका गिरोह इस गांव के सिर पर क्या कोप करें अब तो हमारे गाँव के बुढ़े लोगों की कही कहावत सी हो गई है कि—

बाघ ले जाने की उतनी नहीं डर-जितनी खरक डर जाने की डर। ॥६४१॥

लगीला जै भयो तौ ठाङ्गरन के अकाल ?
बेल जो हुई तो-टेकों का क्या काल ?
मूल जो मिल जाये तो ब्याज को कौन पूछता है ?

बिरादरी नाक भौं चढ़ाती है तो चढ़ाये, मैं तो घबराने से रहा मेरे पास जो धूम-धाम ताम-जाम के लिए धन होगा तो अपने लड़के की शादी कर ही लाऊंगा, चाहे बिरादरी का कोई आये या न आये, मुझे परवाह नहीं, धन चाहए धन ।सारा नगर बुला लूंगा । मुझे तो अपने गांव के बुजुर्गों की कहीं कहावत याद आती है कि—

बेल जो हुई तो-टेकों का क्या काल ॥६४२॥
बुढ़ा गोरू लूण को दो-पुराणा गुण कूण को दो ?
बुढ़ी गाय को नोन कौन दे पुराने गुण कहने कौन दे ?

पुरानी बातों पर नयों की दिलचस्पी नहीं रहती हैं ।

मेरे चार लड़के हैं और चारों के चारों सरकारी नौकर हैं लोग यह समझते हैं कि बुढ़ा बड़ा भग्यवान हैं पर परमात्मा ही जानता है, मुझे जैसी भाग्यवानी इस बुढ़ापे में है। तुमसे बातें खोलकर क्या करूं ? वे तो समझ ते हैं कि जो कुछ भी किया है हमी लोगों ने किया है, उस बुढ़े ने क्या किया है। ठीक भी है। मेरी सुनता ही कौन है । मेरी तो ऐसीकहावत हो गई हैं कि—

बुढ़ी गाय को नोन कौन दे-पुराने गुण कहने कौन दे ? ॥६४३॥

सांच को धन छिरौ नै-सांच को तप हारौ नै ।
सांचे का धन छिरे नहीं-सांचे का तप हारे नहीं ।
साँच को आँच नहीं ।
छिरना-लोप होना-धीरे २ नाश को प्राप्त होना ।
सत्य में ही बल हुआ करता है ।

भाई ! मेरी तो पसीने की कमाई थी । कैसे मरती ? ईश्वर की कृपा से पाई-पाई हाथ आई । लोग कह रहे थे कि ऐसे को रकम

द पड़ा है कि यह उसका मुंह देखेगा और वह इसका। पर भगवान ने मेरी ऐसी सुनी कि कहने वाले मेरा मुंह ही देखते रह गये। तभी तो सयाने लोग कहावत कह गये हैं कि—

साँचे का धन छिरे नहीं-साँचे का तप हारे नहीं। ॥६४४॥

सैंणी की आलस्यों बी बखतै पीडौ-बैकैकी छह मैंण में पीडौ।

औरत का आलस्य उसी समय पीड़ा पहुंचाये-मर्द का छह महिने में पीड़ा पहुंचाये।

आलस्य किसी भी हालत में हो अवश्य पीड़ा पहुंचाता है।

मैंने उससे कितनी बार टोक दिया है कि वह आलस्य न करे। उसके आलस्य करने से सारी गृहस्थी मटियामेट हुई जा रही है। पर वह सुनती ही नहीं। दूध चूल्हे पर चढ़ा गई और न जाने आप कहां गई? दूध सारे का सारा उबाल खा कर चूल्हे में, और चूल्हा भी गया भाड़ चूल्हे में, अब कहो? इसके लिए क्या करूं? कारो बार जो करूं, या इसकी देख-रेख में जो रहूँ? तभी तो हमारे साथ के सयाने लोग कहावत कह गये हैं कि—

औरत का आलस्य उसी समय पीड़ा पहुंचाये। मर्द का छह महिने में पीड़ा पहुंचाये। ॥६४५॥

सैंणी किणी नी लगूंण बजार-बैक किणी नी देखूण भनार।

औरत को न लगाना बाजार-मर्द को न दिखाना भण्डार।

व्यर्थ में ही मनका भंडक सा जाना।

मैंने तुमसे उसी समय कह दिया था कि तू बाजार न जा और जाती भी है तो इतने रुपये न ले जा, पास में पैसा होगा तो तेरी क्या तू तो सारी बाजार ही खरीद लायेगी। इतना कहते हुये भी तू न मानी और बाजार जाकर कर लाई अपनी मनमानी और तो कुछ नहीं इतनी सारी चीजें क्या लाई। जाने कबाड़ खाना ही खरीद लाई! अरी? तुझे रुपये लुटाने हो थे तो यों ही लूटा

देती। ये कूड़ा तो रुपये देकर घर में न लाती। लो चुप है। तभी तो हमारे गांव के भले सयाने लोग कहावत कह गये हैं कि—

औरत को लगाना बाजार-मर्द को न दिखाना भण्डार। ॥६४६॥

पिठी की-कोखीकी-आग बरबर हैं।

सहोदर और उदर की आग-बराबर होती है।

बहुत से दुःख संसार में समान से ही हुआ करते हैं।

क्या करूं? न रो ओंतो जी नहीं मानता है। भाई था भाई ही था! सारे परिवार की जिम्मेवरी संभाले हुए था-इतना ही नहीं पास पड़ोस भाई विरादर अपना सगा बल्के रांड़-बेवाओं की तक सुध लेता था! मैं-मेरा भाई था कर के नहीं कह रही हूं-सच ही कह रही हूँ? तभी तो ईश्वर ने उसे अपने पास बुला लिया? क्या करूं? सिर फोड़ कर मर जाओं ऐसा मन में आ रहा हैं? ऐसा दुःख मुझे तभी आया था? जब मेरा बड़ा लड़का मरा था? जाने दो? जी? हल का करो? समझाओ और समझो? इस में शक नहीं कि तुम पर पहाड़ गिर गया है पर धीरज बांधो? होता ही है-कहावत है कि—

सहोदर और उदर की आग-बराबर होती है। ६४७॥

आफी है जोगी पालो—आफी है नमो शिवायः

आप ही जोगी पाला—आप ही नमो शिवायः।

आप ही जाँघे खोले-आप ही लाजों मरें।

अपने किये पर आप ही पछतावे।

मेरा क्या अपराध है? आप ही ने उसे इतना मुंह लगाया और आप ही ने आज उसे दुतकार दिया। मुझ गरीब पर क्यों बरस रहे हो? आप जो भी कहें पर आप ने ऐसी कहावत सी कर दी है कि—

आप ही जोगी पाला-आप ही नमो शिवायः। ॥६४८॥

Scanned with CamScanner

तीन मण को आंग हलकूण-जिबड़ो भी हलकूण ।
तीन मन का अंग तो हिलाये-पर जीभ न हिलाये ।
आप कहीं अन्दर घुसी-अूती खाय कपाल ।
जुबान पर लगाम चाहिए ।

दादा जी ! जब आप उनसे जुबान कर चुके हैं तो अब पीछे न लौटिये । नहीं तो आप की बड़ी जग हँसाई सी हो जायगी । जुबान फिरना-जहान फिरना हो जाता है । बड़े २ लोगों ने वचन देकर बचन निभाये हैं वह भी अपने प्राणों तक की बाजी लगाकर । आप सब कुछ करिये पर जुबान न हारिये । जो कुछ कह दिया है उसे पूरा करिये । जीभ हिला दी तो हिला दी-अब न घबराइये । तभी तो हमारे गांव के दाने सयाने यह कहावत कह गये हैं कि—

तीन मन का अंग तो हिलाये-पर जीभ न हिलाये । ॥६४९॥

गधा लै पाणी पी-नै बेर ।
गधे ने पानी पिया-नहाकर ।
मेढ़की को भी जुकाम ।
खाली देखा देखी सी करना ।

क्या तुम भी देखा देखी नकल सी करते हो । भाई ! अपनी बुद्धि से सोच समझ कर काम करना चाहिए-क्योंकि भगवान ने तुम को बुद्धि दी है । ऐसा क्या करना हुआ जैसा कि और भी करते हैं दिखाऊ-काम चलाऊ या दूसरों का सा किया ही करना ये तो संसार में कुछ शोभनीय कार्य से नहीं हुआ करते हैं । ऐसे ही कार्यों के करने पर यह कहावत कही गई है कि—

गधे ने पानी पिया-नहा कर । ॥६५०॥

पेट बाणी पड़ौ असोज बटि-नानतिना बाणी पड़ौ-क्वाड़ा बटि ।
पेट को बान पड़े आश्वीन से-बालबच्चों की बान पड़े-प्रसूती गृह से ।

आश्वीन महिने में सभी अनाज घर में आ जाता है ऋतु भी

Scanned with CamScanner

कुछ गुलाबी जाड़ा सा लिए आ जाती है। खाने पीने में रुचि बढ़ने सी लगती है। धरती और आकाश निर्मल से लगने लगते हैं। निर्मल जल निर्मल वायु सारा वातावरण ही निर्मल सा हो जाता है। लड़का हो या लड़की माता उसकी बान चाहे जैसी भी डाले प्रसूति गृह से ही डाल सकती है। अच्छी हो या बुरी।

बस भाई कुछ न पूछो ? बरसात ने तो सारी आतें मारे गरमी के सड़ा सी दी हैं। अब तो ऐसा लग रहा है कि कब आश्वीन का महिना आये और कब पेट भर खायें। तुम मेरा कहना मानो चाहे न मानो मुझे तो बर.सात नहीं भाती। खाने पीने रहने सहने का आनन्द तो जब बरसात बीते तभी आता है और तभी हमारे गाँव के सयाने लोग यह कहावत कहा करते थे कि—

पेट को बान पड़े-आश्वीन से-बालबच्चों को बान पड़े प्रसूतिगृह से। ॥६५१॥

जुवारी को धन—तुमड़ी को—जसो अन्न।

जुवारी का धन-तूमड़ी का सा अन्न।

अल्प संतोष सा।

व्याभिचारी की सम्पदा—हरा, छली को संग-ए दिन द्वै में नसत हैं, जों बादर को रंग।

लो भाई! उन दिनों जुवा जीत रहा था तो जमीन पर पांव नहीं रख रहा था। कल उस जुवारी की घरवाली मेरी घरवाली से कह रही थी कि वह कल नया लहंगा ही घर से उड़ा ले गये हैं। न जाने जुवा खेलने के लिए किसी के यहां उसे बेच आये। बेचारी कह रही थी कि ईश्वर करे जुवारी किसी के घर में न जन्मे। तुम देख ही रहे थे। जिन दिनों जीत पड़ रही थी। क्या ठाँट थे, और अब यह हाल। तभी तो हमारे बुढ़े यह कहावत कह गये हैं कि—

जुवारी का धन-तूमड़ी का सा अन्न। ॥६५२॥

ब्यैकैकी खवै के-सैणी की नवै के।

मर्द का खाना क्या—औरत का नहाना क्या ?

बड़े आपा धापी में जैसे काम करना।

लो भाई ! तुमने तो पलभर भी देर नहीं लगाई। खाना खाया कि या खाली सूंघ आये। वाह तुमने तो कमाल ही कर दिया चिड़ियों को चुग्गा चुगने में भी कुछ देर लगती है और तुमने तो उतनी देर भी खाना खाने में भी नहीं लगाई। अजी भली कही खाने की। तुमने तो शायद नहीं सुनी-हमारे गाँव घर में एक कहावत प्रचलित है कि—

मर्द का खाना क्या-औरत का नहाना क्या। ॥६५३॥

हगणियां का दगाड़ा भै जाणो-लाकाड़ा फोड़नेर का दगड़ी नी बैठणो।

हगने वाले के साथ तो बैठे—लकड़ी फोड़ने वाले के साथ न बैठे।

आपद ग्रस्त स्थान पर भूल कर भी नहीं बैठना चाहिये।

मैं इसे लगा तार तीन दिन से समझाता जा रहा था कि मुन्ना ? लकड़ी फोड़ने की जगह पर मत बैठ-पर इस ने एक न मानी ! आज जब उछल कर लकड़ी इस के सिर पर पड़ी तब इस ने जानी असंगति में पड़ना कैसा होता है ? वह तो पत रही जो सिर नहीं फूटा ! तभी तो हमारे बड़े बुढ़े कहावत कह गये हैं कि—

हगने वाले के साथ बैठे-लकड़ी फोड़ने वाले के साथ न बैठे। ६५४॥

सौ दीवान मरा-तब एक सुनार जनमौ।

सौ दीवान मेर—तब एक सुनार जन्मा।

सौ चालवाजों में का एक चालवाज-सुग्गा-सूई-सुनार।

माया सुनार की-शोभा संसार की।

अरे ! इतना चालाक इतना भोला भाला बना हुआ कि मैं क्या कहूँ ? उस के सामने तो बड़े-बड़े राजाओं के दीवान भी पानी भरेंगे ? रोज आया सीधा साध-भोला भाल बन कर-नगर के लोगों की सारी बातें उस से सुन लो-जाने कहो महाभारत पढ़ रहा हो ! मेरी घर वाली का सारा जेवर साफ करने के बहाने-साफ कर

गया ? उस ने शर्म के मारे मुझ से कुछ कहा ही नहीं ! इस ड़ाके जनी कों महिनों हो गये बस सारा जेवर पचा गया ! कुछ कहो तो लड़ने को आता है ! तभी तो हमारे बड़े बुढ़े एक कहावत कह गये हैं कि—

सौ दीवान मरे-तब एक सुनार जन्मा। ६५५ ॥

वल बगौड़ौ पल बगौड़ौ गजूवो को पागौड़ौ।

वल्ला बगड़ा पल्ला बगड़ा गजाधर का किया पगड़ा।

ठग बगड़ कर के कोई कार्य बना लेना

अब जो भी हो ! चाहे सारा गांव नाम रखे तो रखे। पर मैं सारे गाँव वालों के पैरों पर पगड़ी रख कर कहता हूँ चाहे जैसे भी हो अब मेरी लाज रख दो। सारा गांव वारात में आकर मेरी पगड़ी रख दें। बस मेरे लड़के का व्याह निभादें। सभी जानते हैं मैं अपने लड़के की शादी ठग बगड़ कर कर रहा हूँ। पर क्या करूं लाचार हूँ। इस समय तो मेरी ऐसी कहावत सी बन गई है कि—

वल्ला बगड़ा पल्ला बगड़ा गदाधर का किया पगड़ा। ॥६५६॥

जब लगी तड़ी तराण—तब लग काया पराण।

जब लग तगंड़ी में बल-तबलग काया में प्राणों की हलचल।

बल लेकर ही संसार के सारे खेल खेले जा सकते हैं।

अब तो उठना बैठना आना जाना तक कठिन ही नहीं असम्भव सा हो गया है ! क्या कहूँ न जाने ये प्राण कहाँ पर और कैसे टिके हुये हैं ? मुझे तो अपने को देख कर घिन सी लग गई है ! अब क्या जीना हो रहा है तुम्हीं कहो ? जब शरीर में बल ही नहीं रहा ! अब तो मेरी ऐसी कहावत हो गई हैं कि—

जब लग तगंड़ी में बल-तबलग काया में प्राणों की हलचल। ६५७ ॥

आदो खै स्वाभा बैठो-मूलो खै क्वाणा बैठो।

अदरख खाये-शोभा बैठे—मूली खाये-कोने बैठे।

भला करने से भलाई बुरा करने से बुराई।

तुम भी यार खूब हो ? मैंने तुम से कितनी ही बार हाथ जोड़ कर कह दिया है कि-मूली खा कर मेरे यहां न आया करो ? तुम्हें बुरी तरह से अधो वायु आती है-जिस से सारी मजलीस व मजलीसी इल्म ही तुम्हारी आई हुई दुर्गन्ध में उड़ सा जाता है ? आये हुये लोग नाको में रुमाल रख कर भी-शान्ति नहीं पाते हैं और यह सब देख कर मैं खिसिया कर मिट्टी हो जाता हूँ ? पर तुम्हारी समझ में बात आती ही नहीं ? इतनी सी बात के लिये हमारे बड़े बुढ़े तभी तो इतनी बड़ी कहावत कह गये हैं कि—

अदरख खाये-शोभाबेठै-मूली खाये-कोने बैठे। ६५८॥

सैणी दुहरनै की भली देखीं—संतति आपुणी भली देखीं।

औरत दूसरों की भली दिखती है-संतति अपनी भली दिखती है।

थोडी-थोड़ी ही में महान् अन्तर सा हो जाता है।

तुम तो योंही बिगड़ बैठते हो-थोड़ी भी अपने लड़के का अपराध देख ने का कष्ट उठाना पाप सा समझते हो ? अरे भाई ! अपनी अपनी संतति सभी को प्यारी लगती है ? पर अपराध किस का है और कितना है यह तो देखना ही चाहिये तब आगे को मुख खोलना चाहिये ? मै तो तुम से कह देता हूँ इसी में भलाई है-खाली बिगड़ ने से तो पड़ोस और पडोसी से बिगाड़ मोल लेना है ! तभी तो हमारे बुजुर्ग ये कहावत कह गये हैं कि—

औरत दूसरों की भली दिखती है-संतति अपनी भली दिखती है।

॥ ६५९॥

आपुणा नै परिया—नै कुकुर करिया।

अपना न पराया-न कुत्ता कहा-कर आया।

सूख साख लक्कड़ हो रहना-दुःख सुख किसी से न कहना।

आयन्त ही एका की पन सा।

किस से कहूँ ! कहूँ भी तो सुनता कौन है। ऊपर आकाश नीचे धरती ! बीच में मैं हूँ ! आज तुम आगये तो चार बातें हो गई-नहीं तो मै और सुनसान ? तुम हसोगे ! मेरी तो ऐसी कहावत सी बन गई है कि—

अपना न पराया-न कुत्ता कहा-कर आया। ६६० ॥

दीवान-भूत छोड़ो नै मसाण ।

दीवान-भूत छोड़ो न मसान।

घूस खाने में बड़े सिद्धहस्त से।

तुम कह रहो हो दिनो की बात हो गई है कर के ? मै कहता हूँ महिनो हो गये ? इतना सा काम नित नई-नई पख निकाल देता है ! और टाल देता है ? क्या करता इस रोज-रोज की भाग दौड़ से पिन्ड छुड़ाने के लिये आज चार रुपये नजर कर आया ! तब उन्हो ने मेरी तरफ देखा ? चलो जो भी हुआ-काम तो हुआ। तभी तो हमारे पहाड़ में यह कहावत है कि—

दीवान-भूत छोड़ें न मसान। ६६१ ॥

आपुणों गाई पूरो कार-दूहरको गाई आंदुक कार।

अपना गाया पूरा कार-दूसरे का गाया आधा कार।

अपना काम अपने हीं हाथ से बने तो-अच्छा लगाता है।

क्या तुम ने भी कह दिया ! दूसरों से कहो फिर उन का मुँहता को, तब कहीं वह काम करो ! फिर इतने पर भी जाने कैसा काम करें ? इस से तो मैं यह अच्छा समझता हूं कि-छोटा-मोटा अच्छा बुरा-जैसा भी हो अपना काम अपने हाथो से ही करना चाहिये ? इसी में मनुष्यता है ? सुनो ! तभी तो हमारे गांव के बुढ़े एक कहावत कह गये हैं कि—

अपना गाया पूरा कार-दूसरे का गाया आधा कार। ६६२ ॥

जैकी चलो गली-वीकी चलो नली।

जिस का चले गला-उस की चले नली।

खाये आहार-हिलाये पहाड़ ।
नली-घुटने और पैर के बीच की हड्डी !

अरे यार ! उस की क्या बात कहते हो-खूब खाता है और खूब काम करता है ! आदमी है आदमी ? एक हम तुम हैं जाने कहो जापानी खिलौने ! न खा पचा सकते हैं न पहिन पी सकते हैं और बने फिरते हैं आदमी ? जरा चले नहीं टांगे दुखी नहीं और जरा खाया नहीं पेट में बल पड़ा नहीं ? ऐसे में क्या हो तुम्हीं कहो ? तभी तो गांव घर में ये मसल मशहूर है कि—

जिस का चले गला-उस की चले नली । ६६३ ॥

रुपैं टुटो-हाथी को खुटो ।
रुपया टूटा-हाथी का पांव ।

रुपल्ली तुझे भुनाऊ-तो मै मरी जांऊ !
पर्वत सी बात हो जाना ।

चलते भी हो जब शहर आये होतो-किसी होटल में चाय तो पिलाओ ? घर जा कर मालूम तो हो कि किसी आदमी के साथ शहर गये थे ? रहने दे यार होटल-चाय ! अच्छी तरह से समझले ! अगर हम ने चाय पानी चांट-वांट में रुपया तोड़ा तो फिर जरूरी चीजे रह जायगी ! घर जायगे भी तो फिर किस मुँह से जायगें ? तू तो कुछ समझता ही नहीं ! तूने क्या यह कहावत नहीं सुनी ! तो सुन ले—

रुपया टूटा-हाथी का पांव । ६६४ ॥

जतकाली हुणी बारों-नटुवा हुणी चारो ।
प्रसूता को चरजा कुवारों को चारा ।
थोड़ी ही में रूचि भेद सा हो जाना ।

बन ने को तो वह कुवांरा बना फिरता है पर है पूरा घाघ ? कौन जायगा उस के साथ दुनिया मर के नाम रखबाने को ! वह

तो जो जी में आई कर गुजरा न इधर देखता है न उधर ? भाई ? मै तो गरीब घर का लड़का हुआ कभी उस के साथ फँस पड़ा तो-मरा ! तुम्हारा क्या है तुम तो तब भी मुझ से अच्छे हो ! पर मै तुम से कहता हूँ ? उस के साथ जाने आने का रोग मेरे बश का नहीं ? बापरे बाप ! कान पकड़ता हूँ। उस ने तो आज कल ऐसी कहावत सी कर दी है कि—

प्रसूता को चरजा– कुवारों को चारा । ६६५ ॥

अघन्यारी दगड़ी-पछन्यारी लै गे ।

अघन्यारी के साथ-पछन्यारी भी गई ।

न इधर के रहे न उधर के रहे ।

अघन्यारी और पछन्यारी । पहाड़ के लोग बोरे में कोई अनाज भर लेने के बाद उस बोरे को बीचों बीच में एक इस प्रकार की मुरकी देते हैं जिससे उस भरे बोरे के दो भाग बराबर हो जाते हैं फिर उस स्थान पर कन्धा लगाते हैं जहां पर मुरकी दी होती है और बोझ को सहज में उठा ले जाते है उन मुरकी वाले दो भागों के आगे वाले भाग को अघन्यारी और पीछे वाले भाग को पछन्यारी कहते हैं ।

डेले का घर मिट्टीं हो जाना ।

एक मेरे कन्धे में ठहरा-दूसरा मेरे सिर पर चढ़ा । उधर आगई गाड़ी मैं पीछे जो को जो मुड़ा, ठेले से टकरा गया । सिर का बोझ गिरा और कन्धे का भी न इसे ही बचा सका न उसे ही । बापरे बाप ! मैंने तो ऐसी रेल पेल कभी देखी ही नहीं । पछताते चला आ रहा हूं । क्या कहूँ आपसे, आज तो मेरी ऐसी कहावत सी हो गई कि—

अघन्यारी के साथ पछन्यारी भी गई । ६६६

धान को कुन्यूड आगो हाली-निरसौ हुणी दौड़ ।

धानों का ढेर आगलगा-सीधे पानी को दौड़ ।

करनी न करनी कुंवे में पड़नी।

कुन्यूड—धानों का ढेर जो मये पराल के जमा किया जाता है। कुरना।

निरसौ—यजमान के यहाँ का सीधा-पानी।

जो काम करने का होता है उसे तो यह कभी भी नहीं करता झगड़ा फिसाद करने को तैयार। कल दो आने के लिये ग्राहक से इतना लड़ा कि रात में हिसाब मिलाती दफा तीस रुपयों की भूल हो गई। कितनी दफा हिसाब मिला लिया है पर रुपयों का पता ही नहीं लग रहा है न न गल्ले में न वही में। क्या कहूँ आपसे इसने तो कल ऐसी कहावत सी कर दी कि—

धानां का ढेर आग लगा-सीधे पानी को दौड़। ६६७

उचका जोगी—फटकै छाला—जथकै जाला-उथकै खाला।

उच्चका जोगी-फटकाई छाला-जिधर गया उधर पेट पाला।

तू उसके साथ न जाया कर-मैं तेरे हाथ जोड़ता हूं। क्यों मुझे पाल पोस कर इस तरह बदनाम करने में लगा हुआ है? उसका और तेरा क्या साथ? उसकी तो ऐसी कहावत है कि—

उच्चका जोगी-फटकाई छाला-जिधर गया-उधर पेट पाला। ॥६६८॥

सुवा मारी बेर—कौणी कैलै बोई?

सुवों को मार कर—कौणी किस ने बोई?

भय का सामना भय के ही स्थान पर करना चाहिए।

कौणी-मोटा अनाज बाजरा सा।

अरे भाई! तुझे तो व्यापार करने से पहले ही घाटे की जो डर हो जाती है तुझसे क्या व्यापार होगा? इस दुनियां में कोई भी व्यापारी ऐसा नहीं होगा जो घाटे के डर से व्यापार ही बन्द कर बैठा हो। घाटा, नफा तो लगा ही हुआ है पर काम तो करना ही पड़ता है चाहे कुछ हो। तभी काम भी होता है। तू ही बतला ऐसी कहावत कौन करता है कि—

Scanned with CamScanner

सुग्गों को मार कर-कौणी किसने बोई ? ॥६६९॥

कौवा कहड़ा नै रै-पीनो सूकनै रै ।

कौआ कोसते रहा-पिन्ना सूखते रहा।

पिन्ना—गाय-भैंस कीं सानी ।

हाथी चलता गया कुत्ता भौंकता रहा ।

आलसी बैठा रहा समय जाता रहा ।

कहड़ाना—कौवे की कड़-कड़-कांय-कांय ।

तुमतो नाहक ही में समय गंवा रहे हो, जो करना है करो। तुम तो भूमिका में ही सारा समय ले रहे हो। काम किस समय और कब होगा ? बस करो आदमियों को कोसना छोड़ अपने काम की बात करो। ऐसी कहावत सी मत करो कि—

कौवा कोसते रहा-पिन्ना सूखते रहा। ॥६७०॥

गौरूका किना टिपी गे-सिटौलको जी पालिगे ।

गाय की चिचड़छूटी-गलआरे का जिवा पला ।

दोनों हाथ लड्डू ।

सुभीते से कार्य का हो जाना।

सिटोला—एक पहाड़ी पंची जो मैना के स्वरूप और आकार प्रकार का होता है बड़ा ही हजार दास्तां सा होता है।

तुम क्यों मना कर रहे हो ? उसे काम करने दो-वह तो बड़ा होश्यार आदमी है। बिना किसी दिक्कत के शान्ति और सुचारु रूप से वह काम करेगा-तुम घबराते क्यों हो ? वह तो तुम्हारा काम इतने ठीक ढंग से करेगा कि अब मैं क्या कहूँ। तुम्हारी चिन्ता भी मिट जायेगी और काम भी बन जायेगा। वह तो ऐसी कहावत सी कर देगा कि—

गाय की चिचड़ी छूटी गलआरे का जिया पला। ॥६७१॥

मरण बखत, छाती में भाणो बरकाल।

मरती बार-छाती में भरोटी भरेंगे।

Scanned with CamScanner

करनी न करनी–छाती में भरोटी भरनी।

जैसी करनी–वैसी भरनी।

माणा—छोटी भरोटी–जिस में छह छटांक अन्न समाता है यह काठ का बना हुआ होता है। ताँबे का भी होता है। डमरू के आकार का कहावत है जो जीवन में बहुत छल फेरल और बेइमानी किया हुआ होता है और मरती बार जब उसके प्राण निकलने में बडा कष्ट होता है तो उसकी छाती में खाली (माणा) रखकर नाज से भरते हैं। तब कहीं उसके प्राण पखेरू उड़ते हैं। पहाड़ में ऐसा करने से ऐसा ही होता है और होता था। यानि जीवन में जितना कम तोला हो पूरा पड़कर आत्मा शान्ति लाभ कर आये–एक टोटका सा।

बरकाना–ऊपर तक भरना-इतना भरना कि-नाज के दाने भूमि पर बरषा की फुहार की भाँति गिर जाये।

अरे कम मत तोल–मरती दफे पछतायेगा तब कुछ हाथ न आयेगा। उधर भाव में मारा इधर तोल में मारा? ऐसा दो मारा मत मार–मैं समझा रहा हूँ तुझे और तू हंस रहा हैं। देखना! तेरी ऐसी कहावत होगी कि—

मरती बार–छाती में भरोटी भरेंगे। ॥६७२॥

आपुणी मूनिकों–ट्वालै भलौ।

अपना मूंडा–टोला ही भला।

अपना–अपना ही है चाहे जो कुछ भी है।

ट्वाला—फासफोरस- दूर खेतों में, अधियारे में–जो हड्डियों के जलने से उजाला होता है उसे कहते हैं। जिसका प्रकाश टिमटिमाता हुआ धुप-धुप सा करता है। पहाडी लोगों का यह विश्वास है चाहे यह विश्वास अंध विश्वास ही हो पर है खूब विश्वास कि, जो अविवाहित ही मर जाता है। उसका एक जन्म लख चौरासी में से (टवाल)भी होता है। श्री कविवर पन्त जी ने इस शब्दका रूपान्तर

ज्योति छल किया है।

क्या करूं इसके मारे तो मर जाने को जी चाहता है इसने तो सारे पड़ोस को मेरा शत्रु बना रखा है और आने-जाने वालों को अलग। मरूं भी तो कैसे मरूं ? अपनी संतति ठहरी। प्राणों का मोह इसके मोह के सामने कुछ ठहरा ही नहीं। तभी तो हमारे गाँव के सयाने लोग यह कहावत बना गये हैं कि—

अपना मूंडा-टोला ही भला। ॥६७३॥

मौठो है-फीटो भलो।

मीठे से फीटा भला।

साफ साफ कह देना हानीकारक नहीं हुआ करता है।

क्या ? मैं उनके पास दो बार हो आया हूं। पर उनकी बातों से कुछ पता ही नहीं चलता कि वे क्या करेंगे ? बातें तो उनकी इतनी मीठी होती हैं कि अब क्या कहूं। पर करना धरना वे ही जानें। उनकी बातें सुनते-सुनते कभी ऐसा जी करता है कि-ये मुंह के ही मियां मिट्ठू हैं। इनका करना धरना कुछ ऐसा ही है। मुझे तो लगता है ये कहावत ऐसो ही के लिए कही गई होगी कि—

मीठे से-फिटा भला। ॥६७४॥

पेटा का रीता—मुखा का फिटा।

पेट के रीते-मुख के फीटे।

पेट में जिसके मैल न हो।

अरे ! उनके कहे का कौन बुर मानेगा ? पड़ोस तो पड़ोस रहा सारा नगर-डगर उन्हें अच्छी तरह से जानता है और उनका बड़ा सनमान व आदर करता है। वे तो किसी का भी बुरा नहीं सोचते हैं। तू उनके कहे का बूरा न मान। उनकी तो ऐसी कहावत है कि—

पेट के रीते-मुख के फीटे। ॥६७५॥

खिणमिणाई आगौ—सटपटाई ब्बारी।

विखरी विथुरी आग—सटपठाई बहू।

Scanned with CamScanner

जिसमें कुछ ओज या तत्व सा नहो।

खिणमिणाई-वह आग जिसमें चिनगारियाँ सी ही शेष हों।

सटपटाई-सटर-पटर करके, बहकाकर।

सटपटाई हुई औरत को भी पहाड़ में सामाजिक व्यवस्था के के अनुसार ठीक और नियमित समझा जाता है। और कुमाऊं खस कानून भी ऐसा ही सा बना हुआ है सटपटाई औरत के रुपये उसके पहिले मालिक (पति) को चुका दिये जाते हैं बस फिर वह गृह लक्ष्मी बन जाती है। कोई भी कुमईयां इसका विरोध नहीं करता न उसकी संतान ही हेटी समझी जाती है। कानूनन उसे सभी अधिकार प्राप्त रहते हैं। यह सुव्यवस्था क्षत्री और डूम जाति के लोगों तक ही अभी तक सिमित सी है यह हमारे कुमाऊं का महान दुर्भाग्य सा है। परन्तु इस कहावत के अनुसार ऐसी बहू ऐसी आग का क्या भरोसा -मैं कहता हूँ अगर हम लोग भरोसा करते तो शांयद आज पाकिस्तान न बनता। अङ्गरेजों का बनाया शारदा एक्ट तो इस सुन्दरत्तम व्यवस्था के आगे चुल्लू भर पानी में डूब गया। इस शारदा एक्ट को डूबने से वचाने के लिए मार्च ३१ सन् १९५३ को श्री बद्री कक्कड़ जी (कांग्रेसी) यम०एल०ए० साहब को विधान सभा में कहना पड़ा कि इस शारदा एक्ट में नई जान डालिए नहीं तो यह मरा आगे हिन्दूकोर्ड बिल भी इस सुचारु व्यवस्था के आगे पानी भरेगा यह मेरी छोटी मोटी अकिल कहती है।

अरे यार मेरे! तू कितना ही इस आग को फूक-पर इसमें फूक आने से रही-तेरी फू-फू से सारे कमरे में राख हो राख भर गई न कुछ हुआ न गया। इतनी फू-फू से तो तू अभी तक पड़ौस में से आग ले आता और हुक्का ताजा हो गया होता। पर तू क्यों सुनने लगा मेरी बात, बात नहीं सुनता तो न सुन पर एक कहावत तो इस अवसर की सुन ले कि—

Scanned with CamScanner

विखरीं विथुरी आग–सटपटाई बहू । ॥६७६॥
मैं बड़ो–ग्यारा कमर में भांगकों लड़ो ।
मैं बड़ा–मेरी कमर में भांगें का लड़ा ।
वृथा अभिमान सा करना ।

भांगा—यह गोल २ मोती कासा दाना होता है । पर है असल में यह मोती ही-इसकी तारीफ क्या की जाये ! इसका कोई भी भाग बेकार नहीं जाता जड़ से लेकर सिरे तक । इसके लासे से पहाड़ी चरस बनती है आये दिन हमारी गरीब परवर सरकार इन चरस बनाने वालों को पकड़ने धकड़ने के लिए इन्सपेक्टर से साहबों को रखरखती है इतना ही क्यों पूरा एक आबकारी विभाग ही रख छोड़ा है । बेचारे इन्सपेक्टर पेट के मारे मारे-मारे अपने-अपने बंगलों या किराये के घरों में रह कर, बिदेशी शराब की प्यालियां खाली कर के इन्हें पकड़ने के नये, नये अप्राकृतिक साधनन्नों के दुःसहसा प्रयोग करते रहते हैं । नहीं तो साहबी सलाम करके चली न जाये ? इसके दाने के तेल से बन्दूकों की नालें साफ की जाती हैं । इसकी रसदार तरकारी बड़ी गर्म :स्वादिष्ट और पौष्टिक होती है । इसे पीसकर नीबू या दाड़िमी की खटाई में भी मिलाते हैं : बढ़ा ही अद्भुत स्वाद आता है इस भांगो की छाल से हमारे बोरा भाई क्या २ प्रकार नहीं बनाते । मैं तो उतनी प्रकार जानता तक नहीं हूं पर सरकार की गिद्ध दृष्टि अभी तक चरस ही तक पहुंच पाई है और जिले के नियोजन विभाग ने तो इस ओर से आँखें ही मूंद रक्खी है । इसके रेशे से रस्सी नाज तौलने के फट्टे, बोरिये, बोरे, तन ढकने की ठोहरें, छींके, झोले, जाल, इत्यादि सार सी वस्तुयें बनाई जाती हैं ये सारी वस्तुयें गांववालों में धड़ल्ले के साथ हाथों हाथ बिकती है अन्त में इसको लकड़ी से खाना पका लेते हैं और उसकी राख से खाद बना डालते हैं । इस धन्धे को करने वाली जाति के लोग जो आठ-दस हजार के लगभग होंगे बोरा कहलाते

हैं मिश्र में जैसा दजला-फरात खजूरों से पनपता है वैसा ही यह भागा बोरों के लिए भी है। ये लोग बड़े परिश्रमी-उद्योगी, संयमी-सीधे-सादे और हृष्ट पुष्ट व सचाई के आगार से होते हैं यह पढ़कर पढ़े गुणे लोगों को आश्चर्य सा होगा कि इन अपढ़ गवार लोगों का ब्रिटिश सरकार के दरबार में मुश्किल से ही कोई मुकदमा गया हो। जब कि खुली अदालत सबके लिए खुली पड़ी थी लगभग १०५ साल कुमाँऊ में राज्य करके चले जाने वाले अङ्गरेजों ने भी कभी इस जाति की तरफ मुड़ कर नहीं देखा। अभी की सरकार तो अभी की ठहरी। हाल ही की बात है कि भारत सरकार पाकिस्तानी सरकार के आगे जूंट के लिये हाथ पसार रही थी। अच्छा हुआ जूंट मिल गई। नहीं ता क्या ठीक बेचारी पैर ही पसार देती। पर उसके सपूतों को भारी भारी टी० ए० खाकर भी कभी स्वप्न में भी यह बात नहीं दिखलाई दी कि लाखों नहीं तो हजारों की तादाद में बोरा लोग कुमाऊं में बोरे आदि बनाते हैं। अगर इन्हें या इनके गृह उद्योग को पनपाया जाता तो शायद रूखे सूखे पहाड़ सोने के सोते बन जाते। पर किसे पड़ी है जो मिट्टी को छूकर सोना बनाये? इस पर यह बड़ी बात है कि इतने करामाती बोरा भाई अछूत समझे जाते हैं। कुछ ही वर्षों पहिले उत्तर प्रदेश की विधान सभा के उपाध्यक्ष स्वर्गीय पूज्य हरगोविन्द पन्त जी ने उनके यहाँ उनके बनाये मन्दिर की प्रतिष्ठा करके उनका पानी चलाया-पर वह बात जिससे मनुष्यता चल पड़ती है वह तो चली ही नहीं। अब भी लोग उसके हाथ का पानी नहीं पीते हैं। मन्दिर की प्रतिष्ठा हो तो गई परन्तु मानव प्राणों की प्रतिष्ठा इस १२ सालों के स्वराज्य में भी न हो सकी। इतना ही नहीं-इसके दानों को तवे में भून कर नमक बनाते हैं और उसमें थोड़ा सा घी मिलाते हैं जिसे पहाड़ी भाई बड़े चाव से रोटियों के साथ खाते हैं यह नमक भंगधूसा कहलाता है। तू भी यार! बड़ी शेखी वधारता है। चाहे तुझे यही बात माती हो

Scanned with CamScanner

या आती हो। पर है यह तेरा वृथा अभिमान साही तेरी तो ऐसी कहावत है कि—

मैं बड़ा-मेरी कमर में भांगा का लड़ा। ॥६७७॥
सौल घुटै जैं के है रै।
साही की जैसी-क्या दम घुटाई हो रही है।
बड़ा ही निन्दनीय सा काम करना।

साही-पहाड़ के प्रत्येक नाज-तरकारी व फलों को साही बुरी तरह खा-पी कर नष्ट भ्रष्ट सा कर देती है। बन्दूक न होने से ग्रामीण भाई दूसरे समुचित साधनों से इस महा शत्रु का सामना करते हैं। यह रात में खेतों को उजाड़ा करती है। गांववाले इसके बिल को ढूंढ कर बिल के द्वार पर खूब झाड़-झकांड ठूंस कर भर देते हैं। फिर चरों ओर से बिल के द्वार को मिट्टी से लीप पोत देते हैं ताकि साही आग लग जाने की डर से भाग न जाये। आग लगा कर ही यह सारी करामात की जाती है। बिल इस प्रकार ढक दिया जाता है कि आग का धुआं भीतर ही भीतर को फैलता रहे। उस फैले हुए धुएं की असीम वेदना से साही सपरिवार इह लोक से परलोक को सिधार जाती है। पहाड़ी लोग साही को ब्राह्मण जाति का भी कहते हैं। क्योंकि इसका बिल स्वच्छ-साफ और निर्मल होता है पर कुछ हो दुष्ट को तो दण्ड दिया ही जाना चाहिए वह भी इतना भयंकर।

तुमतो भाई उसके प्राण लेकर भी नहीं मानने वाले हो मैं जानता हूं क्योंकि उसने तुमको जान बूझ कर इस विपत्ति की धधकती हुई आगमें डाला है? तब तुम भी अवसर पा जाने पर क्यों गंवाओगे? उसे ऐसा नहीं चाहिए था तुम ऐसा कह रहे हो। मैं तो उसका दम इस तरह से घोटोंगा कि जो लोग कहेंगे कि—

साही की जैसी-क्या दम घुटाई हो रही है। ॥६७८॥

मैंण लागो चैत-नरै लागी मैत ।
महिना लगा चैत्र-अबसेरी लगी पीहर ।

सुअसर पर आई किसी की याद-प्राणों को आकुलता से भर देती है।

चैत्र का महिना सारे-कुमांऊ के लिए बड़ा सौभाग्य शाली सा महिना होता है। न जाने कब से ! यह महिना कुमाऊं के लिए बडी पवित्र वेदना व प्यार के द्वार खोलता है। श्री सम्पन्न हो या दीन हीन। कोई कैसी ही अवस्था-व्यवस्था में हो। इस महिने में किसी न किसी दिन भाई अपनी बहिन से मिलने के लिए अवश्य जाता है। इस अनोखे मिलन को (भिटौली) कहत हैं। इस भेट के अवसर पर भेट में पकवान, बताशे, नया कपड़ा और सामर्थ्य के अनुसार द्रव्य भी भाई बहिन को भेंट के लिए ले जाता है। जो कुछ भी नहीं ले जा सकता है वह भी रोली और एक गुड़ की डली ले जा कर अपनी बहिन के पांव छू कर गले लिपट आता है। चैत्र का सारा महिना बड़े-बड़े सुरमाओं तक का कलेजा आलहद से कम्पायमान कर देता है। इस महिने में इस (भिटौली) पर एक गीत गाया जाता है। जिसे (ऋतु रैंण) कहते हैं। इस गीत में भाई-बहिन का पवित्र स्नेह बहाया सा गया है साथ ही माता की असीम ममता व वेदना भी इतना ही नहीं यह गीत कुमांऊ के प्राकृतिक दृश्यों का भी गुणगान करता है तथा पक्षियों का भी वर्णन इस गीत में सीधे सादे शब्दों में वर्णन किया हुआ है। यह अपने ढंग का एक बड़ा ही विचित्र 'ग्राम्य गीत' है इस गीत के जोड़ का 'ग्राम्यगीत' शायद ही संसार के किसी ग्राम्य गीत में हो। क्योंकि भाई-बहिन का ही पवित्र प्रेम वर्णन है। इस गीत को सारे महिने ढोली लोग गांव-गाँव नगर-नगर द्वार-द्वार जाकर गाते हैं और गृहस्थियों से कुछ ब.ले में पाकर अपना और परिवार का भरण पोषण करते हैं। यह एक प्रकार से अपना हक सा समझते हैं।

क्या आऊं क्या जाऊं तुमने कह दिया तुम नहीं आये। क्या

आता यहाँ घरवाली ने सारा घर सिर पर सा उठा रक्खा है। पल भर को भी चैन नहीं ले रही है कहती है आधा महिना इस चैत्र का चला गया मेरा भाई मुझे भेटने के लिए नहीं आया जब कि पडौस की बहिनों के भाई चैत्र लगते ही भेंट करके चले गये हैं। मैं उसे कितना ही ढांढस बंधाता हूं पर वह तड़पड़ा सी उठती है। मेरा कहना उसे बिष सा लगता है। तभी तो हमारे गाँव के बुढ़े ये कहावत कह गये हैं कि—

महिना लगा चैत्र—अवसेरी लगी पीहर।

इतना ही नहीं। भेटौली पर आए बताशे पास-पडौस-इष्ट मित्रों के यहां भी भेट स्वरूप भेजे जाते हैं जिसे पहडी में (वैणा) कहते हैं। कितना आहलाद भरती होगी यह भेटौली समझिए तो! सौभाग्यशाली-फले फूले गृहस्थ तो—घर को भी लीप-पोत—साफ सुथरा कर के उसे भेटौल देते हैं। बहुधा भाई-बहिन के यहां खाना भी खाते हैं ताकि स्नेह ममता और मिलन की गांठ सी पडी रहे। ॥६७९॥

एक भालू का डरैलै-भूड़ फैंटी-वां तीन भालू।

एक भालू के डर से झाड़ी में पैठा-वहां तीन भालू।

नमाज छुडाने गये-रोजे गले पड़े।

अकारन ही विपत में पडना।

क्या करूं? भाग्य का फेर है। मैंने सोचा था उनसे लेन-देन करके मैं सुख से रहूंगा-पर वे मेरे लिए प्राण लेवा निकले। इस धूर्त से बच कर उनकी गोद में शरण ली थी, पर वे-वे ही निकले। उन्होंने तो मेरे लिए ऐसी कहावत सी कर दी कि—

एक भालू के डर से झाडी में पैठा-वहाँ तीन भालू ॥६८०॥

जब बिरालू नी हुनो-तब मूसा नाचनी।

जब बिल्ली नहीं होती-तब चूहे नाचते हैं।

जब कोई सिर पर नहीं रहता है तब शैतान सिर पर सवार

रहता है।

इसका तो कोई समझाने वाला है ही नहीं-तब जो जी में आता है वही करता है। इसका कोई समझाने वाला जो होता तो क्यों यह ऐसे काम करता, जिससे सारे मुहल्ले की बदनामी होती। इसे तो ऐसा वैसा करते न लाज न शरम! भरम किस चिड़िया का नाम है यह जानता ही नहीं। जब देखो तब उतपात किसी का कहा मानता ही नहीं न किसी को कुछ समझता ही है। इसके ही लिए तो शायद यह कहावत कही गई है कि—

जब बिल्ली नहीं होती-तब चूहे नाचते हैं। ॥६८१॥

मडुवा राजो-जब सेंको तब ताजो।

मडुवा राजा-जबसेंको तब ताजा।

भली बात भली ही लगती है चाहे कभी की हो।

तुम्हारे मुख की बात तो इतनी मीठी और ताजी सी होती है कि बार-बार सुन लेने पर भी उसकी मिठास और ताजगी में कुछ भी अन्तर नहीं पडता। मैं सच कहता हूं तुम्हारी बात पहाडी मडुवे की जैसी रोटी है कि जब तुमने कही तब नई उसकी ऐसी कहावत है कि—

मडुवा राजा-जब सेंको तब ताजा ॥५८२॥

दैवेकी मार-खबर न सार।

दैव की मार-खबर न सार।

विधि का दण्ड-मूक दण्ड होता है।

अरे यार! मैं तो अपने जाने बड़ा जानकार सा बना रहता था, पर न जाने कैसे चूक गया। उन्होंने रुपये दिए और मैंने गिन कर वहीं पर रख दिये, उनसे बातों में ऐसा उलझा कि सारी सुलझी हुई उलझन फिर उलझ गई और मैं वहाँ पर लोगों का मुंह ताकते रह गया न जाने कौन और कब रुपये उठा ले गया पता ही न चला तभी तो हमारे बुजुर्ग कहावत कह गये हैं कि—

दैव की मार- खबर न सार। ॥६८३॥

Scanned with CamScanner

सौण सपूत-न भदौ कपूत ।

सावन सपूत–न भादो कपूत ।

कुछ भी अन्तर सा न पड़ना चाहे कुछ भी हो ।

सावन सूखे न भादो हरे ।

इसका क्या है ? चाहे इससे आप लाख कहें । पर यह अपनी करनी करके ही छोड़ेगा । आप खाली ही इसे उपदेश करते हैं । अपना सा सपना है ये आप माने चाहे न माने । ये कहावत ऐसो ही के लिये कही गई है कि—

सावन सपूत-नभादो कपूत । ॥६८४॥

ठुलो गोरू लूण नुकावौ-नानो थोल चाटौ ।

बड़ी गाय-लौन चाबे-छोटी थथूना चाटे ।

निर्बल खिसियाने के सिवा और कुछ नहीं कर सकता है ।

क्या करें ! उन से निपटने के लिये अपने को सामर्थ्य नहीं ठहरी-इस लिये उन के मन में जो आया उन्होने किया ! उन के सामने तो भाई ? मेरी ऐसी कहावत है कि—

बड़ी गाय लौन चाबे-छोटी थथूना चाटे । ६८५ ॥

पाणीको सास-धुतड़ौ को बास ।

जहां पानी को सांस-वहीं मेढ़क का बास ।

स्वभाव के अनुसार ही प्रकृति-प्रकृति में रमती है ।

यह गांव घर छोड़ कर कहां जाऊ ! तू ही बतला ! यहां तो इतना सहारा तो है कि-मुट्ठी दो मुट्ठी जमीन की मिट्टी तो है-दूसरी जगह इतना भी मरोसा नहीं दिखता है ? जाने को, क्या हो रहा है ! अभी चला जाऊँ-पर कुछ मरोसा तो हो-या खाली अपना सा मुँह ले कर यहीं आने के लिये जाऊँ ! कह तो ? भाई ? हमारे गांव के सयाने एक कहावत कह गये हैं कि—

जहां पानी को साँस-वहीं मढ़ेक का बास । ६८६ ॥

Scanned with CamScanner

जां तक भाटे लै पाग वांधी-तां तक पैंठे उठी।

जब तक भाटने पाग बांधी-तव तक पैंठ ही उठी !

खाली ठसके ठस्से में अवसर निकाल ड़ालना।

मैं स्टेशन कब से टिकट लेकर बैठा रहा-वह आये ही नहीं-न जाने कितना बनाव शृगांर कर रहे थे-जब दुलहे की तरह बन सभर कर स्टेशन पहुंचे-तो गाड़ी छूट चूकी थी। क्या करते सारा बनाव शृगांर रह गया बल्के उस में धूल उड़ने लगी-में क्या करता ? उन्ही ने देर की और ऐसी कहावत बना ली कि—

जब तक भाटने पाग बांधी-तव तक पैंठ ही उठी। ६८७ ॥

तुमडी फूटी-लस्करै बिदा।

तूमड़ी फूटी-लश्कर बिदा।

अचानक में ही कोई घटना सी घट जाना।

सभी कुछ धरे का धरा ही रह गया, सारी उम्र जोड़ते ही मरा-न खा सका न पहन पी सका ? और न किसी को कुछ ले-दे ही सका ! वड़ा जोडू कंकाल मरा ? अब कोई बतलाये ? इतना सारा जोड़ कर इसे क्या मिला, उसके साथ क्या गया ? प्राण गये, सारा जोड गया। तभी तो बड़े सयाने कहावत कह गये हैं कि।

तूमडी फूटी—लश्कर विदा। ॥६८८॥

मसा आलौ तोली छुटालौ-नि जाणी नौ टका और डंडयालौ।

मामू आयेंगे तोली छुटायेंगे—नहीं जानी-नौ टके और और डांड पड़ायेंगे।

दूसरों का भरोसा करना उलटे दुःखों का कारण हो जाता है।

तौली पीतल की डेकची सी।

लो इससे कहत हैं अभागा ! बेचारे ने दण्ड से बचने के लिए इन का मुँह ताका इन्होंने उसकी सारी आशा पर ही पानी फेर दिया। कहां से उस शरण में आये की बात रखते और जो उसे दूना दण्ड करवा दिया। अच्छी भलमनसाहत हुई। इन्होंने तो उस बेचारे की ऐसी कहावत सी कर दी कि।

Scanned with CamScanner

माँमू आयेंगे तोली छुटायेंगे नहीं जानी नौ टके और डाँड पडायेंगे।

॥६८९॥

बूढ़ो बल्द आंपू लागों न औरन किणी लागन दों।

बुढ़ा सांड न आप लगे न औरों को लगने दे।

न आप कर सके न औरों को करने दे।

तेरा भी कुछ अजीब चलन है। न तो तू दूसरों को कुछ करने देता है न आप ही कुछ करामात सी करके दिखलाता है। खाली डाह द्वैष से ही जलकर राख हुआ जा रहा है। न तुझमें वह शक्ति है न पहिले का सा कुछ तेरा रोब ही है। खाली बातें मारता है। मुझसे जो तू सब पूछता है तो तेरा ऐसा किस्सा हो गया है कि—

बुढ़ा सांड न आप लगे न औरों को लगने दे। ॥६९०॥

तोपो-तोपो के छांस-बियों-बियों को रास।

बूंद-बूंद करके छांछ-दाना-दाना करके रास।

बूंद-बूंद ते घट भरे-टपकत रीतो होय।

इस समय नाज का ढ़ेर देखकर दानों को उठाने में लजा सा रहा है तुझे खबर है। इन्हीं दानों से ढ़ेर खड़ा होता है और वह आड़े समय पर काम आता है। समझा? तभी तो हमारे गांव के बुढ़े कहावत कह गये हैं कि—

बूंद-बूंद करके छांछ-दाना-दाना करके रास। ॥६९१॥

भैंस मारी थोरो-कुड़ो ढाली ओड़ो।

भैंस मार पड़िया-घर ढहा कर ओढ़ा।

बनी बनाई बात को बिगाड़ना, उलटे बाँस बरेली।

तेरा तो दिमांग फिर सा गया है नहीं तो ऐसी उल्टी-उल्टी बातें क्यों करता। तूने अभी तक जितने भी काम किये तू ही बतला एक भी ठीक किया? तुझसा तो पागल, पागल खाने में भी नहीं होगा। इस पर भी यह समझता है कि मुझसा होश्यार दूसरा क्या

Scanned with CamScanner

होगा। होगा तेरी ऐसी की तैसी। तेरे काम की ऐसी कहावत है कि-

भैंस मार पड़िया-घर ढहा कर ओड़ा। ॥६९२॥

नाज खाणो साग-राजा खाना मांग।

नाज खाना साग-राजा खाना मांग।

घी खाना शक्कर से- खपती सी बात करना।

देख सोच समझ कर काम कर-नहीं तो पछतायेगा। तू जान इतनी घूस मत खा कि कभी पकड़ा जाये तो-सीधा जाये। यह राज काज के मामले है, खाना ही है तो ढ़ंग से खा। जो पच सके। अपच हो गई तो किस काम का खाना हुआ तू ही कह ? तभी तो हमारे गांव में एक कहावत कही जाती है कि—

नाज खाना साग- राजा खाना मांग। ॥६९३॥

दिल्ली की दिल वाली-मुखि चुपड़ी पेट खाली।

दिल्ली की दिल वाली-मुख चिकना पेट खाली।

गौरूपा-व्याघ्र कर्मणा

चिकनी-चुपडी बातों का जाल सा फैला रखना।

चिकनी-चुपड़ी बातों में कभी भूल कर भी न फंसना-तेरे कान खोल दे रहा हूं। आगे तू जाने तेरा काम। वे मीठी-मीठी बातें करके ही मन मोह लेते हैं। फिर कभी ऐसा धक्का देते हैं कि आँखों के सामने अंधेरा ही दिखाई देता है। मैं तुझसे कहता हूँ और हाथ जोड़कर कहता हूँ कि-उनकी ऐसी पहाड़ी कहावत सी है कि—

दिल्ली की दिल वाली-मुख चिकना पेट खाली। ॥६९४॥

सबै स्यालना का सींग नी हुमा।

सभी सियारों के सींग नहीं होते।

विरला ही भाग्यवान सरदार सा हुआ करता है।

सब नर होत न एक सर।

पहाड़ी कहावत है कि-एक विशेष सियार के सिरपर सींग

होता है। सींग वाला सियार सियारों का राजा हुआ करता है। उसे पहाड़ी लोग 'स्याल सींगी राजो' कहते हैं। पहिले-पहिले वही बोलता है तब और गिरोह के सियार चिल्लाते हैं।

उनके लड़के की क्या बात कहते हो। वह तो बड़ा होनहार गुणवान और बुद्धिमान है। उस जैसा लड़का तो दिया जलाकर ढूंढनेसे भी नहीं मिलेगा। अपने २ पुण्य हैं भाई! तभी वैसी तो संतति हमारी तुम्हारी जो नहीं है, हमारे बुढ़े खाली बक थोड़ी गये हैं वल्कि पते की बात कह गये हैं कि—

सभी सियारों के-सींग नहीं होते। ६९५॥

रुपैं की यारी-दवाईनको शरीर के रौ।

रुपयों की यारी-दवाईयों का शरीर क्या रहे।

निभने वाली बात ही सदा निभा करती है।

उन्होंने उनके साथ याराना धराना क्या जोड़ा-सिर्फ रुपयों के के लिए जब तक वे रुपये-पैसे से सहायता करते थे तब तक तो ये दो देह एक प्राण बने फिरते थे। अव उन्होंने रुपये टके से हाथ खींचा तो इन्होंने भी यारी से हाथ खींच लिया। चलो टटाँ मिटा, तभी तो हमारे गाव के दाने सयाने लोग एक कहावत कह गये हैं कि—

रुपयों की यारी-दवाइयों का शरीर क्या रहे। ॥६९६॥

म्यार चेली की कुशल-मुसलै-मुसल

मेरी लड़की की कुशल-मूसल ही मूसल।

१ लट्ठ मूसल-क्षेम कुशल। २ बड़ी खेद जनक सी बात।

क्या करूं? रोना आ रहा है कि ऐसा मेरा भाग्य। एक लड़की थी। उनका व्याह किया वह अपने ससुराल जाकर फली फूली थी। हम दोनों को बड़ा हर्ष सा होगया था कि चलो लड़का न हुआ तो लड़की तो फली-फूली। कल चिट्ठी आई है कि उसका वह लड़का उसकी गोद सनी कर गया। उस समय से न उसकी मां

को चैन है न मुझे ही। मेरी तो ऐसी कहावत सी हो गई है कि—

मेरी लडकी की कुशल–मूसल ही मूसल।

या इतना काम।काज हो कि मेहनत के मारे कमर सीधी न कर पाये। ॥६९७॥

एक दाँत को मोल करो–बत्तीस खोल दिया।

एक दांत का जो मोल किया–बत्तीस खोल दिए।

अपना भरम सा खोल दिखलाना।

उसे तो कुछ लाज ही नहीं है। मैं ये क्या कह रहा हूँ और किसे कह रहा हूँ उसे कुछ भी सोच-अफसोच नहीं न संकोच।

वह तो इतना नर पिशाच और नराधम है कि तुम से क्या कहूँ। दूसरे का धन खसोट लेने में एकत है। उसकी तो ऐसी कहावत है कि—

एक दांत का जो मोल किया–बतीस।खोल दिए। ॥७९८॥

अजाणेलै खै भांग–तली मुख माथी क्रै टांग।

अनजाने ने खाई भांग–नीचे मुख ऊपर टांग।

अनजाने में अपराध हो पड़ना बड़ा भयंकर सा होता है।

मैं इससे रोज कहता था कि तू उसकी संगत में न पड़ पर ये कहां मांनने वाला ठहरा पर विधाता का ऐसा विधान–निदान इसके ही ऊपर उसकी संगत-रंगत चढ़ा बैठी वह तो अच्छा हुआ जो एक दम खबर हो गई नहीं तो होता श्मशान। अजी कहा की कह रहे हो। अगर बैद्य जी कै न करवाते तो होते लल्ला। यमराज के घर उस धूर्त का क्या जाता है वह तो ऐसी ही धूर्ततायें किया करता है। पर यहां तो हो गया था सब चौपट। तभी तो गांव के बड़े बुड़े लोग कहावत कह गये हैं कि।

अनजाने ने खाई भांग–नीचे मुख ऊपर टाँग ॥६९९॥

भला-भला मुख देखौ-कातरी की लाज।

भले-भले मुख देखें-कत्तर से लहेंगे की लाज।

Scanned with CamScanner

लाज रखने में भी असहाय सी।

कातरी—लहंगा कत्तर—कत्तर सा बत्तर।

क्या करूं मुन्नी की मां! मुझे तो बाहर जाने में ही लाज सी लगती है। कहने को तो मैं बड़े घर की बहू बेटी समझी जाती हूं। पर मैं ही जानती हूं मेरा क्या हाल है। न तन को ढकने को कपड़ा न पेट भरने का कोई सहारा। जब घर से बाहर निकलती हूं तो आने जाने में सभी मुख देखते हैं पर मैं लाज से भरी सी जाती हूं। उस समय मेरी ऐसी कहावत सी हो जाती है कि—

भले-भले मुख देखें-कत्तर से लहेंगे की लाज। ॥७००॥

लूटा का धान-बू-बू को सराध

लूट के धान तो-पितामह का श्राद्ध।

ताऊ का माल लुटाऊ।

उस का क्या जाता है? जो जी में आये करे! उस के हाथ तो हराम की सी कमाई लग रही है? उड़ाये-फूके- यार लोगों में बांटे हमारा क्या? ऐसे मैं भी जब चार दिन धू फू नहीं कर सकेगा तो कब करेगा? तुम्हीं कहो? उस की तो इस समय ऐसी कहावत सी हो रही है कि—

लूट के धान तो-पितामह का श्राद्ध। ७०१ ॥

पौ भरी चून-तै बारी में डेरों।

पाव भर चून-तिबारी में डेरा।

पाव भर आटा और पुल पर रसोई।

अति इतराना सा।

उन की भी क्या सूझ-बूझ है कुछ न पूछो? रात को दिन और दिन को रात समझे बैठे हैं? गांठ में चार पैसें क्या है-उछल रहे हैं? जाने कहो? कुबेर हैं? जहां भी जब भी जिधर भी देखो अपने ही को देखते हैं? मारे गुमान से भरे जारहे हैं? मेरी समझ

से तो हमारे बड़े बुढ़े-ये कहावत ऐसी ही के लिये कह गये होगें कि—

पाव भर चून-तिबारी में डेरा। ७०२ ॥

दिन में गुड़ी गुड़ नी खावो–रात गुड़ी गुल मिणा चाटौ।

दिन में गुड़ वाला गुड़ न खाये–रात को गुड़वाला गुड़ लपेटी चाटे।

थोड़ी-थोड़ी बातों के लिए तरस सा रहना।

इसका भी अजीव हिसाब किताब है इतनी बड़ी दुकान के होते हुए भी ये हर एक चीज़ के लिए तरसता सा रहता है। मैंने इससे कई बार कह दिया है कि तेरे जो जी में आता या भाता है खूब मन भर करके खा लिया कर, पर ये मानता ही नहीं और रात को चूरा-चारी खाया करता है। अब मैं क्या करूं, तुम्हीं कहो ? इसने तो अपनी ऐसी कहावत सी बना रक्खी है कि—

दिन में गुड़ वाला गुड़ न खाये, रातको गुड़ वाला गुड़ लपेटी चाटे। ॥७०३॥

उड़ानी चून–पितरना का नाम।

उड़ने वाले चूने–पितरों के नाम।

मरी बछिया–ब्राह्मण के नाम।

असहाय अवस्था का लाभ उठाना।

अरे भईया ! बापरे-बाप तुमसे जाने कौन सकेगा ? जो तुमसे होड़ करेगा। अपना सिर ही धूनेगा। पागल होगा, जो तुम्हारी बराबरी के लिए कमर कसेगा। तुम हो कि हर एक बात को सभाल कर रखते हो। कौन है जो दूसरा इतनी होश्यारी से काम ले सकें। मैं तो तुम्हारी चतुराई का कायल हूँ कायल ! कुछ तो हाथ से गवाते, तुमने तो ऐसी कहावत कर दी कि—

उड़ने वाला चून–पितरों के नाम ॥७०४॥

Scanned with CamScanner

बालो नी देखौ आपुणो घर-पौण नी देखौ परायो घर।
बाला न देखे अपना घर-पाहुना न देखे पराया घर।

सकल भूमि गोपाल की-या में अटक कहाय।

अरे रहने भी दे चल तू अपना काम कर-आगया तो आगया! अपने भाग्य का वह भी ले जायेगा! कहीं बेचारे को आसरा नहीं मिला होगा तभी तो हमारे द्वार पर आ ठहरा हैं? तू भी समझ लेना कोई अपना ही पाहुना है! कर दे तुझ से जितनी आव भगत हो सकती है? झगड़ा गया? आदमी होगा तो मरते तक याद रखेगा कि कहीं गया था! इस बेचारे की तो इस समय ऐसी कहावत सी हो रही है कि—

बाला न देखे अपना घर-पाहुना न देखे पराया घर। ७०५॥

मेरी छाण ऐ जाओ-बल्द बाग लिजाओ।
मेरी थान-थान आ जाये-बैल को बाघ ले जाये।

आप काज-महा काज।

किसी प्रकार से हो अपना स्वार्थ सिद्ध हो जाये।

मुझे तो अपनो की चिन्ता है! यह भी कोई मेला-ठेला ठहरा जिस में मेले वालों को जान से ही हाथ धोने पड़ें! अपने बाल बच्चे किसी प्रकार से हसी खुशी राजी प्रसन्न अपने घर पहुंच जायें तो मैं समझूगीं हो गया, मेरा मेला। मेले की खबरो से तो प्राण पखेरू उड़े से जा रहे हैं। तुझ से सच कहती हूँ इस समय मेरी ऐसी कहावत सी हो रही है कि—

मेरी थान-थान आ जाये-बैल को बाघ ले जाये। ७०६॥

रांडन को पांजो-गौं पड़ौ बांजो।
रांडो का पांजा-गांव पडेगा बांजा।

मूल्यवान वस्तुओं का संचय करना ही बुद्धिमानी का कार्य हुआ करता है।

तुम तो ऐसी बातों का ढ़ेर लगा रहे हो कि-जिस से न कुछ बचे ही और न कुछ हाथ ही लगे! बटोरना भी होता है तं कुछ तो होता है? खाली क्या बटोरना! औरत ही लानी थी तो औरत लाते इन रांड़ बेवाओं से क्या घर गृहस्थि चलेगी! तुम्हीं कहो? ये तो घर करने से रही चाहे तुम मानो या न मानो? हाँ वैसे पास पड़ोस-गांव घर इन सी औरतों से भरना है तो-तो दूसरी बात है! अगर ऐसा ही करोगे तो-ऐसी हो कहावत सी करोगे कि—

रांडो का पांजा-गांव पड़ेगा बांजा। ७०७॥

बांजा-उजाड़-बनजर।

चुगली लागी जौ-बिनती नी लागौ।

चुगली लग जाए। बिन्ती न लगे।

मनुष्य! थोडे ही में धोखा खा जाता है।

मैं तुगसे सच कहता हूं, वे अबश्य ही मेरा कार्य कर देना चाह रहे थे—पर न जाने किसने उन्हें उल्टी पट्टी पढ़ा दी कि, वे अब मेरी प्रार्थना-अनुनय-बिनय कुछ भी नहीं सुनना चाह रहे हैं। ईश्वर जाने! ऐसी चुगली न जाने किसने उनसे खा दी कि--वे मुझे खाने को जैसा आ रहे हैं। तभी तो हमारे बड़े बुढ़े ये कहावत कहा करते थे कि—

चुगली लग जाए-बिन्ती न लगे। ७०८॥

घ्वाड़ा जुजीण-दुबको नाश।

घोड़े जूझें-दूब का नाश।

लड़े लोह पाहन दोउ। बीच रूई जलि जाय।

अशान्ति-शान्ति को भी शान्त नहीं रखती।

बेमतलब लड पडे-मै तो हाथ जोंड़ते रहा और वे--और-और

उबल पड़े । उनके उबाल खाने से बच्चे के जों चोट आ गई ! मैंने उस तरफ देखा ही नहीं ! वे लड़ते-मरते जों भी करते-पर बच्चे के नाहक को चोट आई; क्या करूं बड़ा दुःखी सा हो रहा हूं। ईश्वर के ही हाथ लाज है, रखदे तो रखदे । तभी तो हमारे गांव के बूढ़े कहा करते थे कि—

घोड़े जूझे-दूब का नाश ॥ ७०९ ॥

नर कुनी दिन गे-दिन कुनी नर गे ।
नर कहें दिन गये-दिन कहें नर गये ।
इस चला-चली में सभी गये ।

भाई अपनी-अपनी समझ और बुद्धि की बात है । वह मुझे नाम रखता है और मैं उसे । वह कहता है इसने मेरा सारा जीवन खराब कर दिया है । मैं कहता हूँ उसने मेरे सारे मौज शौक के दिन लूट लिए । इस तरह से हम दोनों के बीच कोई बीच बचाव ही नहीं रहा, दिन और जीवन उसके भी और मेरे भी एक पहेली से होगये हैं ।

दिन भी बीत रहे हैं और जीवन भी । हम दोनों की कुबिद्धि से एक ऐसी कहावत सी हो गई है कि—

नर कहें दिन गये-दिन कहें नर गये । ॥७१०॥

चेलो बड़ौ आपुणा घर-पैंस बड़ों बिराणा घर ।
लड़का बढ़े अपने घर-पैंसा बढ़े विरानने घर ।

कुछ काम अपने हाथों से बनते हैं और कुछ पराये हाथों से ।

मैंमे इनसे उसी दिन कह दिया था कि अभी लडका-लडका ही है इसे उतनी दूर मत भेजो, पर इन्होंने भेज ही दिया, अब जब इन्होंने जानी कि वहां उतनी दूर उसकी देख रेख अच्छी प्रकर से नहीं हो रही है तो बेचारे बड़े खिन्न दुःखी और अनमने से हुए बैठे

हैं। लडका वहां से बार-बार पत्र भेज रहा है कि मुझे घर बुलालो नहीं तो में कहीं और जगह भाग जाऊंगा। अब तक ये बड़े हैरान परेशान से हुए बैठे हैं। मैं इनसे कह रहा हूं कि हमारे सयाने मूर्ख थोडी ही थे जो इतनी बडी बात एक छोटी सी कहावत में कह गये हैं कि—

लडका बढ़े आपने घर-पैसा बढ़े बिराने घर। ७११॥

गोरू मरौ तौ मर-बाछो मरौ तौ मर-तू सेर भर दूध दिजी कर

गाय मरे तो मरे-बछिया मरे तो मरे-तू सेर भर दूध दिया करे।

अपना लेना खरा-दूसरे का देना झूठा।

अमानुषिक अत्याचार सा।

आप तो उसे देहाती गंवारा सा समझ कर ऐसी बेढ़ब और टेढ़ी शर्तें लिखवा रहें कि क्या कहा जाये। ईश्वर की इच्छा किसने जानी न जाने कलको क्या हो जाये! शर्तें भी लिखवानी है तो ऐसी भी क्या? जिसमें उस बेचारे को कुछ भी छूट न रहें। आप उसकी सहायता कर रहे हैं या उसे अपढ़ और भोला समझ कर बुरी तरह से अपने शर्तों के जाल में लपेट रहे हैं। मेरे जाने तो आप एक ऐसी कहावत सी कर रहे हैं कि—

गाय मरे तो मरे-बछिया मरे तो मरे-तू सेर भर दूध दिया करे। ॥७१२॥

हाथ सूखो-जोगी भूखो।

हाथ सूखा-जोगी भूखा।

दो तरफा मार सी।

तुम से क्या कहूं? मेरी करनी मुझ को ले गई। न इधर देख सका न उधर सभाल सका। अब मुंह लटकाये सोच में बैठा हूँ। दो हाथ हो कर मैंने दोनों हाथों से गंवाया। और अपनी ऐसी कहावत सी फिर डाली कि— हाथ सूखा जोगी भूखा। ॥७१३॥

Scanned with CamScanner

रूपैं की रीस नै-करमें की बांट नैं।
रुपये की रीस नहीं--करम की बांट नहीं।
अपना-अपना कर्म और अपना-अपना भाग्य है।

तुम तो पागल हो जो उस के साथ शत्रुता कर रहे हो? अरे! भाई अपना-अपना भाग्य है। उस के भाग्य में धन है कमा-खा रहा है तुम उस की ईर्षा क्यों कर रहे हो? तुम भी कर्म करो उसी की तरह परिश्रम करो कष्ट झेलो। उस से भी अच्छे बन जाओ, और अच्छे बन जाओ, बहुत अच्छे बन जाओ। दूसरों का द्वेष नहीं करना चाहिये। तभी तो हमारे बूढ़े ऐसी कहावत कह गये हैं कि—

रुपये की रीस नहीं-करम की बांट नहीं। ॥७१४॥

जो बातो सरौ-वीक हाथ चुपड़ो हूं।
जो बाती सरकावे-उस का हाथ चिकना होता ही है।
भला कर के भला ही होता है।

तुम तो मुझ को कुछ समझते ही नहीं हो। मैं तो तुम्हें अपना पड़ोसी और गरीब आदमी समझ कर काम पर लगा रहा हूं। काम करो-पैंसा लो। ऐसा कभी मत समझो कि मैं काम करा करके तुम को यों ही कोरा टरका दूंगा। नहीं-नहीं मैं ऐसा कभी नहीं करूंगा। न किसी से करना ही चाये। काम करने पर कुछ न कुछ तो काम करने वाले को देना ही चाहिये। क्यों कि एक कहावत है कि—

जो बाती सरकाये-उस का हाथ चिकना होता ही है। ॥७१५॥

कैलै खायो खासुमासु-कैका आया पाथणा आसुं।
कोई खुसमुस खाये-किसी के पाथते आंसू आये।
मजा मारें गाजी मियां-धक्का सहे डफाली।
सभी कुछ भाग्यवश ही होता है।

लो भाई! काम धन्दा करते-करते मैं मरा जा रहा हूं और ये

Scanned with CamScanner

हैं कि कारोबार से मुख मोड़े बैठे हैं। जाने कहो मैं कोई बड़ा भारी अपराध कर रहा हूं। इतना न कमाऊ तो ये कैसे इतने छैला बने फिरते ? पर इन्हों तो समझ ही नहीं कि भाई ! आखिर जितना मै उड़ा फूक रहा हूं ये सब आ कहाँ से रहा है ! इन्हो ने तो मेरी ऐसी कहावत कर दी है कि—

कोई खुसमुस खाये-किसी के पाथते आंसू आये। ७१६ ॥

सल्यूं सर देसी-पिलगट परदेसी।
टिड्डीयां स्वदेशी-पिलगट। पर देशी।
गुड़ खायें-गुलगुलों से परहेज।
बिना बात के बात निकालना।
सल्यूं-टिड्डी-पिलगट-अखफुड्डवा।

तुम भी यार ! बात बनाने में एक ही हो। उन में और इन में अन्तर ही क्या है ? पर तुम ने तो कमाल ही कर दिया-उन दोनों के बीच में आकाश पाताल का सा अन्तर बतला दिया। मैं तो सुन कर सुन्न सा रह गया। तुम ने तो इतना बड़ा अन्तर ढूंढ़ निकाला कि अब क्या कहूँ मुझ से पूछते हो तो तुम ने ऐसी कहावत सी कर दी कि— टिड्डीयां स्वदेशी-पिलगट परदेशी। ॥७१७॥

छोड़ दियो तौ धोखो के-लूट पड़ौ तो लेखो के।
छोड़ दिया तो धोखा क्या-लूट पड़ी तो लेखा क्या ?

ऐसी बात सी हो जाना जिसका कुछ धोखा ही न रहे।

जाने दीजिये। धीरज रखिये ! जो हीना था हो गया-ये बला ती सारे शहर पर ही आई और छाई-एक तुम्हीं पर थोड़ी आई। सभी का कुछ न कुछ तो लूटा ही गया। सभी बरबाद और तवाह हुये। सभी का एक सा ही हाल हुआ। शान्ति रखिये। क्यों कि हमारे गाँव घर के बुजुर्ग एक बड़ी कहावत कह गये हैं कि—

छोड़ दिया तो धोखा क्या-लूट पड़ी तो लेखा क्या ? ॥७१८॥

Scanned with CamScanner

जो नी धोवो आपुणो मुख-वी किणी के हैइयको सुख।
जो न धो सके अपना मुख-उसको हुए का क्या सुख ?

बड़ा ही निकम्मा सा होना।

अरे ! तू लडका है या सिर पड़ा ? इतना अधोरी कि जो अपना मुख भी नहीं धो सकता है। अलीत-पलीत कहीं का ? मुझे तो आश्चर्य सा लगाता है कि क्यों तू ने मानुष की देह पाई ! मेरी समझ से तो तुझ जैसों ही के लिये मे कहावत कही गई होगी कि—

जो न धो सके अपना मुख-उस को हुए का क्या सुख ? ७१६ ॥

रांड़को साँड़-सौदागर को घोड़ो-खालो जै भौत-कमाल जै थोड़ो।
रांड़ का सांड़-सौदागर का घोड़ा-खाये जो बहुत-कमाये जो थोड़ा।

कर्मरत रहने वाले जीव-बिरले ही होते हैं।

सांड़ से यहां पर अभिप्राय-रांड के लड़के से हैं। पहाड़ी भाषा में एक प्रयोग है कि—राँड का सा सांड़। उन्हों ने दो सौ को जो घोड़ा लिया और उसे बैठे-बैठे खिला गये यह सौ से ऊपर आखिर बड़े ही सौदागर ठहरे-उन की ऐसी ही बातों से तो शोभा है। नहीं तो अपने लिये कौन नहीं कमाता खाता ? क्या हुआ कभी सवारी करली तो करली या कभी इधर-उधर हाकिमों की सवारी के लिये दे दिया तो दे दिया नहीं तो अस्तबल में बंधा-बंधा हिनहिनाते रहा तभी तो हमारे बड़े पुरखे एक कहावत कह गये हैं कि—

रांड का सांड-सौदागर का घोड़ा-खाये जो बहुत-कमाये जो थोड़ा।
॥७२०॥

स्वर्ग सों टेक नै-धरम सौं छेक नै।
स्वर्ग को टेक नहीं-धर्म को छेक नहीं।

छेक—छेका—रोंक

जिस कार्य में कोई रोक टोक न हो।

Scanned with CamScanner

तुम करना जो चाहते हो तो-तुरन्त कर दो-क्यों कि भले कामों के करने में बहुत बिलम्ब और आगा पीछा नहीं सोचना चाहिये। नहीं तो काल उस के रस को पी जाता है और खाली भूस छोड़ जाता है। तभी हमारे गाँव घर में यह कहावत कहीं जाती हैं कि—

स्वर्ग को टेक नहीं-धर्म को छेक नहीं। ॥७२१॥

बिन गुरु बाट नै-बिन कौड़ी हाट नै।

गुरु बिना बाट नहीं-कौड़ी बिना हाट नहीं।

आसरा-सहारा कुछ न कुछ चाहिये।

अरे भाई क्या हाट आऊं? पास पल्ले धेला छदाम भी नहीं -खाली हाट जा कर क्यों सांस फुलाओं? कुछ गांठ में होता तो तुम्हारे साथ साथ हो आता और कुछ खरीद भी लाता। खाली हाथों क्या आऊं क्या जाऊँ तुम्हीं कहो? मेरी तो इन दिनों ऐसी कहावत हो रही है कि—

गुरु बिना बाट नहीं-कौड़ी बिना हाट नहीं। ॥७२२॥

बैकको देखी साग-सैणी को देखी बाघ।

मर्द का देखा साग-औरत का देखा बाघ।

कुछ अजीव तरह की रेड़ सी लग जाना

क्या करूं भाई? मैं तो बड़ा हैरान सा हो गया हूँ-समझाऊं भी तो कहां तक उसे तो एक खत्फ सा हो गया है—जब देखो बस उस देखे हुये बाघ की ही चरचा है। उस दिन जंगल से घर आती दफे उस ने कहीं पर बाघ देखा था-अब बाघ ही बाघ देखती और कहती है। मैंने उस से अच्छी तरह कह दिया है कि अब से तू घास लकड़ी के लिये जंगल मत जाना पर वह मानती ही नहीं यह भी अच्छी तरह से उसे समझा दिया है यह गांव है जंगल नहीं यहां

Scanned with CamScanner

कहां बाघ बैठा है पर कुछ भी उसे मेरा कहा लगता ही नहीं। तभी तो हमारे गाँव के बड़े बुढ़े ये कहावत कह गये हैं कि—

मर्द का देखा साग-औरत का देखा बाघ। ॥७२३॥

जुन्याली रात-कुल्याई थात

चांदनी रात-कूल वाली थात।

बड़ी सुखी सी कर देने वाली बात।

अरे वाह! आप तो बड़े भाग्यशाली हैं पुन्यात्मा हैं जो ऐसी जगह आप का घर द्वार है। हर एक खेत में पानी पहुंचता है हर एक खेत लहलहाया हुआ है और इस से अधिक भाग्यवानी किसे कहते हैं? थात हुई तो यह हुई। मैं आप से सच कहता हूं तभी तो हमारे गांव घर में ये कहावत प्रचलित है कि—

चांदनी रात-कूलवाली थात। ॥७२४॥

शरमाका का आंखा-जहाज है लै भारी।

शरम की आंखें-जहाज से भारी।

संसार में लाज ही बड़ी भारी चीज होती है।

मैंने कल उसे सभी पड़ोसियों के सामने घुड़का-धतकारा--दुत-कार। वह नाकारा मारे शरम के मर सा गया उस ने अभी तक शर्म के मारे मुझे अपना मुंह नहीं दिखलाया, मैंने एक बार उसे कहीं से दूर से देखा-बस आँखें नीचे किये हुए बैठा था-ऐसा लगता था-शर्म उस की आंखों पर छा सी गई है। मैं तुम से सच कहता हूं-उस की ऐसी कहावत हो गई है कि—

शरम की आँखें-जहाज से भारी। ॥७२५॥

सूरको सिर नै-दाता को घर नै।

शूर का सिर नहीं-दाता का घर नहीं।

सार बस्तु का यथा स्थान-स्थान सा होता है।

Scanned with CamScanner

लोग तो कह रहे हैं कि-आज उस ने बड़ी छाती खोल दी जो अधेले का पान तक नहीं चबा पाता था। तिजोरी खोल बैठा है। इतना बड़ा दान और ऐसी उपकारी संस्था को आज तक तो इस नगर से न किसी ने दिया है और न कोई आगे को देगा। सारा नगर दंग है-दंग। तभी तो हमारे पुरखे ये कहावत कह गये हैं कि—

शूर का सिर नहीं-दाता का घर नहीं। ॥७२६॥

स्यूड़क मुख सब पल्यौ-कानौ को मुख कौं पल्यौ ?
सूई का मुख सभी पैना करें कांटे का मुख कौन पैना करे ?
पल्याना धार दार करना

अस्वाभाविक बात ठीक नहीं हुआ करती है।

तू तो जो जी में आया बकता है-तुझे कुछ समझ-बूझ नहीं ? अरे ! लोग-पास पडोसी हमारी सहायता क्यों करेगें ? हमारे पास अन्न-धन कुछ देखते तो हमारी तरफ दारी करते-करते ही नहीं दौड़ पड़ते ? अपने ये हाल हैं तब कोई अपनी सी करने में क्यों चूके ? समझा ! हमारी तो इस समय ऐसी कहावत हो रही है कि—

सूई का मुख सभी पैना करें-कांटे का मुख कौन पैना करे। ७२७॥

पहाड़ समान दाता नै-बिना लट्ठी दिनैर नै।
पहाड़ समान दाता नहीं-बिना लठिया दे नहीं।

सीधी-अगुंली धी नहीं निकलता।

उस से तो कभी सीधे मुँह बात नहीं करनी चाहिये ! तुम जितना एठें-अकड़ कर बातें करोगे वह उतना ही झुकते जायगा ? वह दाता तो है-पर बड़ी अकड़ रखता है ? ऐसों के ही लिये तो हमारे बुजुर्ग ये कहावत कह गये हैं कि—

पहाड़ समान दाता नहीं-बिना लठिया दे नहीं। ७२८॥

Scanned with CamScanner

सूगंरा का पोथिला-छारै की बाण ।

सूकर के पोतक राख की बान ।

जन्म जात गुण कैसा ही हो-आ ही जाता है ।

कुम्हार का ही लड़का ठहरा-तुम उस से कितना ही कहो-वह मिट्टी से ही खेलेगा और अवश्य खेलेगा-बिना मिट्टी से खेले उसे कल ही नहीं पड़ने की ! तुम उसे गोद ले आये तो क्या हुआ ? उस का स्वामाविक स्वभाव बदल ने से रहा ? अगर ऐसा ह होता तो क्यों हमारे बड़े बुढ़े ये कहावत कह जाते कि—

सूकर के पोतक-राख की बान । ७२९ ॥

मेरो नौछ भट्टू-मै के बूं गदू ।

मेरा नाम भट्टू-मै क्या बोओं-कद्दू ।

तीर नकमान-बने फिरें पठान ।

बड़े नाम से कोई बड़ा नहीं हुआ करता है ।

क्या तुम तो खाली नाम से बड़े हो-न की करतूतों से ! क्या हुआ तुम्हारा नाम बहादुर हुआ तो हुआ ? पर बहादुरी दिखाने की तो तुम में हिम्मत ही नहीं-जिस से तुम्हारा बहादुर नाम सार्थक समझा जाता ? ये तो वही कहावत हुई कि—

मेरा नाम भट्टू-मै क्या बोओं-कद्दू । ७३० ॥

सिर जौ-सिरीड़ी नी जौ ।

सिर जाये-सिर चढ़ी न जाये ।

सिरीडी-जिद में जो बात सिर चढ़ जाए ।

नाक कटी-पर हठ न हठी ।

ओ ? बाप रे-उन से कौन बोल कर तकरार मोल लेगा ? उन का तो बड़ा जिद्दी स्वभाव है ! जहाँ जिद चढ़ गई तो चढ़ गई ! मुझ से जो पूछते हो तो-उनकी ऐसी कहावत है कि—

सिर जाये-सिर चढ़ी न जाये । ७३१ ॥

Scanned with CamScanner

एक व्या चक्रवरती-द्वी व्या कुकुर गति ।

एक व्याह चक्रवर्ती—दो व्याह कुत्ते की गति ।

एक नारी ब्रत रहना—सुखी रहना है ।

मैंने तुम से । दोस्ती के नाते और पास पडो सी के नाते भी तुम से हाथ जोड़ कर कहा था कि । दूसरा व्याह मत रचाओं । पर तुम ने मेरी कही मानी ही नहीं ! अब जब रात दिन ये ऊधम मचने लगे तो तब तुम ने जाना । दूसरा व्याह रचाना ! मर्द हो तो निबटो इस व्यथे की हाथ-हाय-कांय-कांय से । तुम ने तो जान बूझ कर अपने हाथों से अपने ही पांव में कुलहाड़ी मारी है । फिर तुम न पछताओगे तो कौन पछतायेगा ! तभी तो हमारे गांव के बड़े दाने समाने लोग ये कहावत कह गये हैं कि—

एक व्याह चक्रवर्ती-दो व्याह कुत्ते की गति । ७३२ ॥

छोरौ को जी-तू मड़ी को घी ।

छोकरे का जी—तू मड़ी के घी ।

यों ही मन चलायमान सा हो जाना ।

अब भी पहाड़ी देहाती भाई निर्धनता के कारण तू मड़ी में घी पानी रख रखते हैं ! काल काटने के लिये । बच्चा ही ठहरा ? जहां मचल गया मचल गया ! फिर उसे कितना ही बहलाओ । फुसलाओ मानता ही नहीं । चीज देखी चाहिये । बस अपनी हठ पर अड़ जायगा । क्यों कि बच्चा जो ठहर ! इन का मन ही कुछ अजीब धातु का बना हुआ होता है ? कुछ समझ ही में नहीं आता है ? तभी तो हमारे यहाँ यह कहावत प्रसिद्ध है कि—

छोकरे का जी । तूमड़ी के घी । ७३३ ॥

औरन दो हांको डांको । आपू रांड़िलै हुड़की राखो ।

औरों को देवे हांक डाक । आप रांड हुड़किये की फांख ।

औरों को नसीहत । आप फजीहत ।

पर के औगुन देख के । चले हसन्त । हसन्त । अपने नजर न आव हीं । जिन का आदि न अन्त । हुड़किया ! पहाड़ पर का गा बजा कर मांग खाने वाला अछूत वर्ग का गायक जो कभी कुमाऊ का चारण था ।

तुम तो अपने को दूध का धुला हुआ सा समझते हो ! पर हो गुण्ड़े नम्वर एक । मैं ही नहीं सारा । पडोस । सारा मुहल्ला और सारा नगर इस बात को भली भांति जानता है । पर तुम्हें शर्म ही नहीं । ऐसा समझते हो जाने कहो और कुछ समझते ही नहीं । वलिहारी है तुम्हारी इस समझ की । तुम्हीं जैसो के लिये तो हमारे बुजुर्ग ये कहावत कह गये हैं कि—

औरों को देवे हांक डाक । आप रांड । हुड़किये की कांख । ७३४ ॥

पैलिकै बुढी गीत गैछी । आब नाती जै है गे ।

पहिले ही बुढ़िया गीत गाती । अब पोता जो हो गया ।

इक तो बुढ़िया नाचनी । दूजे घर भया नाती ।

अत्यन्त रोचक सी बात का हो जाना ।

वे बेचारे कभी भी किसी का बुरा नहीं चाहते हैं । जिस से भी देखिये हंसी खुशी से ही मिलते हैं । इस पर ईश्वर ने आज उन को पोता जो दे दिया है । अब उन्हे खुशी पर खुशी न हो तो क्यों कर न हो । तुम खुशी कह रहे हो ! वे तो मारे खुशी के नाच रहे हैं ! मरती वार पोते का मुख देख कर धन्य से हो गये हैं । उन की तो आज ऐसी कहावत सी हो गई हैं कि—

पहिले ही बुढ़िया गीत गोत । अब पोता ही जो हो गया । ७३५ ॥

साग खाणो न्यूणी बेर । गौं खाणो न्यूणी बेर ।

साग खाना बोती वार । गांव खाना झुककर ।

Scanned with CamScanner

अवसर से ही लाभ उठाना।सा ।न्यूड़ी ।

झुकना । नवना । डाल की तरह । झुकना ।

गाँव में ही रहना और गाँव वालों से ही बैर बिरोध करना किसी महामूर्ख का ही काम हो सकता है । मुझ सा जानकार । समझ बूझ से काम करने वाला आदमी तो तुम्हारी तरह भूल नहीं कर सकता ? मै तो जहाँ तक हो फूक । फूक कर ही पैर रखता हूँ ? तुम्हारी तरह अनघढ़ बातें नहीं कर सकता हूँ । क्यों कि मैने तो गाँव में रहना है और गाँव बालों के साथ रहना है ! मै तुम्हारी जैसी बातें क्यों करूं ! सुनो ? हमारे बुढ़े एक कहावत कह गये हैं कि—

साग खाना बोतीबार । गाँव खाना झुक कर । ७३६ ॥

दांतनाका अघिल । जिवड़ो स्याणो ।

दांतो के आगे । जीभ सयानी ।

अन्धो में काना राजा ? बड़ी परबशता सी ।

अरे भाई ! मै क्या कहूँ । फिर तुम्हारे आगे । तुम्हारे आगे कुछ कहना तो झकमारने के बराबर है ! मुझे पूछता ही कौन है ! चाहे मै कितना ही सयाना हो ओं ? पर समय ने तो सभी प्रकार से तुम्हें ही सयाना।सा बना रखा हैं । चाहे मै लाख कहूँ । पर क्या होता है ? मेरी तो तुम्हारे आगे ऐसी कहावत सी हो गई है कि—

दांतो के आगे । जीभ सयानी । ७३७ ॥

पाप और पथं । काटिये सुख ।

पाप और पथं । काटे ही सुख ।

सुख पाने के लिये कष्ट सहन करना चाहिये ।

देखो भाई ? थोड़ा और कष्ट सहन कर के पड़ाव ले लो । चाहे तुम कल कुछ कम ही चलना ? आज का पड़ाव बिकट तो है ही

अगर मार गये तो समझो। पडाव ही मार दिया। थोड़ी कष्ट झेल कर भी मेरी बात मान दो। सुख पायेगें। क्यों कि कहावत है कि—

पाप और पथं। काटे ही सुख। ७३८॥

मेरो खोरो सारौ। या पखाण सारौ।
मेरा सिर जो सरब्त। या पाषाण जो सब्त।
पागलो की सी होड़ करना।

सरब्त। सारो। सरब्त शब्द भी। सारो। शब्द को व्यक्त नहीं कर पाता है? लिखने को चाहे मैने लिख दिया।

तुम तो पागलों की जैसी बातें करते हो? ऐसी भी होड़ या दुग्राह क्या हुआ जिस में अपना ही काम बिगड़ जाये? तुम कोई भली बात थोड़े ही कर रहे हो! बल्के पत्थर पर सिर मार रहे हो और उस पर भी ऐसी कहावत सी कर रहे हो कि—

मेरा सिर जो सरब्त। या पाषाण जो सरब्त। ७३९॥

गाड़ाका मुख पगार। राड़ाँका मुख गार।
नदी के मुख षगार। रांड़ के मुख गाली।
अलग-अलग मुखो में अलग-अलग बात।

उस से तो बोलना हो नहीं चाहिये। रांड़ ही ठहरी। भली बात भी कहो तो बुरा ही मानती है। इतना ही होता तो कोई बात नहीं थीं पर वह तो दे दनादन गालियों की बौछार ही कर देती है? वह समझ तो है गाली देना जो कोई उपकारी कार्य हैं? तभी तो हमारे सयाने लोग ये कहावत कह गये हैं कि—

नदी के मुख पगार। रांड़ के मुख गाली। ७४०॥

खुटो रड़ाओ। जीभ डड़ांओ।
पैर खिसकाओ। जीभ डड़ांओ।

Scanned with CamScanner

रडाना-हटाना

अत्यन्त सावधानी से कार्य करना।

मै तो आजकल बड़े दुःख में पड़ा हुआ हूँ। थोड़ी भी असावधानी हो पड़े तो। न जाने क्या अनर्थ हो पड़े! बत्तीस दांतो के बीच जीभ की तरह रह रहा हूँ? तुम से क्या कहूँ? मेरी इस समय ऐसी हालत हो रही है कि। कुछ न पूछो। यह कहावत शायद मेरे ही लिये कही गई हो कि—

पैर खिसकाओ। जीभ डड़ांओ। ७४१॥

शत्रु सांखी। ढुंगो अचेणो।

शत्रु साक्षी। पत्थर अचैणा।

बड़े धोखे में पड़ना।

अचैणा-कुन्दी।

तुम्हें अब क्या चाहिये? तुम्हारा तो सारा खेल ही बन गया है? कोई हंसी की बात थोडी ही कह रहा हूँ? तुम तो अपने को इतना बुद्धिमान समझे बैठे हो कि क्या कहा जाये! मही कहो! जो तुम्हारा तीन पीढ़ी से दुश्मन है क्या तम्हारी तरफ की गवाही देगा! इतने मुर्ख तो जान बूझ कर न बनो। तुम तो ऐसी कहावत सी कर रहे हो कि—

शत्रु साक्षी। पत्थर अचैणा। ७४२॥

फाटो सिणन। रूठो मनूणो।

फटे को सी लेना। रूठे को मना लेना।

बिगड़ा कार्य हर प्रकार से बना लेना? टूटे सुजन जुडाइये।

जाने दो? मनालो। आदमी ही ठहरा कभी रूठ भी जाता ही है? फिर ऐसा आदमी जो तुम्हारा दाहिना हाथ सा है। वह रूठा है तो तुम तो उस से मत रूठो? ऐसा ही करोगे तो सारा कारोबार

Scanned with CamScanner

चौपट सा हो जायेगा। तब तुम्हारा रूठना किस काम का होगा ? समझ लो ! जिद न करो। क्यों कि हमारे गांव के सयाने लोग ये कहावत कह गये हैं कि—

फटे को सीं लेना। रूठे को मना लेना। ७४३ ॥

बड़ा मैसो का निजाओ डोठ। कानो को बोजो नी लगुणपीठ।
बड़ी मैंस के न जाये दीठ। कन्धे का बोझ न लगाये पीठ।

नसीहतों से लाभ उठाना चाहिये।

मै ने इस से कई बार समझा कर कह रखा था कि। तू उस के सामने न जाना। वह बड़ी निगडैल है। पर न जाने आज इसे क्या हुआ मेरी कही हुई सीख ये यकायन भूल गया। जैसे ही उस के धोरे खडा हुआ वैसे ही उस ने इस के सींग मार दी ? और इसे दूर फेंक दिया ? मै मैंस क्या लाया जी का जजांल ले आया ! क्या कहूँ ? तभी तो हमारे बुढ़े ये कहावत कह गये हैं कि—
बड़ी भैंस के न जाये दीठ। कन्धे का बोझ न लगाये पीठ। ७४४ ॥

ऋण मिल जौ। तिरण नी मिलौ।
ऋण मिल जाये। तृण न मिले।

कहीं पर कोई कहीं पर कोई सार वस्तु हो जाती है।

अरे तू ये क्या कर रहा है ? क्यों घास को इस तरह बरबाद करता है। नहीं जानता आज कल गर्मी का मौसम है। जानवरों के लिये कहीं ढूढ़ कर भी चारा प्राप्त नहीं हो रहा है और तू इस तरह ठौर। कुठौर घास का सत्यानाश कर रहा है। तुझे क्या खबर आज कल एक तृण का भी मूल्य बड़ा मूल्य है। तभी तो हमारे गांव पर के सयाने लोग ये कहावत कह गये हैं कि—

ऋण मिल जाये। तृण न मिले। ७४५ ॥

Scanned with CamScanner

कुकुर आयो भुकदें। भुकदें। बाग आयो लुकदें। लुकदें।
कुत्ता आया मौंकते। मौंकते। बाघ आया घुपते। घुपते।
जानते बुझते ए रार सी बढ़ाना।

क्या तुम तो नाहक ही रार सी बढ़ना चाहते हो। जिस से न तुम्हें शान्ति मिले न उन्हो ही। तुम जो भी करो। पर मैं तुम से कह देता हूँ कि। तुम जान बुझ कर उन्हें दांव दे रहो हो। समझ लो? फिर पछताओगे। मैं तुम से सच कहता हूं? तुम अपनी ऐसी कहावत सी कर रहे हो कि—

कुत्ता आया मौंकते। मौंकते। बाघ आया छुपते। छुपते। ७४६॥

ज्वै खसमै कि केली। दूध भातै की बेली।
जोरों खसम की केली दूध भात की बेली।
अत्यन्त ही सुख कर बात।
बेली। कटोरी।

अरे भाई! क्या बात है उस मधुमिलन की। दम्पति सुख के बराबर तो इस संसार में कोई दूसरा सुख हैं ही नहीं। तभी तो हमारे गाँव घर के बड़े बुढ़े ये कहावत कह गये हैं कि—

जोरो खसम की केली। दूध भात की बेली। ७४७॥

आला काचा खै-पै नाख मुख ऐ।
कच्चे अध कच्चे खाये। फिर नाक मुख से आये।
लड़कपन सा कर बैठना।

तुझ से मैं ने कितनी हो बार समझा बुझा कर कहा कि! कच्चे अध कच्चे फल मत खा पर तू ने एक नहीं मानी! जब पेट में उठा गोला तब तू ने जानी और सारे घर ने जानी। जब सब खाया पिया तेरे नाक मुख से आया तब तू ने मानी कि मैं तुझ से ठीक ही कहा करता था। अरे पगले! हमारे बुजुर्ग कुछ पागल नहीं थे जो

Scanned with CamScanner

ये कहावत कह जाते कि—

कच्चे अध कच्चे खाये। फिर नाक मुख से आये। ७४८॥

सिली ओबारी। झिली खाट।

सीली कोठरी। झीली खाट।

भरोसे योग्य बात का न होना।

क्या करूं भाई! सारे नगर में मारा। मारा फिरा हूँ पर कहीं भी रहने योग्य जगह नहीं मिली। तब झकमार कर और मन मार कर उस सीलन वाली जगह पर पड़ा हुआ हूं जिस में मनुष्य तो क्या जानवर भी दो चार दिन कठिनता से रह सकेगा। पर लाचारी है। क्या करूं दिन पर दिन उस कोठरी पर रहने से मेरा रहा सहा स्वास्थ्य भी जा रहा है। तभी तो मुझे गांव घर के बुढों की यह कहावत याद आ रही है कि—

सीली कोठरी। झीली खाट। ७४९॥

ज्याटा ज्यू की खोरी फूटि। टिका लैणी ठौर।

जेठ जी का कपाल फूटा। टीका लगाती ठौर।

बड़ीं अपशकुन की जैसी बात हो बैठना।

बिगाड़ तो होते ही रहता है? पर ऐसा भी बिगाड़ क्या जो जन्म भर बिगाड़ ही बना रहे। इस संसार में तो सुधार। बिगाड़ चलते ही रहता है। पर ऐसा बिगाड़ तो मै ने अभी तक न सुना ही और न देखा ही। ये तो हमारे गांव घर वालों की जैसी कही कहावत हो गया कि—

जेठ जी का कपाल फूटा टीका लगाती ठौर। ७५०॥

माछानै की मै हुणी। जनमै बटि शोक।

मछलियों की मां कों। जन्म से ही शोक।

Scanned with CamScanner

बकरी की मा कब तक खैर मनाये।

शोक पूर्ण जीवन से तो जीवन ही न हो ना अच्छा है।

तुम खूब बहाने बना लो! जी भर कर बना लो पर यह भी याद रखो ऐसे वहानो से काम नहीं बनेगा। मै तुम से कह देता हूँ! कबतक लुकछिप कर टालमटोल कर के प्राण रख सकोगे? सोचो तो! इतने भय और आंतक से जिन्दा भी रह सके तो किस काम का! मै तो तुम से कहता हूं। इस प्रकार जिन्दा रहना भी कोई जिन्दा रहना है! तुम तो चिन्ता से ही अध मरे से हो गये हो? कुछ नहीं? तुम ने तो अपनी ऐसी कहावत सी वना ली है कि—

मछलियों की मां को। जन्म से ही शोक। ७५१॥

हाथ न गात। ढूँगा माथ।

हाथ न गात। पत्थर पर माथ।

बड़ी ही लाचारी का सा सामना।

क्या करूं। कहां जाँऊ। किस के सामने अपना दुःखड़ा रोऊँ। कोई सुनने वाला नहीं? वह तो आप वैसे ही दयावान ठहरे तब आप के श्री चरणों में अपनी बिवशता कह गया। मुझे तो दैव ने ही इतना असहाय सा कर दिया है कि। आप से कहते भी लाज सी आती है? मैं सच कहता हूँ मेरी इन दिनो ऐसी कहावत सी हो गई कि—

हाथ न गात। पत्थर पर माथ। ७५२॥

बाबू का कोठरी—नै मै की पिटारी।

बाप की कोठरी—न मां की पिटारी।

कहीं से भी कोई सहारा भरोसा सा न होना।

क्या दूँ! और कहां से दूँ! मेरा तो इन दिनों जैसा बुरा हाल हो रहा है मैं ही जानता हूँ या मेरा ईश्वर हो? तुम को देने के

Scanned with CamScanner

लिये, नहीं तो मै कभी भी इनकार न करता-तुम तो मेरे तये तपाये मित्रों में ठहरे-भला तुम से क्या छिपाना ? पर सच कहता हूँ इन दिनो मेरी ऐसी कहावत सी हो रही है कि—

बाप की कोठरी–न मा की पिटारी। ७५३ ॥

कसौ कसो भै-मूसा । ख्याल दीवान भै ।
कैसा-कैसा हुआ-चूहे का लड़का दीवान हुआ ।
सहसा युगान्तर सा हो पड़ना ।

तुम भी कुछ नहीं ? बस-सारा जीवन फौंस मारने में बीता बैठे-अरे कुछ समझ भी है ? इन आँखो मे तुम्हें कुछ सूझता भी हैं, या आँखे बन्द कर के फौंस ही मारते रहोगे ? देखते नहीं जमाना लौट चुका है ! क्या से क्या हो गया है-पर तुम्हारी फौंस है कि चली जा रही है ! सोचो तो जमाना कितना लौट चुका है ! अरे ? इन दिनो तो जमाने ने ऐसी कहावत सी कर दी है कि—

कैसा–कैसा हुआ-चूहे का लड़का दीवान हुआ । ७५४ ॥

आपुणो पालो पोसो-बिराणो को खाड़ कोचो ।
अपना पाला पोसा-बिराने का खाड़ कोचा ।
स्वार्थ वश अपना ही परम स्वार्थ देखना ।

अरे ? दूसरे का भी बच्चा हुआ-तो-इतना क्या मारना हुआ ? बेचारा घण्टे भर से सिसकता ही रह गया ! बच्चा ही ठहरा ! झगड़ा करना तो बच्चो का जन्म जात गुण ही ठहरा-पर इसे तो नहीं चाहिये था कि उसे इतना बेदम हा कर मारती ! इसे तो कुछ दया भी नहीं लगी ! इस ने तो ऐसी कहावत सी कर दी है कि—

अपना पाला पोसा-बिराने का खाड़ कोचा । ७५५ ॥

Scanned with CamScanner

आपुणो मारी बेर पालो-बिराणो पाली बेर मारौ।

अपना तो मार कर पाला-बिराना पाल के मारा।

अपना-अपना ही होता है चाहे कोई लाख कुछ कहे या करें।

इन के यहाँ वह दस साल से नौकरी कर रहा था-छोटा-छोटा बच्चा था-न जाने किस का! इन्हों ने उसे अपने ही बच्चे की तरह पाला-पोसा-यह मैं ही नहीं सारा पड़ोस मानता और जानता है! पर मेरा कहना यह है कि-इन्हों ने उसे इतना नहीं मारना चाहिये था-इन्हों ने तो उसे थोड़ी सी अपराध पर ऐसा मारा कि-वह सारी चौकड़ी ही भूल गया-जितना इन्हों ने पाला पोसा उतना ही उस का मलीदा भी निकाल दिया! मैं आप से सच कहता हूँ-इन्हों ने ऐसी कहावत सी कर दी कि—

अपना तो मार कर पाला-बिराना पाल के मारा। ७५६ ॥

बौला गिजियूंण-पौणो नी गिजियूंण।

बावले को चिढ़ाना-पाहुने को न चिढ़ाना।

घर पर आये हुये का आदर ही करना चाहिये।

गिजियूंण-मुँह बना कर चिढ़ाना।

तुम ने बड़ी भारी भूल की जो घर पर आये हुये पाहुने को इस बुरी तरह चिढ़ाया! वह बेचारा अपने मन में क्या सोचता होगा! अरे! एक दिन रहता दो दिन रहता तुम ने तो उसे सुस्ताने तक नहीं दिया! न जाने कौन और कैसा है वह! बिगड़ खड़ा हुआ तो न जाने क्या कर बैठे! तभी तो हमारे बड़े समाने ये कहावत कह गये हैं कि—

बावले को चिढ़ाना-पाहुने को न चिढ़ाना। ७५७ ॥

ममा सरी को पौण नै-पितर सरी को देवता नै।

मामू सरीका कोई पाहुना नहीं-पितर सरीका कोई देवता नहीं।

Scanned with CamScanner

अपना सम्बन्धी कैसा ही हो पूजनीय ही होता है।

तेरे बड़े भाग्य हैं जो आज तेरे मामू तेरे घर पाहुने बन कर आये हैं? तुझ से जितनी हो सकती है उस से भी अधिक सेवा करना! मान-आदर और सत्कार में कोई कोर कसर न करना? मै तुझ से सच कह रहा हूँ और तू पागलों की तरह हंस रहा है! पगले? ऐसा न समझ! सुन! हमारे बुजुर्ग तभी तो ये कहावत कह गये हैं कि—

मामू सरीका कोई पाहुना नहीं-पितर सरीका कोई देवता नहीं।

॥ ७५८ ॥

बगली भाई—सोरो बराबर।

बगल का भाई—बिरादर बराबर।

पंजावी—हम साये मां पियो जाये।

पडोसी अपने माता—पिता की संतान की तरह ही होता है।

पडोस की शोभा प्रेमा से रहने में ही होती है।

तुम दोनो से कौन कहेगा पडोसी हो? तुम्हारे व्यवहार से तो ऐसा जान पड़ता है कि-जाने कहो जुड़वा भाई हो? जो भी इस पास पड़ोस में आता है तुम से अच्छी ही शिक्षा लेकर जाता है! चाहे हो तुम अगल-बगल में ही रहने वाले-पर हो उदाहरण स्वरूप ही! तुम्हीं जैसों के लिये तो हमारे गांव के बड़े बुढ़े ये कहावत कह गये है कि—

बगल का भाई-बिरादर बराबर। ७५९ ॥

मै बाबू को गोत—पाणी कसो सोत।

मा बाप का गोत्र-पानी का सा स्रोत।

मा बापों के पुण्य प्रताप से ही मनुष्य धन्य हुआ करता है।

Scanned with CamScanner

तू अपने मा बापों को इतना कष्ट दे रहा है याद रख ? जन्म जन्मान्तर तक इस का फल भोगेगा अरे ! बड़े भाग्य समझने चाहिये ! जिन के मा-बाप सिर पर हो। उन्हीं के प्रताप से तो हमें यह मनुष्य रूपी चोला मिला ? समझ ? और सताना छोड़ दे ? तुझ से कहता हूँ तभी तो हमारे गाँव घर के सयाने ये कहावत कह गये हैं कि—

मा बाप का गोत्र-पानी का सा स्रोत। ७६० ॥

पैलिक गै सुख—तब गर्भ सुख।

पहिले गाय सुख—तब गर्भ सुख।

पहिला सुख निर्मल काया।

तू आज कल अपनी गाय की बहुत देख भाल करना; क्यों कि वह गाभिन हैं ? थोडी भी तूने चूक की तो समझ ले गाय से ही हाथ धोना पड़ेगा ! खूब सेवा टहल कर-वह भी मन लगा कर ? क्यों कि वह सुखी रहेगी तो सुख से ब्या सकेगी समझा ? खेल मत समझना इतनी सी बात के लिये तो हमारे सयाने इतनी बड़ी कहावत कह गये हैं कि—

पहिले गाय सुख—तब गर्भ सुख। ७६१ ॥

विषको मुख चिस।

बिष का मुख—चिस।

चिस—दग्ध करना।

बिष कहीं पर लग जाये-जहरीला कीड़ा या पागल कुत्ता काट खाये डाँस-बिच्छू काट खाये या काँच से कट जाये तो वहाँ पर पुराने कपडे की एक अंगुली बराबर मोटी सी बत्ती बना कर जला लेते है और आग का गुल सा बना कर उस स्थान पर खूब दाग

Scanned with CamScanner

देते हैं जहां पर बिष लगा हो या कटा हो। यह अभी भी ग्राम बासियों की एक अचूक औषधी या उपचार है।

दुष्ट बिना दुष्टता किये मानने ही नहीं।

क्या तुम भी लगे ? तुम उस का कितना ही निहोरा करो-वह मान ने से रहा ! क्यों कि उस के तो रोम-रोम में दुष्टता बास करती है ? जब तक तुम भी कोई ठीक बैसी ही बात नहीं करोगे जैसी कि वह तुम्हारे साथ कर रहा है ? तुम्हारा पल्ला छूटने से रहा ? तभी तो हमारे गांव घर के सयाने ये कहावत कह गये है कि—

बिष का मुख–चिस। ७६२॥

उधार निकालों सोंगे–पैंच याद करै लै।

उधार निकालने को गये-पैंचा जो याद करा लाये।

गये थे हरि भजन को ! ओटन लगे कपास।

मनसूबों का यकायक उलटा पड़ जाना।

पैंचा–हथफेर

क्या ? भाग्य की और समय की बात है ? मै उन के पास बड़े भरोसे से गया था कि कुछ रुपयें अपना काम चलाने के लिये उधार मांग लाऊँगा कर के-पर न जाने उन्हो ने कब का हिसाब निकाल दिखलाया कि–तुम ने तो इतने पुराने हथपैंचे के रुपये आज तक नहीं दिये ! तुम्हें क्या उधार दूँ ? मै यह बात सुन कर सन्न सा रह गया ! आगे क्या कहता ? उन्हो ने तो मेरी ऐसी कहावत सी कर दी कि—

उधार निकालने को गये-पैंचा जो याद करा लाये। ७६३॥

व्याल भरी नौणी–नाली भरी कौणी।

कटोरे भर नवनीत-भरोटी भर कौणी।

Scanned with CamScanner

थोड़ में ही बड़ा संतोष सा मान ना।

कौणी–एक प्रकार का मोटा नाज जो बाजरा सा गोल होता है और जिसे बहुधा गरीब भाई पहाड़ पर चावलों की जगह पर काम में लाते हैं।

मै तो तुम से सच कहता हूँ ? मुझे कुछ नहीं चाहिये-ईश्वर इतना दे कि पेट भर जाये ? मै तो अपने बड़ो की कहावत का बड़ा आदर करता हूँ क्यों कि वह कह गये हैं कि—

कटोरे भर नबनीत–भरोटी भर कौणी। ७६४॥

बुटिका भरौस-निरुन–हाथ खुटा हिलौण।

बूटी के ही भरोसे न रहना–हाथ-पैर भी हिलाना।

भरोसा-किसी का हो–बहुत न करना चाहिये।

तुम तो खाट क्या पड़े-तुम ने तो खाट ही पकड़ ली ? उठो ! चलो फिरो ! दवाओं के ही फेर में मत पड़े रहो। नहीं तो पड़े के पड़े ही रह जाओगे ? समझो ? हमारे गांव के सयाने यों ही ये कहावत नहीं कह गये हैं कि—

बूटी के ही भरोसे न रहना-हाथ-पैर भी हिलाना। ७६५॥

पाणी की घौ–पन्यारै की मौ।

पानी से अघाया–जो मवासा पानी पास बसाया।

राजा के घर में मोतियों की कमताई।

सुखी स्थान पर रहने से सुख होता ही है।

अरे ? तुम ने भी अच्छी कहीं ? पानी का टैक्स देते हैं फिर भी नल का यह हाल ! और उस पर ये गर्मी का मौसम ? भाई ! तुम इन कष्ट को क्या जानो क्यों कि तुम तो आनन्द से गंगा जी के पास बास करते हो तब तुम इस पानी की हाय-हायक्या समझो ! यही समझ कर तो हमारे गांव के सयाने ये कहावत कह गये हैं वह भी तुम्हारे ही जैसे गांव को देख कर कि—

Scanned with CamScanner

पानी से अधाया–जो मवासा पानी पास बसाया। ७६६ ॥

सब जोगी मरन–मेरो ही पत्तल भरन।

सब जोगी मरें-मेरा ही पत्तल भरें।

एक अपने स्वार्थ के आगे आंखे बन्द कर लेना।

ये तो पहिले नम्बर का स्वार्थी है? चाहे तुम इस से कुछ भी कहो पर ये अपने स्वार्थ के आगे आंखे मूंद ही रखता है? कोई इस संसार में मरे या जिये इसे कोई वास्ता नही। केवल अपने स्वार्थ के! ऐसों ही के लिये तो हमारे बुजुर्ग ये कहावत कह गये हैं कि—

सब जोगी भरें–मेरा ही पत्तल भरें। ७६७ ॥

सौगन्ध खै बेर-कस्तूरी बेचण।

सौगन्ध खा कर–कस्तूरी बेचनी।

कोई आश्चर्य में डाल ने वाली बात कर बैठना।

तुम भी भाई साहब क्या खूब हो? नकली को असली कह कर बेचना चाह रहे हो? पर ऐसा आंख का अन्धा गांठ का पूरा कौन आयेगा जो तुम्हारे नकली माल को असली समझ कर ले जायेगा? ले भी जायेगा तो धोखा खायेगा नहीं तो बढ़िया चीज कसम खा कर नहीं बिका करती हैं? अगर ऐसा ही होता तो हमारे गांव के सयाने ये कहावत क्यों कह जाते कि—

सौगन्ध खा कर–कस्तूरी बेचनी। ७६८ ॥

खाणी बाड़ी–आपुणी चांड़ी।

खानी बाड़ी–अपनी चांड़ी।

खोल खीसा–खा हरीसा।

चांणी? छोटी सी दहेड़ी जो काठ की बनी होती है! जिस में बहुधा कर के देहाती भाई राह बाट के लिये घी रख ले जाते हैं। बाड़ी–एक प्रकार की लपसी जो मीठी भी होती है और नमकीन

भी जो मडुवे के आटे की बनाई जाती है जिसे मैं और मेरे पहाडी भाई बिशेष कर गाँव भाई बड़े चाव से खाते हैं ? निर्धन हो या धनवान सभी के यहा ये बढ़िया भोजनो में गिनी जाती है ? बल्के हम पहाड़ी भाई इसी बाड़ी से पो स.त होते आये हैं ? क्यों नहीं ! य ही तो वह बाड़ी है ? जिस के खाने बालो ने पेशाबर में निहत्थे सत्याग्रहियों पर गोलियों की बौछार करने से साफ इनकार कर दिया था ? फाँसी पर झूलना सहर्ष स्वीकार किया था ? ये है वह बाड़ी जिस ने ? जान बुल की नाक में पहिले पहल अगुंली ड़ाली ! जिस का यामक चन्द्रसिंह गढ़वाली था ! पर्वतीय। पत्रिका के कथना नुसार जो अब फाँके झेल रहा है ? जेल झेल कर। जिस के लिये राजा काला कांकर की कोठी लखनऊ पर ? स्वर्गीय त्याग मूर्ति मोतीलाल नेहरू जी ने प्राण छोड़ती बार कांग्रेस बालों से कहा था कि ? मेरी यह अन्तिम इच्छा है कि- पेशाबर के उन गढ़वाली वीरी को स्वराज्य मिलने पर भूल न जाना ? ये है वह बाड़ी जो इतने महान पुरुष के मुख से ऐसा कहला सकती थी ! ये ही वे बाड़ी खाने वाले वीर हैं जिन्होने दो बार महायुद्ध और बिश्व युद्ध में जर्मन वीरो के जहरीले दांत उखेड कर रख दिये थे ये ही वे बाड़ी खाने वाले बरि हैं जिन्होने काश्मीर युद्ध में अभी-अभी पाकिस्तानी सैना के जमे हुये पाँव उखेड़ दिये और भारतीय स्वराज्य के प्राण बचा लिये ? इन्ही बाड़ी खाने वाले वीर पुत्रो ने ब्रिटिशसिंह को आजाद हिन्द फौज में भर्ती हो कर सियार बना दिया था ! देश की हुकुमत के अन्दर देशी और पहाड़ी का पहाड़ सा सवाल पैदा करने बाले हमारे भाई जरा गहराई से सोचें। अगर ये ही पहाड़ी भाई जो स्वराज्य पाई सरकार के सैना व पुलिस विभाग में भरे पड़े हैं इस्तफे दे कर पहाड़ आ जायेतों देशी भाई तो देशी रहे इस लोक प्रिय श्री नेहरू सरकार के भी पसीना उतर आये।

Scanned with CamScanner

ये ही वे वाड़ी खाने वाले पहाड़ी हैं जिनके लिये न दिल्ली सरकार और न प्रदेशी य सरकार कोई कार्यक्रम इतने बड़े रेड़ियोंइस्टेशनों से प्रसारित करने का कष्ट उठाती है ! अब चाहे कुछ-कुछ होने सा लगा है ! गोरखाओं के लिये बाकायदा नैपाली कार्यक्रम नियत समय पर दिल्ली रेड़ियो इस्टेशन से प्रसारितव प्रचारित करती है ! उस पर भी तुर्रा यह है कि हमारे बंगाली भाई उस गोरखा कार्यक्रम को प्रसारित करते हैं-पर करते तो हैं ! यह इस न्याम-प्रिय और जन प्रिय सरकार का न्याम ही तो है ! जिस के लिये गोरखा तो प्राणा देने वाले हैं और ये पहाड़ी वाड़ी खाने वाले प्राण बेच खाने वाले हैं ! ईश्वर करे कभी ऐसा न हो रूस की ही भाति यूराल पर्वत का सा यह पहाड़ी बाड़ी खाने वाला प्रदेश-हारी बाजी लौटाने बाला साबित हो। ७६९ ॥

जो भी हो-इतना होते हुए भी कुमाउनी एक अंग्रेज की भांति ही वडे गर्व से (ब्रिटिश बल्ड) कह सकता है क्यों किवह पहाड़ी है-इस पर भी बिशेषकर अल्मोड़े वाला।

कूटी जुगत जाड़ी-पूत जुगत ब्वारी।
जाड़े की जुगत-कुटापिसा-पूत की जुगत बहू।
मनुष्य को चाहिये कि युक्ति पूर्ण सा रहे।
यहां तो फिकरे सरमाया है-माहे पूस आता है।

मैं तुम से बिनय कर के कहता हूँ कि अब के जाड़ा बहुत पड़ने वाला है। कुछ अभी से जोड़ जन्तर कर लो-नहीं तो पछतओगे ! मैंने तो ५-६ मन कोयले और इतना ही लकड़ियां अभी से अलग रखवादीं हैं ! और थोड़ा बहुत अनाज भी कूट पीस कर यत्न से अलग रखवादिया है न जाने कैसा जाड़ा पड बैठे ! क्यों कि हमारे गाँव घर के बुढ़े भी इसी लिये एक कहावत कह गये हैं कि—

जाड़े की जुगत-कुटा पिसा-पूत की जुगत बहू। ७७० ॥

धार में को दिन-गल में को ग्रास।
धार में का दिन-गले में का ग्रास।

वह बात जिस का अधिक विश्वास न हो।

धार-पहाड़ की ऊँची चोटी जिस के दोनो ओर ढ़ाल हो तलवार की सी धार।

क्या-वे तो इतने बुढ़े हो गये हैं कि! कहते कुछ हैं-सुनते कुछ हैं! उन की तो सारी इन्द्रियां ही शितल सी हो गई हैं! उन के कहे का कौन बुरा मानेगा! जब कि वे घर वालों को ही नहीं पहचान पाते हैं? उन्हें तो अब तुम धार में का जैसा दिन समझो? कब प्राण निकल जायें क्या विश्वास! ऐसों ही के लिये तो ये कहावत कही गई है कि—

धार मैं का दिन-गले में का ग्रास। ७७१ ॥

सूम किणी एक नाम-दिनेर किणी दस नाम।
सूम को एक नाम-दाता को दस नाम।

ना हक में दूसरों को नाम रखने वाले नाम रखने में चूकते नहीं।

उन बेचारों ने अपनी तरफ से इतना दान-पुण्य किया जितना वे जीवन भर खा-पी भी न सके होंगे। और नाम रखने वाले उन्हें इतना कर देने पर भी नाम ही रख रहे हैं। तभी तो हमारे बुढ़े ये कहावत कह गये हैं कि—

सूम को एक नाम-दाता को दस नाम। ७७२ ॥

मै झूंरू यार सों-यार झुरौ घर बार सों।
मै झूंरू यार को-यार झुरे घर बार को।
बिपरीत सी राह हो जाना।

मैं तो आते-आते थक गया हूँ-और आप का पता ही नहीं। थोड़ी बहुत तो मेरे प्यार-स्नेह-और प्रेम का ध्यान रखो !! ऐसा भी क्या हुआ-तू नहीं और सही और नहीं और सही। मैं तो आप को किसी प्रकार से भी छलना नहीं चाहता हूँ और न आप के द्वार से ही टलना चाहता हूँ। पर आप मुझे रोज झांसा देकर ऐसी कहावत सी कर रही हैं कि—

मैं झुंरू यार को-यार झुरे घर बार को। ७७३ ॥

घर में घोड़ों-माट में मोल।

घर में घोड़ा-मिट्टी में खाद।

तुम तो नाहक में ही दुखी से होते हो ! तुम सा भाग्यवान तो सारे गाँव भर में कोई दूसरा नहीं होगा। मैं सच कह रहा हूं चाहे तुम न समझो। तुम्हीं कहो। जिस के पास खाद हो-जमीन हो फिर उसे और क्या चाहिये ? ये सभी चीजें ईश्वर की दया से तुम्हारे पास हैं। फिर किसबात का सोच ! इसी बात के लिये तो हमारे-तुम्हारे सयाने ये कहावत कह गये हैं कि—

घर में घोड़ा-मिट्टी में खाद। ७७४ ॥

बांसा डूबन-पोरियों को हिसाब।

शहतीर डूबें-पोरियों का हिसाब।

व्यर्थ की बातों में अपने को उलझा सा रखना।

तुम भी क्या हो-एक तमाशा हो। जो ले गये ले गये। रुपयों का नोटो का और जर जेवर का व माल मत्ते का हिसाब लगाओ कि। कितनी नकदी डाकू उठा ले गये-ये कर ना-नघोड़ तुम तो कौड़ियों का जो हिसाब किताब लगा रहे हो। वाह-तुमने भी तो खूब सोची। तुम तो ऐसी कहावत सी कर रहे हो कि—

शहतीर डूबें-पोरियों का हिसाब। ७७५ ॥

Scanned with CamScanner

घोड़ी का ऊपर-मूंजको बखिया।

घोड़ी के ऊपर-मूंज का बखिया।

बड़ी हंसी की भी बात।

मखमल की [illegible] का [illegible]।

नाक तो तुम बड़ा लगाते हो! पर [illegible] तुम्हें कभी [illegible] कर भी नहीं आने का-जो काम भी करते हो हंसी का करते हो वे भी नहीं समझते कि-ढब-ढौल भी इस दुनिया में कोई चीज है। तुम ने तो ये कर के ऐसी कहावत सी कर दी है कि—

घोड़ी के ऊपर-मूंज का बखिया। ७७६ ॥

जैकी राणी-तैकी राणी-खंक लगो आंखा ताणी।

जिस की रानी-उस की रानी-खंक देखे-आखें तानी।

खाली लालसा सी लगाना।

कौन है-क्या है-किस की बहू है न जाने किस की बेटी। यों ही ये हा-हू कर रहे हैं। जिस हा-हू का कोई परिणाम ही न निकले-परिणाम निकले भी तो सीधे बड़े घर की ही हवा खिलाये। हमें क्या मतलब कोई हो! तुम ने तो ऐसी कहावत सी कर दी है कि—

[illegible]स की रानी-उस की रानी-खंक देखे-आखें तानी। ७७७ ॥

जुवारी को धन-दोषिला का नानतिन।

जुवारी का धन-दोष लगे की संतति।

अति हीन दीन बात सी।

तुम्हारा समाज में क्या मान होगा? जुवारी ही ठहरे-वह भी जनम जुवारी। चाहे तुम्हारे पास कितना ही धन क्यों न [illegible] पर ठहरा वह सदोष ही-जो समाज को कभी न कभी अ[illegible] ले डुबेगा-समझे? तभी तो गाँव के चतुर लोग ये कहावत [illegible] गये हैं कि—

Scanned with CamScanner